2

माध्यमिक पाठ्यक्रम

# लोक कला

## प्रयोगात्मक

## 244

विद्याधनम् सर्वधनं प्रधानम्

राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान

(शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार के अंतर्गत एक स्वायत्त संस्थान)

ए-24-25, इन्स्टीट्यूशनल एरिया, सेक्टर- 62, नोएडा-201309 (उ.प्र.)

वेबसाइटः www.nios.ac.in, टॉल फ्री नंबर 18001809393

## सलाहकार समिति

**अध्यक्ष**
राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान
नोएडा (उ.प्र.)

**निदेशक (शैक्षिक)**
राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान
नोएडा (उ.प्र.)

## पाठ्यक्रम समिति

**डॉ महेंद्र भानवंत**
निदेशक (सेवा निवृत)
भारतीय लोक कला मंडल
352, श्री कृष्णापुर, उदयपुर, राजस्थान

**प्रो. आर. एन. पांडा**
प्रोफेसर, उत्कल विश्वविद्यालय
भुबनेश्वर, ओडिशा

**प्रो. राघवन पय्यानाद**
विभागाध्यक्ष (सेवा निवृत)
लोकोक्ति अध्ययन विभाग
कालीकट विश्वविद्यालय, केरला

**श्री मुश्ताक खान**
उप निदेशक (सेवा निवृत)
क्राफ्ट संग्रहालय, नई दिल्ली

**डॉ कृष्णा जगनू**
लोक कला के लेखक
और विशेषज्ञ, विनायक नगर
उदयपुर, राजस्थान

**डॉ कैलाश कुमार मिश्र**
अनुसंधान अधिकारी (सेवा निवृत)
लोकोक्ति अध्ययन, इंदिरा गाँधी
राष्ट्रीय कला केंद्र, दिल्ली

**श्री वसंत निर्गुणी**
अधिकारी (सेवा निवृत)
आदिवासी लोक कला परिषद्
भोपाल, (म.प्र.)

**श्री रबिन्द्रनाथ साहू**
कला शिक्षक
उच्चतर सेकेंडरी स्कूल
शिशुपालगढ़, भुबनेश्वर ओडिशा

**सुश्री अनीता देवराज**
प्रधानाचार्य (सेवा निवृत)
डीएवी पब्लिक स्कूल
बहादुरगढ़, हरियाणा

**डॉ सर्बदमन मिश्र**
सह-प्राध्यापक
गवर्नमेंट कॉलेज, अजमेर
राजस्थान

**श्री सतीश शर्मा**
निदेशक, शिल्प भारती
ललित कला एवं शिल्प संस्थान
साउथ पटेल नगर, नई दिल्ली

**डॉ एम. के. पाल**
परियोजना निदेशक (सेवा निवृत)
कला, शिल्प और सामाजिक
सांस्कृतिक अध्ययन, नई दिल्ली

**श्री बिवास भट्टाचार्य**
कला समीक्षक फ्रीलांस
बगुअती, कलकत्ता

**सुश्री अल्पना पारीख**
स्वतंत्र कलाकार
सेक्टर 21, नोएडा

**श्रीमती संचिता भट्टाचार्य**
वरिष्ठ कार्यकारी अधिकारी
प्रदर्शन कला शिक्षा
रा.मु.वि.सं., नोएडा

## पाठ लेखक

**श्री मुश्ताक खान**
उप निदेशक (सेवा निवृत)
शिल्प संग्रहालय, नई दिल्ली

**श्री सतीश शर्मा**
निदेशक, शिल्प भारती
ललित कला एवं शिल्प संस्थान
साउथ पटेल नगर, नई दिल्ली

**प्रो. राघवन पय्यानाद**
विभागाध्यक्ष (सेवा निवृत)
लोकगीत अध्ययन विभाग
कालीकट विश्वविद्यालय, केरला

**श्री बिवास भट्टाचार्य**
कला समीक्षक फ्रीलांस
बागुईआटी, कलकत्ता

**डॉ. कृष्णा जगनू**
लोक कला के लेखक
और विशेषज्ञ, विनायक नगर
उदयपुर, राजस्थान

**डॉ. महेंद्र भानवंत**
निदेशक (सेवा निवृत)
भारतीय लोक कला मंडल
352, श्री कृष्णापुर
उदयपुर, राजस्थान

**श्री वसंत निर्गुणी**
अधिकारी (सेवा निवृत)
आदिवासी लोक कला परिषद्
भोपाल, (म.प्र.)

**श्रीमती बी. एम. चौधरी**
अतिथि प्राध्यापक (सेवा निवृत)
कला महाविद्यालय
नई दिल्ली

## संपादक

**प्रो. के. एम. चौधरी**
विभागाध्यक्ष (सेवा निवृत)
कॉलेज ऑफ आर्ट, नई दिल्ली

**प्रो. ए. के. सिंह**
निदेशक, (सेवा निवृत)
भारत कला भवन, बनारस हिन्दू
विश्वविद्यालय, वाराणसी (उ.प्र.)

**श्री मुश्ताक खान**
उपनिदेशक (सेवा निवृत)
क्राफ्ट संग्रहालय,नई दिल्ली

## टाइप सेटिंग

**श्री कृष्णा ग्राफिक्स**
दिल्ली

# आपके साथ दो शब्द

प्रिय शिक्षार्थी,

राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान द्वारा निर्मित लोक कला के माध्यमिक स्तर के पाठ्यक्रम में आपका स्वागत है। हमें उम्मीद है कि आप शिक्षा के मुक्त और दूरस्थ शिक्षा प्रणाली में सीखने का आनंद लेंगे। लोक कला में पारम्परिक जीवन-शैली, विविध संस्कृतियों और विभिन्न सामाजिक समूहों के द्वारा तैयार की गई वस्तुओं को दर्शाया गया है। कला एक दिलचस्प माध्यम है जो अनेक चित्रों और रंगों के माध्यम से स्वयं को अभिव्यक्त करने का अवसर देता है। यह पाठ्यक्रम लोक और जनजातीय कला के माध्यम से धन अर्जित करने के साथ-साथ कला एवं कौशल की आंतरिक आवश्यकता को पूर्ण करेगा। यह पाठ्यक्रम लोक और जनजातीय कला में गहरी अंतर्दृष्टि प्रदान करेगा और आपको अपने व्यक्तित्व और बुनियादी ज्ञान को विकसित करने में मदद करेगा। पाठ्यक्रम में लोक कला के सैद्धान्तिक और व्यावहारिक पहलू शामिल हैं तथा मूल्यांकन के क्रमशः 40 अंक और 60 अंक होंगे।

यह पाठ्यक्रम लोक और जनजातीय कला, माध्यम, तकनीक और शैलियों के परियच पर जोर देते हुए लोक और जनजातीय क्षेत्र के सैद्धान्तिक और व्यावहारिक पहलुओं का पर्याप्त ज्ञान प्रदान करेगा। आप दीवार चित्रण, धरा चित्रण एवं चित्रण के अन्य माध्यम से भी परिचित होंगे। पाठ्यक्रम के लिए प्रायोगिक कक्षाएं आपके अध्ययन केन्द्र पर आयोजित की जाएँगी।

राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान को भारत सरकार द्वारा शुरू किए गए मूक्स प्लेटफॉर्म के माध्यम से पाठ्यक्रमों को प्रस्तुत करने में खुशी हो रही है। वीडियों व्याख्यान और चर्चा मंचों सहित माध्यमिक पाठ्यक्रमों के प्रमुख विषयों को मूक्स के रूप में विकसित किया गया है। गुणवतापूर्ण वीडियों देखने के लिए आपको www.swayam.gov.in पर पंजीकरण और नामांकन करना होगा। राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान ई-विद्या चैनल 10 और 12 के माध्यम से अपने शैक्षिक कार्यक्रमों का सीधा प्रसारण करता है।

हमें उम्मीद है कि आप हमारे साथ लोक कला सीखने का आनंद लेंगे। इस स्व-अध्ययन सामग्री के अंत में संलग्न फीडबैक फार्म में बेझिझक अपने सुझाव दें।

शुभकामनाओं सहित

**पाठ्यक्रम समिति**

# अध्ययन सामग्री का उपयोग कैसे करें

इसके लिए बहुत-बहुत बधाई! आपने स्व-शिक्षार्थी बनने की चुनौती स्वीकार की है। एनआईओएस हर कदम पर आपके साथ है और आपको ध्यान में रखते हुए विशेषज्ञों की एक टीम की मदद से लोक कला की सामग्री विकसित की गई है। स्वअध्ययन प्रणाली के प्रारूप का पालन किया गया है। यदि आप दिए गए निर्देशों का पालन करते हैं, तो आप इस सामग्री से सर्वोतम लाभ प्राप्त करने में सक्षम होंगे। सामग्री में प्रयुक्त प्रासंगिक चिह्न आपका मार्गदर्शन करेंगे। आपकी सुविधा के लिए इन चिह्नों के बारे में नीचे बताया गया है।

**शीर्षक:** यह भीतर की सामग्री का स्पष्ट संकेत देगा। इसे जरूर पढ़ें।

**परिचय:** यह आपको पाठ से परिचित कराएगा।

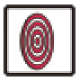

**उद्देश्य:** ये ऐसे कथन हैं जो बताते हैं कि आपसे पाठ से क्या सीखने की अपेक्षा की जाती है।

**टिप्पणियाँ:** महत्वपूर्ण बिंदुओं को लिखने या नोट्स बनाने के लिए प्रत्येक पृष्ठ में साइड मार्जिन में खाली जगह होती है।

**पाठगत प्रश्न** : अति लघु उत्तरीय पाठगत प्रश्न प्रत्येक खण्ड के बाद पूछे जाते हैं, जिनके उत्तर पाठ के अंत में दिये जाते हैं। ये आपकी प्रगति की जाँच करने में आपकी सहायता करेंगे। उनका समाधान करें। यह परीक्षण आपको यह तय करने में मदद करेगा कि आगे बढ़ना है या वापस जाना है और फिर से सीखना है।

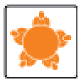

**क्रियाकलाप** : यह सीखने का एक तरीका है। सीखने वाला खुद को रचनात्मक रूप से अभिव्यक्त कर सकता है।

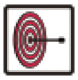

**आपने जो कुछ सीखा** : यह पाठ के मुख्य बिंदुओं का सारांश है। यह पुनरावृत्ति में मदद करेगा। इसमें अपने बिंदु भी जोड़ने के लिए आपका स्वागत हैं।

**सीखने के परिणाम** : सीखने के परिणाम आपको यह जांचने में मदद करेंगे कि आपने पाठ के माध्यम से अपेक्षित ज्ञान को सीखा है।

**पाठांत प्रश्न** : इनमें लंबे और छोटे प्रश्न होते हैं जो पूरे विषय की स्पष्ट समझ के लिए अभ्यास करने का अवसर प्रदान करते हैं।

**पाठगत प्रश्नों के उत्तर** : इससे आपको यह जानने में मदद मिलेगी कि आपने प्रश्नों के कितने सही उत्तर दिए हैं।

# विषय-सूची


**मॉड्यूल 3: भित्ति चित्र ( दिवार पर बनने वाले चित्र )**

1. मधुबनी कला 1
2. वर्ली चित्रशैली 14
3. सांझी कला 26
4. पिथौरा चित्रकला 39

**मॉड्यूल 4: फर्श चित्र ( जमीन पर बनने वाले चित्र )**

5. रंगोली 55
6. अल्पना 65
7. कोलम (केरला में कलम) 76
8. मंडना 90

**मॉड्यूल 5: चित्रों के अन्य माध्यम**

9. कपडे पर बने चित्र 105
10. मिट्टी के वस्तुओ पर बने चित्र 118
11. लकड़ी के वस्तुं पर बने चित्र 128
12. कठपुतली का निर्माण 139

## मॉड्यूल 3: भित्ति चित्र ( दिवार पर बनने वाले चित्र )

1. मधुबनी चित्रशैली
2. वर्ली चित्रशैली
3. सांझी कला
4. पिथौरा चित्रकला

# 1

# मधुबनी कला

अभी तक आपने विभिन्न लोक कलाओं के बारे में पढ़ा है। इस पाठ में हम बिहार की लोककला मधुबनी के बारे में पढ़ेगे। मधुबनी कला मिथिला की एक चित्रकला शैली है, जो नेपाल और बिहार के क्षेत्र में बनाई जाती है। इस चित्रकला में मिथिलांचल की संस्कृति को दिखाया जाता है।

मधुबनी चित्रकारी को मिथिला की कला भी कहा जाता है क्योंकि यह बिहार के मिथिला प्रदेश में पनपी थी। इस चित्रकारी की विशेषता है चटकीले और विषम रंगों से भरे गए रेखाचित्र और आकृतियां। दरअसल मधुबनी कला का जन्म कोहबर से हुआ है। कोहबर का चित्रण वर-वधु के कमरे को सजाने के लिए उसमें पूजा करने के लिए दीवार में चित्रित किया जाता है। कोहबर बिहार, झारखण्ड और उत्तर प्रदेश में भित्ति चित्र परंपरा का सबसे पुराना उदाहरण है। यह विवाह के बाद औरतों द्वारा बनाया जाता है। विवाह हिन्दू धर्म का महत्वपूर्ण संस्कार है। कोहबर का शाब्दिक अर्थ है कोह-गुफा या कमरा, वर या दुल्हा का निवास। अत: इस शब्द का अर्थ है- वह कमरा जहाँ नव वर-वधू पहली बार रहते हैं। अर्थात् नवविवाहित जोड़े का कमरा।

## उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने एवं अभ्यास करने के उपरांत आप :

- मधुबनी चित्रकला की परंपरा को पहचान कर सकेंगे;
- मधुबनी चित्रकला की उत्पत्ति के बारे में वर्णन कर सकेंगे;
- मधुबनी कला की लोकप्रिय शैलियों के बारे में उल्लेख कर सकेंगे;
- मधुबनी कला चित्रों में प्रयुक्त चित्रण सामग्री के बारे में वर्णन कर सकेंगे;
- मधुबनी कला के वर्तमान परिदृश्य के बारे में वर्णन कर सकेंगे;
- मधुबनी कला के कुछ रोचक तथ्यों के बारे में वर्णन कर सकेंगे;
- मधुवनी चित्रों में चित्रांकित विभिन्न अभिप्रायों को सूचीबद्ध कर सकेंगे।

टिप्पणियाँ

## 1.1 सामान्य परिचय

आरम्भ में हमें मधुबनी चित्रों के सामान्य परिचय के विषय में जानना आवश्यक है। कोहबर कमरे की सजावट के लिये या इसके महत्व को दर्शाती हुई कई आकृतियां या चित्र बनाये जाते हैं। ये हमारे संस्कारों का परिचय देती हैं। इस चित्र में राम सीता का विवाह या वर वधू का चित्रण होता है। प्रतीकात्मक चित्र द्वारा हमारी धार्मिक और सामाजिक परम्परा को दर्शाया जाता है। इसमें गौरी पूजा, सूर्य चन्द्रमा साक्षी रूप में चित्रित किये जाते हैं। बताया जाता है यह शहर रामायण के समय में भी था तब इसका नाम मधु के वन पर पड़ा था। इसलिये इसे मधुबनी चित्रकला के नाम से जाना जाता है। इस कारण प्राकृतिक चित्रों पर विशेष ध्यान दिया गया है उनका महत्व भी प्रतीकात्मक चित्र के द्वारा दर्शाया जाता है। जैसे-सूर्य, चन्द्रमा, मोर, मछली, बांस के पेड़, कछुआ, हाथी, हरे पेड़ आदि। धार्मिक परम्परा को निभाते हुए हिन्दू देवी देवताओं के चित्र बनाये जाते हैं जैसे गणेश, कृष्ण राधा, रामसीता, माँ गौरी, कुल देवता आदि का चित्रण होता है। मधुबनी चित्रकारी पारम्परिक रूप से यहाँ की महिलायें ही करती हैं, लेकिन अब इसकी बढ़ती माँग को देखते हुए पुरुष भी इस कला से जुड़ गये हैं। ये चित्र अपने आदिवासी रूप चटकीले और मटियाले रंगों के प्रयोग के कारण लोकप्रिय है। इसकी चित्रकारी दीवारों में गोबर की या कच्ची मिट्टी की ताजी पुताई पर की जाती है। रंगने के लिए प्राकृतिक रंगों का प्रयोग किया जाता है। उदाहरण के रूप में काला रंग काजल और गोबर के मिश्रण से तैयार किया जाता है। इसी प्रकार पीला रंग हल्दी या फूलों के पराग से या फिर नीबू और बरगद के पेड़ के दूध से बनाया जाता है। लाल रंग कुसुम के फूल के रस से या लाल चन्दन से बनाया जाता है। हरा रंग वृक्ष की पत्तियों से, सफेद रंग चावल के चूर्ण से तथा पलाश के फूल से बसंती रंग। इस तरह रंगों का चयन करके चित्र को सजाया जाता है। एक जैसे सपाट रंग लगाये जाते हैं शेड नहीं डाला जाता, न ही कोई खाली स्थान छोड़ा जाता है। आजकल धन प्राप्ति के लिये इस चित्रण कार्य को कागज, कपड़े और कैनवास पर किया जा रहा है। रंगों के लिये भी एक्रेलीक पोस्टर रंग का प्रयोग करते हैं। यह हस्तकौशल एक पीढ़ी दूसरी पीढ़ी को सौंपती आयी है। इसलिये इनके पारम्परिक डिजाइनों और नमूनों को पूरी तरह सुरक्षित रखा जाता है। कृषि के अलावा ये आमदनी का एक अन्य साधन बनाए रखने के लिए अखिल भारतीय शिल्पकला बोर्ड और भारत सरकार ने महिलाओं को हाथ से बने कागज पर अपनी पारम्परिक चित्रकारी करके उसे बाजार में बेचने के लिए प्रोत्साहित करता है। मधुबनी चित्रकारी अनेक परिवारों की आमदनी का एक मुख्य साधन बन गया है। विश्व बाजार में इस कला की माँग को देखते हुए तथा मिथिला की महिलाओं की इस कला परम्परा की सराहना करनी चाहिए।

## 1.2 पारम्परिक मधुबनी अभिप्राय (मोटिफ)

1. सूर्य : मधुबनी डिजाइन में अधिकतर सूर्य और चन्द्रमा का चित्रण किया जाता है। इन्हें दिव्य निकाय के प्रतीक रूप में प्रयोग किया जाता है।
2. कछुआ : मधुबनी पेटिंग में कछुए अभिप्राय का प्रयोग किया जाता है। दरअसल यह समृद्धि और प्रजनन के प्रतीक के रूप में दर्शाया जाता है।
3. गणेश : यह अभिप्राय धार्मिक और पौराणिक घटनाओं के रूप में प्रयोग किया जाता है। इसके अलावा और भी देवी देवताओं का प्रयोग होता है।

1 2 3 4

5 6

7 8 9 10

चित्र 1.1: मधुबनी अभिप्राय/मोटिफ

4. बांस का पेड़ : पेड़ जीवन और उत्साह का प्रतीक है। बांस को शुभ माना जाता है।

5. मछली : मछली का प्रयोग मधुबनी पेंटिग में अनिवार्य रूप से पाया जाता है। ये समृद्धि और प्रजनन का प्रतीक मानी जाती है।

6. हाथी : मधुबनी कला में हाथी का प्रयोग स्थानीय जीव के रूप में किया जाता है।

7. स्त्री : स्त्री अभिप्राय का प्रयोग कई जगह किया जाता है जैसे विवाह समारोह अथवा सामुदायिक गतिविधियों में ग्रामीण जीवन को दर्शाने में प्रयोग किया जाता है।

टिप्पणियाँ

8. कमल : कमल अभिप्राय का प्रयोग मधुबनी चित्रकला में कई जगह किया जाता हैं, जैसे धार्मिक समारोह में, विवाह में, वन में अथवा शाही बागान में। कमल एक महत्वपूर्ण प्रतीक माना गया है।

9. कलश : विवाह समारोह के दौरान धार्मिक गतिविधियों में कलश का प्रयोग अनिवार्य रूप से होता है।

10. मोर : मोर पक्षी का प्रयोग कई जगह किया जाता है, जैसे राधा कृष्ण रास लीला में, राम वन गमन, शाही स्थलों को दर्शाने में अथवा विवाह समारोह के दौरान धार्मिक गतिविधियों में। मोर अभिप्राय का प्रयोग वनस्पति और जीव चित्रण में महत्वपूर्ण अंग है।

## 1.3 मधुबनी चित्र बनाने हेतु आवश्यक सामग्री

- कपड़ा या मोटी ड्राइंग शीट/हैंड मेड शीट/हाथ से बना कागज
- पेंसिल
- रबड़
- काला मार्कर
- फाइन-टिप राउंड ब्रुश (आकार 0, 1 और 8 तथा अन्य)
- स्केल
- कार्बन शीट
- फैब्रिक कलर (कपड़े के लिए रंग)
- पोस्टर कलर (पेपर के लिए रंग)
- ट्रेसिंग पेपर

**टिप्पणी :** परंपरागत रूप से मधुबनी पेंटिंग्स उंगलियों, टहनियों, ब्रुश, निब-पेन और माचिस की तीली के द्वारा बनायी जाती है।

## 1.4 पारम्परिक विधियां

### चरण 1: बॉर्डर

बॉर्डर मधुबनी चित्रकला का महत्वपूर्ण पहलू है और यह चित्रकला को पूरा करता है। निरंतर ज्यामितीय डिजाइन या प्रकृति प्रेरित रूपों का उपयोग किया जा सकता है। सीमा 1/2 इंच से 2 इंच चौड़ी हो सकती है। जितना बड़ा कैनवास उतना ही बड़ा बॉर्डर। यहाँ हम 1/2 इंच का बॉर्डर खींचेंगे।

सबसे पहले फ्री हैंड से सामान के अर्ध मंडल बनाएं और इस अर्धमंडल में दोहरी रेखाएं (डबल लाइन्स) जोड़े। इसी तरह का पैटर्न अंदर की बाउंड्री के लिये खीचें। डबल लाइन के साथ गोले जोड़ें। अंततः रेखा और गोले के बीच की जगह भर दें।

### चरण 2: लेआउट

पेटिंग के लेआउट की संकल्पना करें। पहले मुख्य चरित्र को स्केच करें। इसके बाद शेष स्थान को सार पैटर्न से भरे। सार पैटर्न में आप वनस्पतियों जैसे पेड़ और जीवों जैसे मछली, मोर, हिरन इत्यादि का प्रयोग कर सकते हैं। सार पैटर्न को मुख्य विषय का समर्थन करना चाहिए।

### चरण 3: पैटर्न्स

विवरण के लिए पैटर्न्स को दोहराएं। इसका कोई निश्चित नियम नहीं है। आप कोई से भी पैटर्न का प्रयोग कर सकते हैं। यह पैटर्न प्रमुख विषय के साथ अच्छी तरह से मिश्रित होना चाहिए। बॉर्डर में भी विवरण के लिए पैटर्न्स का प्रयोग किया जा सकता है। इस बात का ध्यान रखें कि मिथिला पेटिंग में मुख्य विषय के चारों ओर कोई जगह नहीं छोड़ी जाती है।

### चरण 4: पृष्ठभूमि का रंग

रंग भरते समय सर्वप्रथम पृष्ठभूमि के रंग का निर्णय कर ले। पृष्ठभूमि का रंग मुख्य विषय के अनुरूप होना चाहिए।

### चरण 5: अग्रभूमि का रंग

पृष्ठभूमि में रंग करने के बाद, अग्रभूमि में चटकीले रंग भरे। रंगों का चयन बहुत महत्वपूर्ण है। अगर संदेह हो तो स्पष्ट रंगों का प्रयोग करें। जैसे कि पेड़ के तने को भूरा, पत्तियों को हरा, मोर को नीला इत्यादि। रंग संयोजन के बारे में अधिक जानकारी के लिये खुद को रंग पहिया (Color wheel) से परिचित कराएं।

### चरण 6: पृष्ठभूमि के पैटर्न्स

यह चरण ऐच्छिक है। आप पृष्ठभूमि को एकल रंग से भर सकते हैं। लेकिन पैटर्न मधुबनी कला का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। पृष्ठभूमि को और रोचक बनाने के लिये गोल ब्रुश के साथ काले रंग से पैटर्न को दोहराएं।

## चित्रण हेतु पृष्ठभूमि तैयार करना

प्राचीनकाल में, मिथिला में चित्रों को फर्श और दीवार पर बनाया जाता था। इन दिनों यह कपड़े और कागज पर किया जाता है। अपनी सतह का चयन करें।

हम प्राकृतिक रंगों का उपयोग नहीं करेंगे जैसा कि प्राचीन मिथिला चित्रकला में किया जाता था। लेकिन सिंथेटिक रंग जैसे पोस्टर रंग, तेल रंग या एक्रिलिक रंग का प्रयोग करेंगे।

अब विषय का चयन करें, जैसे पौराणिक कथा या दिन-प्रतिदिन के जीवन का चित्रण।

टिप्पणियाँ

## प्रायोगिक अभ्यास 1

विद्यार्थियों, अभी हमने मधुबनीा चित्रकला की पारम्परिक विधियां सीखीं। अब हम मधुबनी चित्र का एक उदाहरण देखेंगे जिसका विषय है राम सीता विवाह।

### चरण 1: बॉर्डर

बॉर्डर मधुबनी चित्रकला का महत्वपूर्ण पहलू है और यह चित्र को पूरा करता है। निरंतर ज्यामितीय डिजाइन या प्रकृति प्रेरित रूप का उपयोग किया जा सकता है। सीमा 1/2 इंच से 2 इंच चौड़ी हो सकती है। जितना बड़ा कैनवास उतना ही बड़ा बॉर्डर होगा। यहाँ हम 1/2 इंच का बॉर्डर खीचेंगे।

चित्र 1.2

### चरण 2: लेआउट

पेटिंग के लेआउट की संकल्पना करें। पहले मुख्य चरित्र को स्केच करें। यहाँ हम राम सीता जी के विवाह का चित्रांकन कर रहे हैं। इसलिये सर्वप्रथम हम राम सीता जी को रेखांकित करेंगे।

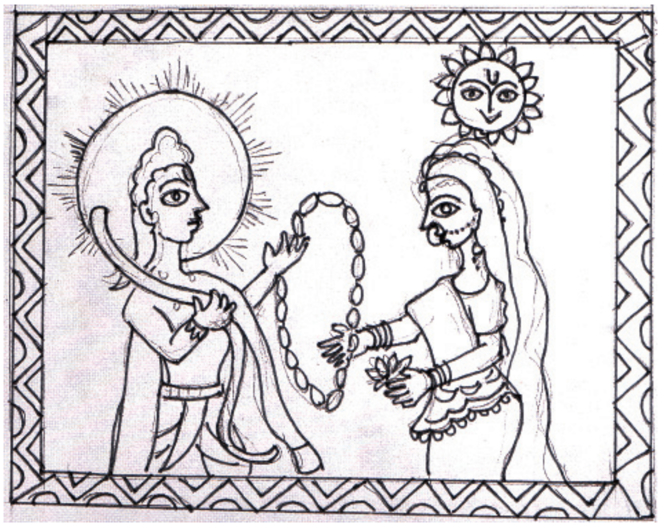

चित्र 1.3

### चरण 3: पैटर्न्स

इस बात का ध्यान रखें कि मिथिला पेंटिंग में मुख्य विषय के चारों ओर कोई जगह नहीं छोड़ी जाती है। खाली स्थान को प्रतीक चिन्हों से भरें। यहाँ हम सूरज, तोता, मछली, कलश और पुष्पों का प्रयोग करेंगे। सूरज का मधुबनी में प्रमुख स्थान है।

चित्र 1.4

### चरण 4: रंग भरना

अन्तिम चरण में हम रंग भरेंगे, पहले बॉर्डर को दो अलग-अलग रंगों से भरेंगे फिर मुख्य पात्र यानि राम सीता के कपड़े, बाद में फूल, मछली, मोर, सूर्य सब में चित्र के अनुसार रंग भरेंगे। आप अलग रंग भी कर सकते हैं, लेकिन चटकीले रंगों का प्रयोग ठीक है। पत्तियों को हरे, मोर को नीले रंग से रंगे आदि।

चित्र 1.5

## प्रायोगिक अभ्यास 2

अब हम दूसरी मधुबनी चित्र बनायेंगे जिसका विषय मछली और मोर है।

### चरण 1: बॉर्डर

बॉर्डर मधुबनी चित्रकला का महत्वपूर्ण पहलू है और यह चित्र को पूरा करता है। ज्यामितीय डिजाइन या प्रकृति प्रेरित रूप का उपयोग किया जा सकता है। सीमा 1/2 इंच से 2 इंच चौड़ी हो सकती है। जितना बड़ा कैनवास, उतना ही बड़ा बॉर्डर होगा। यहाँ हम 1/2 इंच का बॉर्डर खीचेंगे।

सबसे पहले फ्री हैंड से समान आकार के अर्ध मंडल बनाएं और इस अर्धमंडल में डबल लाइन्स जोड़े। इसी तरह का पैटर्न अंदर की बाउंड्री के लिये खींचे। डबल लाइन के साथ गोला जोड़ें। अंतत: रेखा और सर्किल के बीच की जगह भर दें।

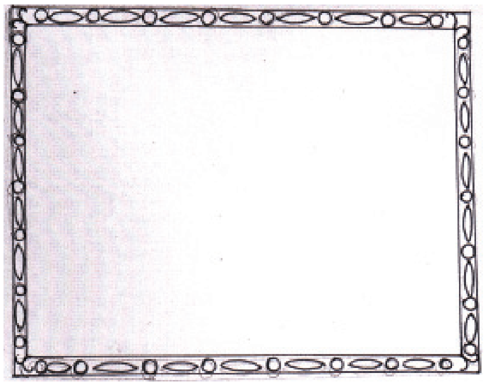

चित्र 1.6

### चरण 2: लेआउट

पेटिंग के लेआउट की संकल्पना करें। पहले मुख्य चरित्र को स्केच करें। इसमें मोर और मछली को बनायें। इसके बाद शेष स्थान को सारे पैटर्न से भरें। सारे पैटर्न को मुख्य विषय का समर्थन करना चाहिए इसलिये मोर के आसपास मोर पंख बनाए और मछली के पास पानी की लहरों के अर्द्ध चन्द्राकार गोल बनायें।

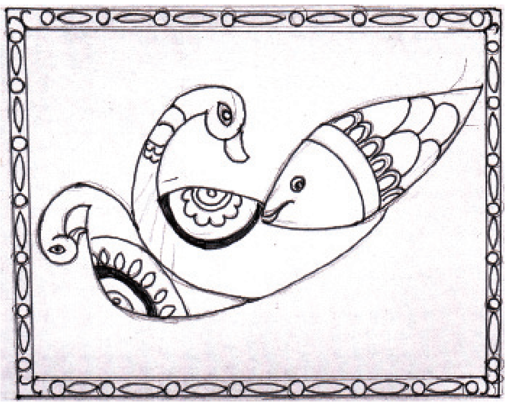

चित्र 1.7

### चरण 3: पैटर्न

विवरण के लिये पैटर्न्स को दोहराएं। इसका कोई निश्चित नियम नहीं है। आप कोई भी पैटर्न का प्रयोग कर सकते हैं। यह पैटर्न प्रमुख विषय के साथ अच्छी तरह से मिश्रित होना चाहिए। बॉर्डर में भी विवरण के लिये पैटर्न का प्रयोग किया जा सकता है।

चित्र 1.8

### चरण 4: रंग भरना

इस बात का ध्यान रखें कि मिथिला पेटिंग में मुख्य विषय के चारों ओर कोई जगह खाली नहीं छोड़ी जाती है। जैसे नीचे दिए गए चित्र में किया है, काले रंग का प्रयोग करके चित्र को पुरा करें।

चित्र 1.9

## प्रायोगिक अभ्यास 3

एक और मधुबनी चित्र बनाते है। चित्र का विषय कोहबर है।

### चरण 1

मधुबनी चित्रकला में कोहबर का चित्रण प्रमुख विषय है। यह कोहबर घर की दिवार पर बनाया जाता है। इस चित्र को बनाने के लिए धरातल पर बड़ा आयत बनाए। इस आयत में चारों तरफ बॉर्डर या हाशिया बनाए। यह 1/2 इंच से लेकर 2 इंच तक हो सकता है। इस हाशिये में हम तिरछी रेखाओं से त्रिभुज के समान आकृति का ज्यामितीय आलेखन बनाऐगें।

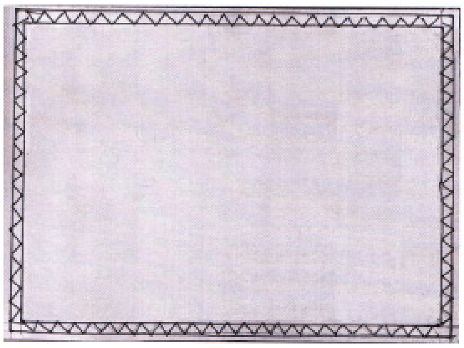

चित्र 1.10

### चरण 2

अब हम मुख्य चित्रभूमि पर केन्द्र में बन देवी बनाएं। इस देवी के मध्य भाग में एक अलंकृत वृत्त बना देंगे जिसमें एक फूल की आकृति होगी। दोनों हाथों की जगह हम बड़ी-बड़ी पत्तियां बनाएगे। ऊपर नीचे चारो तरफ गोल फल बनाएगें। इस वृक्ष का तना हम लहगें की तरह अलंकृत करेगें। यह वन देवी समृद्धी की देवी समान है। इस आयत में हम अन्य आकृतियां जैसे सबसे ऊपर नवविवाहित बर बधू को बनाएगें। नीचे की तरफ दो महिला आकृतियों के बीच में एक झांकी को चित्रित करेगें। बाईं तरफ दो मोर और दाहिनी तरफ एक बैठी हुई महिला को बनाएगें।

चित्र 1.11

टिप्पणियाँ

## चरण 3

कोहबर चित्रण में खाली स्थान नहीं छोड़ते हैं। इसलिए हम मछली, तोते, नाग नागिन, कछुआ, फल, फूल, पत्तियां तथा वृक्ष की टहनियों को चित्रित करेंगे। घड़े तथा टोकरियों को भी चित्रित करेंगे, जो खुशी एवं समृद्धि के प्रतीक हैं।

चित्र 1.12

## चरण 4

इस चित्र को हम गेरूए रंग से सफेद धरातल पर बनाएंगे।

चित्र 1.13

## आपने क्या सीखा

**मधुबनी कला**

- दोहरी बाहरी सीमा
- ज्यामितीय आकृतियां
- प्राकृतिक रंगों का प्रयोग
- प्रसिद्ध चित्रकार : सीता देवी गंगा देवी इत्यादि
- उत्पत्ति और विस्तार बिहार के मिथिला जिले में

## पाठांत प्रश्न

1. भगवान श्री राम का स्वर्ण हिरन का शिकार करते हुए रेखांकन कीजिए।
2. भगवान शिव की पूजा करती हुई महिला का मधुबनी चित्रांकन कीजिए।
3. प्राकृतिक मोटिफ मछली और कमल को मधुबनी स्टाइल में रेखांकित कीजिए।
4. ग्रामीण महिला जिसके सर पर पानी भरा घड़ा हो, उसको रेखांकित कीजिए।
5. मधुबनी कला की उत्पत्ति किस जगह से हुई?
6. मधुबनी कला की दो प्रमुख शैलियों के अलग-अलग चित्र बनाएं।
7. मधुबनी कला की कोई तीन विशेषताएं बताईये।
8. मधुबनी कला में प्रयोग होने वाले कोई तीन मोटिफ को चित्रित करें।
9. मधुबनी कला में पदमश्री सर्वप्रथम किसको मिला? उनके चित्रों की प्रतिमूर्ति बनाए।

### शब्दकोष

उपरान्त : पश्चात, बाद

उत्पत्ति : किसी कार्य या वस्तु के आरंभ होने या करने का समय

प्रयुक्त : जिसे प्रयोग या व्यवहार में लाया गया हो

अभिप्राय : तात्पर्य, आशय, मोटिफ

सूचीबद्ध : व्यक्तियों, वस्तुओं आदि को किसी विशेष उद्देश्य से तालिकाबद्ध करना

| | | |
|---|---|---|
| अनिवार्य | : | जिसके बिना काम न चल सके |
| गतिविधि | : | रहने-सहने का ढ़ंग, आचरण, चाल-ढ़ाल, क्रिया-कलाप |
| प्रतीकात्मक | : | जो प्रतीक या प्रतीकों से संबद्ध हो |
| व्यापक | : | चारों ओर फैला हुआ; छाया हुआ |
| तदनुसार | : | उसी प्रकार से |
| परिदृश्य | : | प्राकृतिक दृश्यों का प्रतिनिधित्व करने वाली एक तस्वीर |
| पारंपरिक | : | परंपरा संबंधी |
| पृष्ठभूमि | : | एक तस्वीर, दृश्य या डिजाइन का हिस्सा जो मुख्य आंकड़ों या वस्तुओं के लिए एक सेटिंग बनाता है |
| ज्यामितीय | : | गुणों और बिंदुओं, रेखाओं, सतहों, ठोस और उच्च आयामी एनालॉग के संबंधों से संबंधित गणित की शाखा। |

# 2

# वर्ली चित्र

अभी तक आपने भिन्न-भिन्न प्रकार की मधुबनी लोककला के बारे में जानकारी हासिल की। इस पाठ में आप वर्ली आदिवासियों द्वारा बनाए जाने वाले भिर्त्ति चित्र वर्ली के बारे में पढ़ेगे। वर्ली आदिवासियों द्वारा बनाए जाने वाले भित्तिचित्र वर्ली चित्र कहलाते हैं। भारत के महाराष्ट्र राज्य के दाहाणू एवं तलासरी तालुकों में बसने वाले वर्ली आदिवासियों में अनुष्ठानिक भित्तिचित्र बनाने की सुदीर्घ परम्परा है। इनमें जन्म, मृत्यु तथा विवाह के अनुष्ठानों पर स्त्रियों द्वारा भूमिचित्र भी बनाए जाते हैं। विवाह समारोह के अनुष्ठानों में बनाए जाने वाले पालघट देवी के लिए पालघट चौक केवल सुहागन स्त्रियों द्वारा बनाए जाते हैं। वास्तव में इन चित्रों में वर्ली आदिवासियों का विश्वदर्शन, उनके देवकुल, उनके दैनिक जीवन की गतिविधियां तथा उनके गांव तथा पर्यावरण, पशु-पक्षी एवं वनस्पति की सुन्दर झांकी देखने को मिलती है। चित्र के मध्य में चौकोर, चौक बनाया जाता है। कभी-कभी यह चौक ज्यामितिय आकारों जैसे अर्द्ध गोलाकार, एक दूसरे को काटती रेखाओं, कंगूरों, बिन्दुओं, रेखाखण्डों से संयोजित होता है। कभी-कभी बॉर्डर की सज्जा कुछ मोटिफ जैसे बासिंग (वर-वधु) द्वारा विवाह में पहने जाने वाले मौर, कंघी एवं सांकल आदि जैसे अभिप्रायों की पुनरावृत्ति से की जाती है। चौक के मध्य में दो लम्बवत एवं सम्मुख शीर्ष वाले त्रिभुजों को जोड़कर पालघट देवी की आकृति चित्रित की जाती है। चौक के मध्य शीर्ष स्थान में कभी-कभी चंद्र, सूर्य, कंघी, फूल, सीढ़ी एवं बासिंग आदि भी चित्रित किए जाते हैं। चौक के बाहर दीवार के ऊपरी भाग में वर्ली देवकुल के अन्य देवों जैसे बाघदेव, पाँच सिरया, हिरोबा, चंद्रदेव एवं सूर्यदेव के साथ विवाह की अनेक गतिविधियाँ, कृषिकर्म, नृत्य करते युवक-युवतियाँ, बाराती, पोड़ पौधे एवं पशु-पक्षी आदि चित्रित किए जाते हैं। यह चित्रकारी सामूहिक रूप से की जाती है।

पुरातत्वविज्ञानियों के मतानुसार, वर्ली आदिवासियों द्वारा बनाए जाने वाले भित्तिचित्र, मध्य भारत के उन गुफाचित्रों का विस्तार प्रतीत होते हैं जिन्हें नियोलिथिक शैलचित्रों के रूप में वर्गीकृत किया गया है। इस काल के गुफाचित्रों की विशेषता सफेद बाह्यरेखा, त्रिभुजाकार शरीर वाली मानव एवं पशु-पक्षी आकृतियां तथा ज्यामितिय चित्रण है। वर्ली चित्रों में बनाई जाने वाली आकृतियाँ विवरणविहीन छायाओं की भांति सादगीपूर्ण परन्तु वेगवान, गुफाचित्रों के समान परिलक्षित होती हैं। पिछले कुछ वर्षों में स्त्रियों की इस चित्रकला को जीविका उपार्जन हेतु पुरूषों द्वारा भी अपना

लिया गया हैं, जो शहरी बाजार में बेचने के लिए परम्परागत चित्रों को एक नये समकालीन रूप में प्रस्तुत कर रहे हैं।

## उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने एवं तदनुसार अभ्यास करने के उपरान्त आप :

- वर्ली चित्र परम्परा का वर्णन कर पायेंगे;
- वर्ली आदिवासियों एवं नियोलिथिक काल के गुफाचित्रों के मध्य साम्य का विश्लेषण कर सकेंगे;
- अनुष्ठान एवं अवसरों पर बनाये जाने वाले वर्ली चित्रों के मध्य सम्बन्ध पर चर्चा कर सकेंगे;
- वर्ली चित्रों में प्रयुक्त चित्रण सामग्री को पहचान कर सकेंगे;
- वर्ली चित्रों में चित्रांकित विभिन्न अभिप्रायों को सूचीबद्ध कर सकेंगे।

## 2.1 सामान्य परिचय

शिक्षार्थी, अब हम वर्ली चित्रों के सामान्य परिचय से अवगत होंगे। वर्ली चित्रकला भारत के महाराष्ट्र राज्य के दाहाणू और तालासरी इलाकों में बसने वाले वर्ली आदिवासियों द्वारा पारम्परिक अनुष्ठानों में भित्ति चित्र बनाने की परम्परा है। इनमें जन्म, मृत्यु और विवाह के अनुष्ठानों में महिलाओं द्वारा चित्र बनाये जाते है, जिनमें पालघट चौक सुहागिन स्त्रियों द्वारा पालघट देवी के लिये बनाया जाता है। वर्ली चित्रकला की विशेषता है कि इसमें आदिवासियों के दैनिक जीवन की गतिविधियों, गांव, पर्यावरण, पशु-पक्षी, देवी देवता आदि की झलक मिलती है। कभी-कभी ये चौक ज्यामितीय आकारों जैसे अर्द्ध गोलाकार एक दूसरे को काटती रेखाओं, रेखाओं, बिन्दूओं द्वारा बनाया जाता है। भित्ति चित्र में ज्यादातर चन्द्र, सूर्य, कंधी, फूल सीढ़ी के अलावा देवकुल के देवताओं जैसे वाघदेव, पांच सिरया, हिरोबा, चन्द्रदेव, सूर्यदेव के साथ-साथ विवाह की अनेक गतिविधियों, नृत्य करते स्त्री पुरुष, बाराती, पशु पक्षी के सामूहिक चित्र बनाये जाते हैं। वर्ली आदिवासियों द्वारा बनाये गये चित्रों की विशेषता है त्रिभुजाकार शरीर वाले मानव। पहले स्त्रियां ही इस कला में हिस्सा लेती थीं, परन्तु अब पुरुषों ने भी इस कला को अपना कर रोजगार का अच्छा माध्यम बना लिया है।

## 2.2 पारम्परिक वर्ली मोटिफ/अभिप्राय

वर्ली चित्रों में अंकित किए जाने वाले कुछ महत्त्वपूर्ण मोटिफ निम्न हैं।

- **पालघट देवी का चौक** – विवाह के अनुष्ठान चित्रों में इसका केन्द्रीय महत्व हैं। इसमें चौकोर चौक के मध्य एक देवी आकृति चित्रित की जाती है।

- **पाँच सिरया** – यह पाँच सिरवाले घुड़सवार के रूप में चित्रित किया जाता हैं इसे एक चौक के मध्य या बिना चौक के बनाया जा सकता हैं यह रक्षक देव है।

- **बाघदेव** – लकड़ी के खम्बे जिस पर बाघ प्रतिमा बनी हो, के रूप में चित्रित किया जाता है।

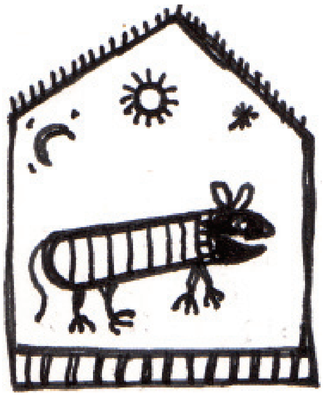

- **चंद्र-सूर्य** – आदिवासी प्राकृतिक शक्तियों के रूप में इन्हें पूज्य मानते हैं।

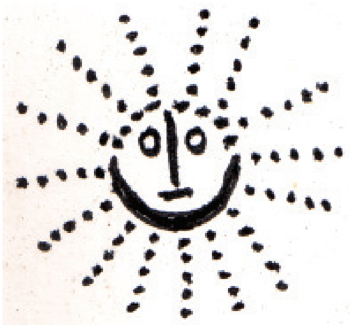

- **घुड़सवार दुल्हा-दुल्हन** – विवाह अनुष्ठान हेतु बनाए जाने वाले चित्रों में घोड़े पर सवार दूल्हा या बंदनवार में खड़े दुल्हा-दुल्हन प्रमुखता से बनाए जाते हैं।

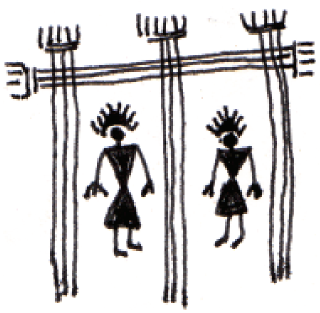

- **मुकुट/मौर** – विवाह चित्रों में वर-वधु द्वारा सिर पर पहने जाने वाले मौर जिन्हें सेहरा कहते हैं, चित्रित किए जाते हैं।

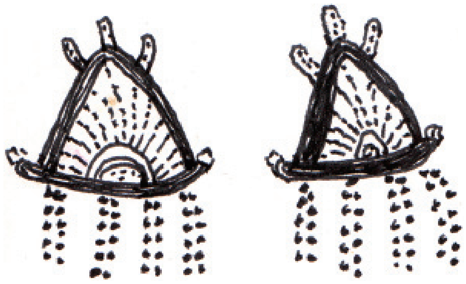

- **वनस्पति** – वर्ली चित्रों में ताड़ एवं अन्य वनस्पतियों का चित्रण बहुतायत से किया जाता है।

- **मानव आकृतियाँ** – विभिन्न गतिविधियों में संलग्न मानव आकृतियाँ, वर्ली चित्रों का अभिन्न अंग है। इन्हें नृत्य करते, बराती, भगत, कृषक, शिकारी एवं अन्य दैनिक कार्य करते स्त्री पुरूष के रूप में चित्रित किया जाता है।

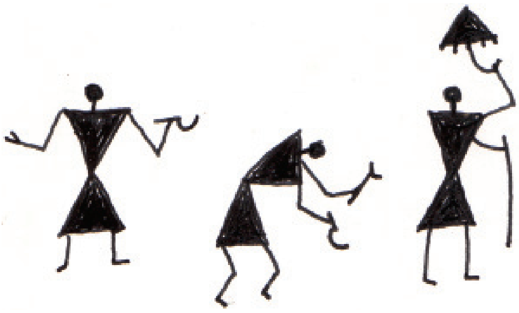

- **पशु-पक्षी** – पशु – पक्षी आकृतियों का सुन्दर निरूपण वर्ली चित्रों में होता है इनमें मोर, हिरण, बकरी, घोड़ा, मुर्गा, मुर्गी, गाय, शेर, चिड़ियाँ, मकड़ी, चीटी, सियार, सारस आदि प्रमुख हैं।

- **चरवाहा** – बकरी एवं गाय चराने ले जाता चरवाहा वर्ली चित्रों का महत्वपूर्ण अंग है।

- **तारपा** – यह एक वाद्ययंत्र होता है जिसे बजाते हुए तारपा नृत्य करते युवक-युवतियों की टोली वर्ली चित्रों का सर्वाधिक लोकप्रिय दृश्य है।

- **ताड़ी उतारता युवक** – ताड़ वृक्ष से ताड़ी उतारने हेतु वृक्ष पर चढ़ती मानव आकृति वर्ली जीवन की एक महत्वपूर्ण गतिविधि दर्शाती है।

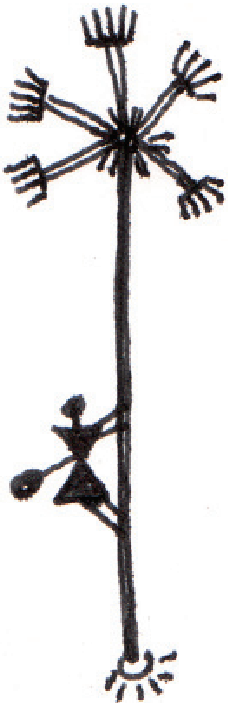

चित्र 2.1

टिप्पणियाँ

## 2.3 आवश्यक सामग्री

### वर्ली चित्र बनाने हेतु छात्र के लिए आवश्यक सामग्री

- ड्राइंग बोर्ड
- ड्राइंग पिन
- पेंसिल
- रबर
- फैवीकोल
- स्केल
- ड्राइंग शीट या मारकीन कपड़ा
- 1, 3 एवं 7 नम्बर की गोल मुलायम ब्रश
- सफेद एवं भूरा (ब्राउन) पोस्टर रंग (कलर) तथा गेरू
- प्लास्टिक का छोटा मग

## 2.4 वर्ली चित्रकला की पारम्परिक विधि

चलिये चित्र के पृष्ठभूमि तैयार करना सीखे।

- ड्राइंग शीट या बिना धुले मानकीन कपड़े का 14" × 20" का टुकड़ा लें।
- इस पर स्केल एवं पेंसिल की सहायता से चारों ओर 1" चौड़ा हाशिया बनाएं। इस प्राकर कागज/कपड़े पर 12" × 18" का एक आयताकार प्राप्त होगा।
- अब गेरू को पानी में घोलकर एक गाढ़ा घोल तैयार करें। इसमें थोड़ा फैवीकॉल मिला लें ताकि जब गेरू कागज/कपड़े पर लगाया जाए तो वह हाथ लगाने पर कागज/कपड़े से छूटे नहीं।
- तैयार गैरू के घोल को 7 नम्बर ब्रुश की सहायता से कागज/कपड़े पर तैयार किए गए 12" × 18" के आयताकार में सफाई के साथ सपाट भरें। तदुपरान्त कागज/कपड़े को सूखने हेतु रख दें। इस प्रकार चित्रण हेतु भूरे रंग की पृष्ठभूमि तैयार हो जाएगी।
- तैयार पृष्ठभूमि पर उंगली रगड़ कर देखें, यदि रंग छूटता है तो गेरू के घोल में थोड़ा और फैवीकॉल मिलाए एवं पुनः रंग भरे।
- चित्रण हेतु उपयुक्त सतह तैयार करने के लिए गेरू के घोल के कम से कम दो कोट करना आवश्यक है। दूसरा कोट करने से पहले ये देखाना जरूरी है कि पहला कोट पूर्णतः सूख गया हो।

## प्रायोगिक अभ्यास 1

- ड्राइंग शीट पर वर्ली आदिवासियों द्वारा विवाह के अवसर पर बनाए जाने वाले पालघट देवी के चौक को केन्द्र में रखते हुए चित्र संयोजन करें।

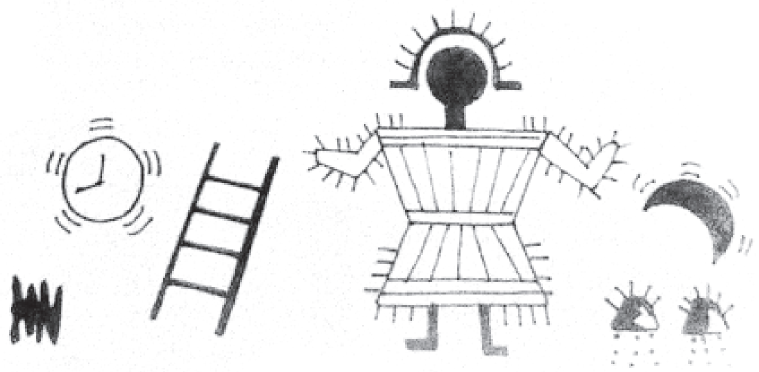

चित्र 2.2

- सर्वप्रथम पालघाट देवी के चौक एवं विवाह सम्बन्धी अन्य वर्ली मोटिफ्स् का चयन करें।

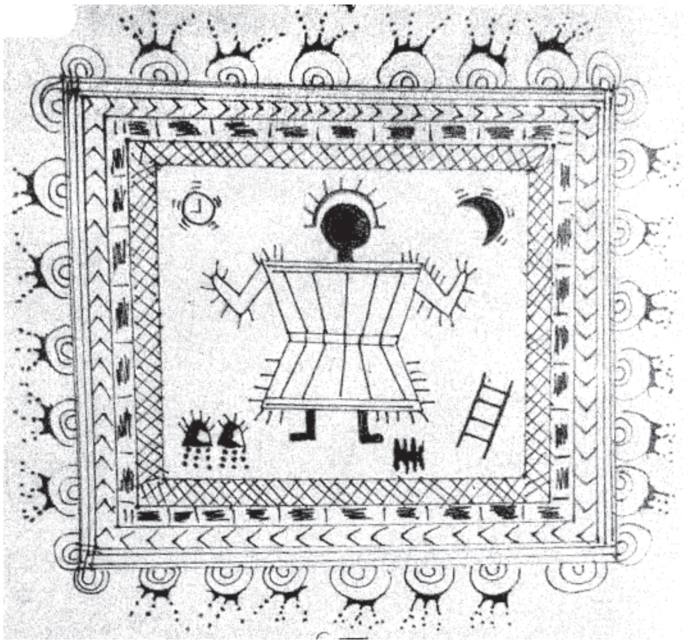

चित्र 2.3

- चयन किए गए मोटिफ को ध्यान में रखते हुए अपने मन में एक चित्र संजोजन की कल्पना करें। अपनी कल्पना के अनुरूप ड्राइंग शीट पर, गहरा भूरा रंग लगाकर पहले से तैयार की गई पृष्ठभूमि पर, पेंसिल से उन सभी मोटिफ्स् का स्थान एवं सामान्य आकार सुनिश्चित करें जो आप चित्रित करना चाहते हैं। ध्यान रहे मध्य भाग में पालघाट देवी का चौक बनाया जाएगा।

- अब पैंसिल से उन सभी आकृतियों का सटीक रेखांकन कर लें जो चित्रांकित की जा रही हैं।

चित्र 2.4

- अब 1 नम्बर ब्रुश की सहायता से सफेद पोस्टर कलर द्वारा प्रत्येक आकृति की बाह्यरेखा बना लें।

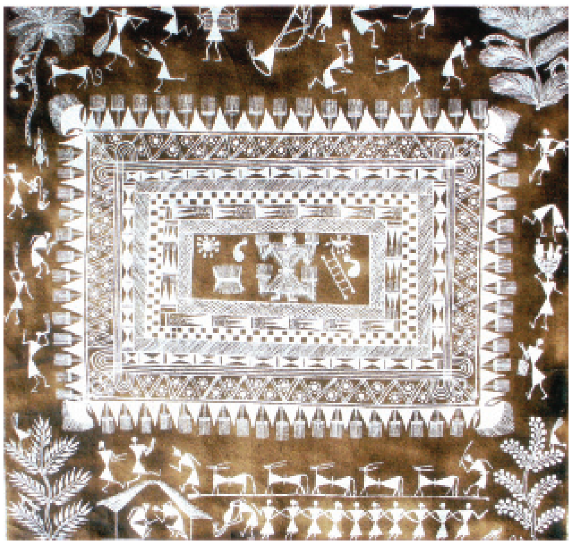

चित्र 2.5

- इसके बाद 3 नम्बर ब्रुश की सहायता से प्रत्येक आकृति की बाह्यरेखा के मध्य सपाट सफेद रंग भरें। अन्त में चित्रित की गई मानव एवं पशु-पक्षी आकृतियों के हाथ-पैर एवं सिर आदि स्पष्ट कर लें।

मानव एवं पशु आकृतियाँ बनाते समय यह ध्यान रखना है कि उनके शरीर का निरूपण सम्मुख शीर्ष वाले दो त्रिभुजों के शीर्ष मिलाकर करना है। मानव आकृति बनाते समय ये त्रिभुज लम्बवत होंगे तथा पशु आकृति हेतु इन्हे क्षितिज बनाया जाएगा।

टिप्पणियाँ



## प्रायोगिक अभ्यास 2

अब हम दूसरी वर्ली चित्र बनाते हैं। कपड़े पर वर्ली चित्र संयोजित करने के लिए ताड़ वृक्ष से ताड़ी उतारने का दृश्य बनायेंगे।

- आपको मारकीन कपड़े पर गेरू से तैयार की गई पृष्ठभूमि पर अपनी रूचि के अनुरूप वर्ली मोटिफ चुनकर संयोजित करना है। अपनी कल्पना में एक वर्ली चित्र का संयोजन करें।
- काल्पनिक संयोजन के अनुसार पेंसिल से कपड़े पर तैयार पृष्ठभूमि पर चित्रित किए जाने वाले विभिन्न मोटिफ्स् का स्थान एवं आकार चिन्हित करें।

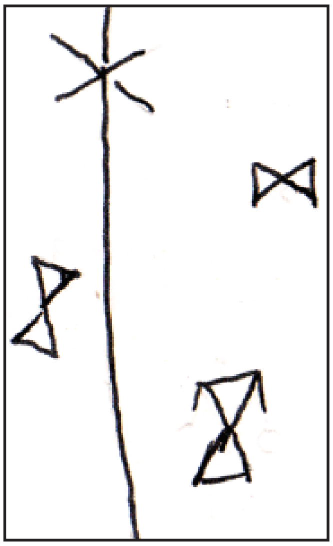

चित्र 2.6

- प्रत्येक आकृति का पेंसिल से रेखांकन कर लें।

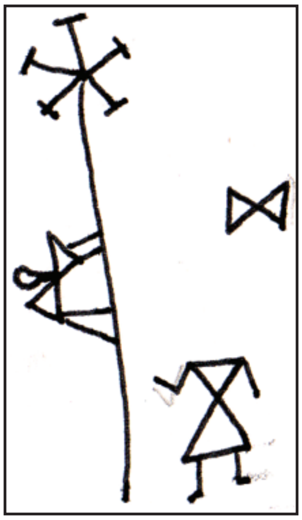

चित्र 2.7

- इसके बाद एक नम्बर के ब्रुश से सफेद पोस्टर कलर द्वारा प्रत्येक आकृति की बाह्यरेखा बनाएं।

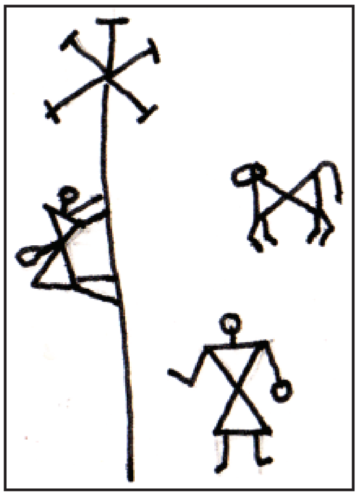

चित्र 2.8

- अब तीन नम्बर के ब्रुश से सभी आकृतियों के अन्दर सपाट सफेद रंग भरें। अन्त में मानव एवं पशु-पक्षी की आकृतियों के हाथ-पैर, सिर आदि स्पष्ट करें।

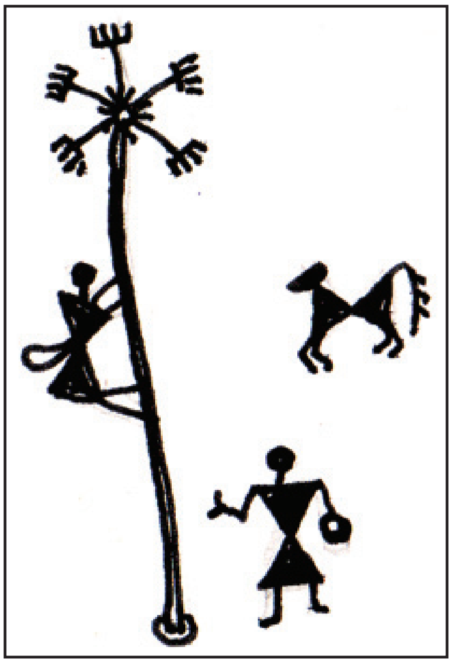

चित्र 2.9

मानव एवं पशु आकृतियाँ बनाते समय यह ध्यान रहे कि उनका निरूपण एक दूसरे की ओर शीर्ष वाले दो त्रिभुजों को मिलाकर करना हैं। मानव आकृति हेतु यह त्रिभुज एक के ऊपर एक होंगे तथा पशु आकृति हेतु इन्हें एक दूसरे के सामने रखना है।

टिप्पणियाँ

चित्र 2.10

## आपने क्या सीखा

**वर्ली कला**

**प्रारम्भिक युग**
- महाराष्ट्र में उत्पन्न हुई और फैली
- दीवार पर बनने वाली चित्रकला
- धार्मिक व सामाजिक अवसरों पर प्रयोग होती है
- त्रिभुजाकार आकृतियों का प्रयोग
- मानव और पशु-पक्षी आकृतियों का अंकन
- स्त्रियों द्वारा बनता है।

**आधुनिक युग**
- पुरुषों द्वारा भी बनने लगा
- दीवारों के अलावा कपड़े और कागज पर बनने लगा
- अलंकृत लकड़ी के पट्टों का प्रयोग
- अलंकृत मिट्टी के बर्तनों पर अलंकरण

## पाठांत प्रश्न

1. वर्ली चित्रों की चित्रांकन सम्बन्धी विशेषताएं बताओ।
2. वर्ली चित्रों के बनाए जाने वाले पालघट देवी के चौक का रेखांकन करें।
3. घोड़ा सवार पाँच सिरया देव एवं बाघ देव का चित्र बनाओ।
4. ताड़ी वृक्ष से ताड़ी उतारते वर्ली युवक का रेखांकन करो।

5. तारपा नृत्य करती वर्ली युवक-युवतियों की टोली का चित्र बनाओ।
6. घोड़ा सवार दुल्हा एवं बरातियों का चित्रांकन करो।
7. वर्ली चित्रों में चित्रित किए जाने वाले महत्वपूर्ण अभिप्रायों को संयोजित कर चित्र की रचना करो।

## शब्दकोष

| | | |
|---|---|---|
| भित्तिचित्र | : | दीवार पर बनाए जाने वाले चित्र |
| अनुष्ठानिक | : | पूजा विधियों से सम्बन्धित |
| बासिंग | : | वर-वधु द्वारा पहना जाने वाला मुकुट |
| कृषिकर्म | : | खेती से संबंधित कार्य |
| जीवका उपार्जन | : | रोजी कमाने का साधन |
| वेगवान | : | गतिशील |

# 3

# सांझी कला

शिक्षार्थी, पिछले पाठ में हमने वर्ली कला के विषय में जाना। इस पाठ में हम सांझी लोक कला के विषय में जानेंगे। सांझी कला सांझ अर्थात् संध्या को बनाई जाने वाली लोककला है। यह मूल रूप से राजस्थान, मध्यप्रदेश, हरियाणा, पंजाब, उत्तरप्रदेश, महाराष्ट्र और नेपाल तक प्रचलित है। विभिन्न जगहों में इसे विभिन्न नाम – सांझी, संझ्या, हंजा, हंझ्या, संध्या, संझा से जाना जाता है। संध्या अस्त होते सूर्य की पत्नी का नाम भी है। संध्या द्वारा निर्मित यह समय सूर्य के साथ-साथ सभी लोग के लिए सुख, आनंद एवं उल्लास का समय होता है।

कहा जाता है कि गोबर की सांझी का प्रारम्भ राजस्थान के अजमेर से हुआ। केले के पत्तों की सांझी राजस्थान के प्रख्यात तीर्थ नाथद्वारा के श्रीनाथजी मंदिर में सजाई जाती है। पानी पर रंग चूर्ण से बनाई जाने वाली सांझी उदयपुर के गोवर्धननाथ जी के मंदिर में बननी प्रारंभ हुई। तब से यह सांझी वहीं बनती आ रही है।

## उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने एवं अभ्यास करने के उपरान्त आप :

- सांझी चित्रण की परम्परा को समझा सकेंगे;
- गोबर से बनाई जाने वाली, केले के पत्तों से बनाई जाने वाली एवं पानी पर रंगीन चूर्ण डाल कर बनाई जाने वाली सांझी के बारे मे वर्णन कर सकेंगे;
- तीनों प्रकार से बनाई जाने वाली सांझियों की बनाने की विधियों का अंतर कर सकेंगे;
- विभिन्न प्रकार की सांझियों को बनाने में काम आने वाली सामग्री को पहचानेंगे;
- सांझी में बनाए जाने वाले अभिप्रायों की सूची तैयार कर सकेंगे।

## 3.1 समान्य परिचय

शिक्षार्थी, अब हम सांझी कला का सामान्य परिचय जानेंगे। गोबर की सांझी का कहीं सांझफूलनी तो कहीं सांझाफूली नाम भी सुनने को मिलता हैं, कोई इसका संबंध ब्रह्मा की मानसी कन्य संध्या से तो कोई देवी दुर्गा तथा पार्वती से जोड़ता है। संध्यादेवी तथा नौ देवी के रूप में भी इसकी मान्यता है। सांझी का संबंध कोई ब्रजदेवी राधिका से जोड़ते हैं। यह भी कहा जाता है कि कृष्ण ने राधिका को रिझाने के लिए संध्या की जो आकृति बनाई थी वही सांझी के नाम से विख्यात हो गई। ब्रज क्षेत्र में सांझी मंडन का भव्य उत्सव देखने को मिलता हैं वहां प्रत्येक राधा-कृष्ण मंदिर में सांझी के माध्यम से कृष्ण लीलाओं की एक से बढ़कर एक झांकियां और लीला देखने को आसपास ही नहीं दूरदराज के क्षेत्रों तक का अपार जनसमूह आता है।

गोबर की सांझी में बनने वाली विभिन्न आकृतियां या तो तिथि क्रम के अनुरूप अथवा तिथि की संख्या के अनुसार बनाई जाती हैं। दस दिनों तक बनने वाली सांझी के बाद कोट बनाया जाता है। कोट से तात्पर्य परकोटे से है जो सुरक्षा के लिए किसी भी गढ़, महल अथवा घर के चारों ओर बनाया जाता है। यह कोट सांझी के अंत तक बना रहता है ऐसा ही परकोटा अन्य सांझियों में भी बनाया जाता है जो उनकी खूबसूरती में चारचाँद लगा देता हैं। परकोट के मूल में नगर स्थापना या पुरविन्यास का कथानक जुड़ा हुआ है। इन सांझियों में कृष्ण की द्वारिकापुरी का प्रतीक रूप देखने को मिलता है।

## 3.2 पारम्परिक सांझी के अभिप्राय/मोटिफ

गोबर की सांझी में बनाई जाने वाली आकृतियों की सूची इस प्रकार है।

**एकम** : एक तारा, एक पछेटा, एक सूरज, एक जलेबी, एक खजूर, एक घेवर, एक फेणी, एक कलशी

**बीज** : बांदरवाल, दूज का चांद, बेलन-चकला, सांझी-सांझा, दो जनेऊ, दो मजिरा, झालर-डंका

**तीज** : तीन तिबारी, तारा मंडल, तीर-धनुष, तराजु-बाट, ताल-तलैया, तीरथधाम

**चौथ** : चौपड़, चरभर, चार चोर, चरखा, चकरी भंवरा, चांद तारे चींटा-चींटी

**पांचम** : पत्तल-दोने, पतंग, पान, पांच पछेटे, पाँच तारे, पाँच पांडव, पंखी, पाँच साथिए, पनवाड़ी

**छठ** : छाबड़ी, छड़ी, छहकली का फूल, छाछ-बिलोना

**सातम** : सात ऋषि, सातिया, सांझासवार, सरवर, सात सहेलियाँ

**आठम** : अठकली फूल, आंवला का झाड़, आम, आमली, अखरोट, आल

**नम** : नम, नीमड़ी, निसरणी, नल दमयंती, नौ डोकरे डोकरी, नाग-नागिन

**दसम** : दानपेटी, दस कोथली, दाल-बाटी, दवात-कलम

**ग्यारस से अमावस** : सांझी कोट

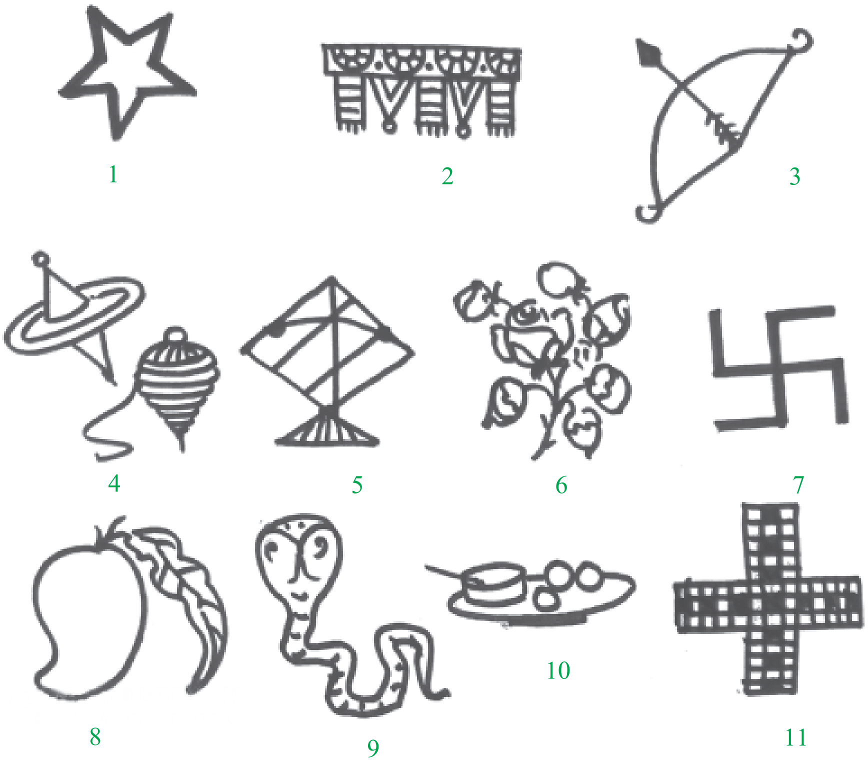


चित्र 3.1

## 3.3 सांझी बनाने हेतु आवश्यक साम्रगी

- 18" × 24" आकार का प्लाय बोर्ड अथवा हार्ड बोर्ड
- पानी भरने के लिए गोल अथवा आयताकार ट्रे।
- पोस्टर कलर
- विभिन्न रंगों की पन्निया अथवा कागज
- केले के पत्ते
- विभिन्न प्रकार के फूल-पत्ते
- महीन कपड़ा
- बांस की खपच्चिया
- कैंची
- पैंसिल
- स्केल
- फैवीकॉल
- सामान्य कागज

## 3.4 पारम्परिक विधि

अब हम सांझी का पारम्परिक विधि सीखेंगे। केले के पत्तों की सांझी में बनने वाली आकृतियां निम्नानुसार है।

पानी पर रंग चूर्ण से बनने वाली सांझी के लिए सर्वप्रथम समतल बर्तन लेकर उसमे पानी भर दिया जाता है फिर उसके दांये-बांये थोड़ी सी जगह छोड़कर बांस की खपच्चियाँ लगा दी जाती हैं। छूटी हुई जगह खाली रखकर खपच्चियों के बीच की जगह में सांझी बनाई जाती है। खपच्चियों के बाहर का भाग दर्शकों को दिखाने के लिए होता है। बर्तन हिलाने से पूरे बर्तन का पानी हिलने से सांझी भी झिलमिल करती हुई बड़ी सुन्दर लगती है। पहले पानी पर सफेद अथवा लाल पत्थर या राल का पाउडर और फिर कोयले का पाउडर भरभराया जाता है। फिर सांझी मांडने के लिए कागजी सांचा रखा जाता हैं, उस सांचे में मनचाहा रंग भुरकाया जाता है। ये रंग सूखे होते हैं जिन्हे चावल, कोयला, ईट, पीली मिट्टी, हल्के पत्थर आदि को कूट-पीस कर घर में ही तैयार कर लिया जाता है। अब सभी तरह के स्टोन कलर भी काम में लिये जाते हैं, जो बाजार में मिलते हैं।

रंग भुरकाने के लिए महीन कपड़े में रंग का चूर्ण लेकर उसे ऊंगली की सहायता से छानते हुए आवश्यकतानुसार सोचे में भरा जाता है। रंग भरने के बाद सांचा उठा लिया जाता है। कभी-कभी एक ही चित्र को दो-दो, तीन-तीन, चार-चार रंगों तक में सजाना पड़ता है। किसी विशेष चित्र को चमकीला एवं आकर्षक बनाने के लिए बादला छिड़का जाता है। पानी के ऊपर की तरह अन्दर भी इसी प्रकार की सांझी मांडी जाती है। ऐसी स्थिति में पहले खाली बर्तन में सांझी चितरा ली जाती है और फिर बड़ी सावधानी से उस पर पानी डाल दिया जाता है।

सांझी में कृष्ण ने ब्रज, गोकुल, वृंदावन, मथुरा और द्वारिका में जो लीलाएं की उनका दर्शन कराया जाता है। अधिकतर लीलाएं यमुना की साक्षी में हुई। इसलिए यमुना के कई दृश्य बड़े आकर्षक रूप में देखने को मिलते हैं। इस सांझी का कोई एक क्रम नहीं रहकर मनचाहे दृश्यों को दिखाया जाता है। मुख्य रूप से ये लीला दृश्य इस प्रकार हैं:

कमल के पत्ते पर विष्णु सोये हुए, उनकी नाभी से कमलनाल द्वारा ब्रह्माजी का अवतरण, गोकुल-मथुरा में कृष्ण जन्मोत्सव, दानलीलाओं मे गोपियों को सखाओं के साथ कृष्ण द्वारा रोकना, पहाड़ों के मध्य ब्रज के महल, पेड़-पौधे, कृष्ण द्वारा सखाओं के साथ गेंद खेलना, गेंद का यमुना में गिरना, कृष्ण द्वारा नाग दमन करना इत्यादि।

कोट के रूप में कंस के भव्य महल और उनके पास चांडुलजेठी नामक घमंडी पहलावन को पछाड़ते कृष्ण, यमुना नदी में रंगबिरंगी मछलियां, कछुए तथा मगरमच्छ क्रीडा करते हुए, दस हजार हाथियों के बल को समेटे कोईलिया पीर नामक हाथी के दांत खट्टे करते कृष्ण, विश्रामघाट जहाँ कृष्ण ने कंस को पछाड़ने के बाद विश्राम किया।

उल्लेखनीय है कि अब पूरे श्राद्धपक्ष में सांझीकला का चित्रबण बहुत कम देखने को मिलता है। अब सुविधानुसार ही कहीं सात दिन, कहीं दस दिन तो कहीं अनियमित सांझी बनाई जाती है। यही नहीं, अब बाजारों में भी इन सांझियों के चित्र मोटे कागज पर मिलने लग गए हैं। इन्हीं को खरीदकर बालिकाएं अपने घरों में सजाकर पूजा करती हैं।

टिप्पणियाँ

## प्रायोगिक अभ्यास 1

शिक्षार्थी, आपको सांझी की पारम्परिक विधि सीखनी है। अब हम चरणबद्ध तरीके से स्टेन्सील सांझी बनायेंगे।

स्टैंसिल सांझी ज्यादातर मथुरा बृन्दावन में बनाये जाते हैं। जिनमें राधा कृष्ण की रासलीला बांसुरी बजाते कृष्ण, पेड़ पौधे, फूल, गोपियां आदि प्रमुख हैं। आइये हम स्टैंसिल सांझी के चित्र बनाते सीखें।

**प्रथम चरण :** सबसे पहले आवश्यक सामग्री को इकट्ठा करते हैं। पहले हम स्टैंसिल बनाने के लिये 100-300 GSM का पेपर लेंगे जो स्टैंसिल बनाने के लिए उपयुक्त है। इसके साथ ही हम पेंसिल रबर, स्टैंसिल, नाइफ और बैक ग्राउण्ड के लिये रंगीन पेपर लेंगे। इसके बाद चित्र का चयन करेंगे। आप हाथों से भी बना सकते हैं या अन्य चित्र भी ले सकते हैं। यहाँ हमने कृष्ण का बांसुरी बजाते हुए चित्र का चयन किया है।

चित्र 3.2

**दूसरा चरण :** अब हम पेंसिल से स्टैंसिल पेपर पर कृष्ण के चित्र की स्कैच तैयार करेंगे। इसी के साि कहीं मोटे तो कहीं पतली लाइनों से डिजाइन बनायेंगे। अब कागज के कटने वाले हिस्से में रंग भरेंगे। इससे सुनिश्चित हो जायेगा कि आपको कौन सा भाग काटना है।

चित्र 3.3

**तीसरा चरण :** स्टैंसिल पूरा करने के बाद बारी आती है उन भागों को काटने की जहां आपने रंग भरा है। सावधानीपूर्वक उन भागों को नाइफ से काटें। सीधा लाइन के लिये स्टील स्केल का प्रयोग कर सकते हैं और घुमावदार कट्स के लिए पेपर को घुमा कर काटें। ग्लेज पेपर या मारबल पेपर उपयुक्त होते हैं। ध्यान रहे यह बारीकी से कटना चाहिए। कटाई करते वक्त धैर्य और सावधानी जरूरी है।

चित्र 3.4

**चौथा चरण :** आखिरी चरण में स्टैंसिल के पीछे बैक ग्राउण्ड पेपर लगाये और जो भी चाहे रंग चुन सकते हैं। हमने यहाँ लाल रंग के पेपर का प्रयोग किया है।

चित्र 3.5

## प्रायोगिक अभ्यास 2

अब हम एक और सांझी बनायेगे जो गाय के गोबर से बनती है।

गोबर सांझी पंजाब प्रान्त में बनाये जाते हैं। इस लोककला में गोबर से माता सांझी का चित्र बनाते हैं फिर महिलायें इनकी पूजा करती हैं। परम्परा अनुसार नवरात्रों में ही मां सांझी को बनाया जाता है।

**प्रथम चरण :** सबसे पहले हमें मिट्‌टी और गोबर एकत्र करना है। मिट्‌टी को पहले कूट कर फिर भिगो कर रखते हैं। इसके पश्चात अच्छी तरह गूंधते हैं। लोच तैयार की जाती है ताकि सूखने पर ये फटे नहीं। इसके बाद हाथों से लोई बना कर विभिन्न आकार में परिवर्तन करते हैं। माता को सजाने के लिये विभिन्न आकार तैयार करते है जैसे-हाथ, सूजर, चांद, आभूषण आदि। जैसा कि आप चित्र में देख रहे हैं।

चित्र 3.6

**दूसरा चरण :** जब यह सूख जाये तो इन आकृतियों में सजाने के लिये रंगों का प्रयोग करते हैं। ज्यादातर प्राकृतिक रंगों का प्रयोग होता है। परन्तु समय के अनुसार अब एक्रेलिक रंगों का भी प्रयोग होने लगा है।

चित्र 3.7

**तीसरा चरण:** तीसरे चरण में सभी अंगों को किसी लकड़ी में या दीवार में गोबर की सहायता से चिपका दें और फिर सूखने के लिये रख दें।

चित्र 3.8

**चौथा चरण :** अखिर में माता की मूर्ति को आप सजा दें। जैसे बिन्दी, चूड़ियों, आभूषण, आंख, कान के झूमके आदि को रंगों से भर दें। इस तरह सांझी माता की मूर्ति तैयार है।

चित्र 3.9

## प्रायोगिक अभ्यास 3

अब हम जल सांझी की विधि जानेंगे।

### जल सांझी बनाने की विधि

15वीं शताब्दी में इस कला की शुरूआत बृन्दावन में हुई। कहा जाता है कि राधा जी कृष्ण को मोहने के लिए रंग बिरंगे चित्र बनाती थी। ये कला विभिन्न माध्यमों में बनायी जाती है। उदयपुर, राजस्थान में जल सांझी लोकप्रिय है। आइये जल सांझी कैसे बनाई जाती है इसे समझते हैं।

**प्रथम चरण :** सर्वप्रथम और सबसे महत्वपूर्ण है कि यह बनाने के एक दिन पहले पानी को तैयार किया जाता है। साफ पानी को एक बड़े बर्तन में स्थिर करने के लिये रखते हैं फिर पानी के स्थिर होने के बाद पानी पर तैरने के लिए एक आधार रंग बनाते हैं। आधार रंग आमतौर पर सफेद होता है, जो शंख भस्म से तैयार होता है। काले रंग के लिए कोयला पाउडर का प्रयोग होता है। इसके बाद छननी से इसको धीरे-धीरे पानी में छिड़कते हैं। हल्के होने के कारण से तैरते हैं। थोड़ी देर बाद स्थिर हो कर एकसार हो जाते हैं। इस तरह एक आधार तैयार हो जाता है।

टिप्पणियाँ

चित्र 3.10

**दूसरा चरण :** इस पेंटिग को बनाने के लिए कोई विषय चुनते हैं। आमतौर पर पौराणिक कथाओं के आधार पर चित्रकारी होती है। यहां पर हमने हनुमान जी को संजीवनी बूटी पर्वत ले जाते दिखाया है। तो सबसे पहले हनुमान जी का चित्र बनाते हैं। फिर स्टैंसिल तैयार करके बारीकी से काटते हैं। स्टेंसिल्स के लिए पेपर कटर का इस्तेमाल करते हैं। इस तरह मुख्य चित्र तैयार करते हैं। आप हाथों से भी बना सकते हैं या कम्प्यूटर ग्राफिक के द्वारा भी बना सकते हैं।

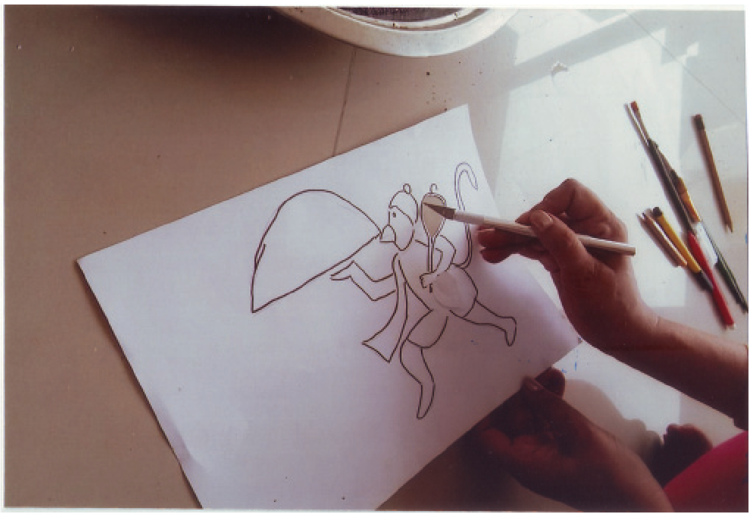

चित्र 3.11

**तीसरा चरण :** हनुमान जी का चित्र तैयार करके उसे धीरे से पानी में जहां आधार बनाकर रखा है उस पर रखते हैं। अब इनकी रंगों से सजावट करते हैं। रंगों के लिये प्राकृतिक रंगों या सिन्थेटिक रंगों का प्रयोग करते हैं। विभिन्न रंगों के गुलाल या अबीर से भी रंग बिरंगे डिजाइन बना सकते है। रंगों का चुनाव आप अपनी मर्जी से कर सकते हैं।

चित्र 3.12

**चौथा चरण :** रंगों को भरने के बाद आप धीरे से स्टेंसिल उठा दें। आप देखेंगे की जो रंग आपने स्टेंसिल में डाले थे वे बारीकी से उभर आते हैं। इसमें हनुमान जी की आकृति सफाई से दिख रही है रंग फैलते नहीं। पेड़, फूल आदि बनाने के लिये रंगोली की तरह इसे सजा सकते हैं। आप देखेंगे पानी में तैरते चित्र बेहद मनमोहक दिखाई देगें।

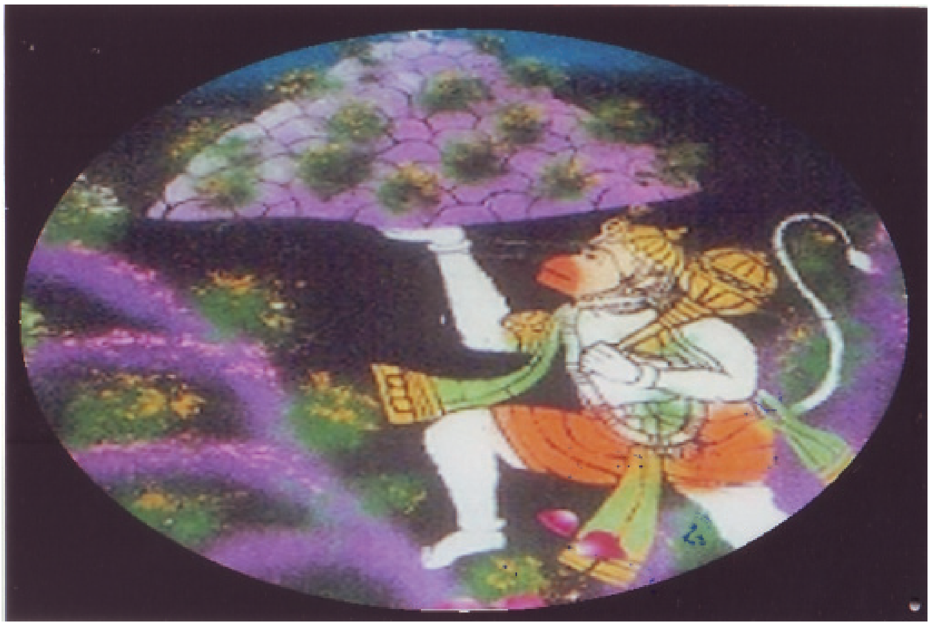

चित्र 3.13

## आपने क्या सीखा

**सांझी कला**

- केले के पत्ते की सांझी
  - मथुरा का विश्रामघाट (उदाहरण)
- गाय के गोबर की सांझी
  - बांसुरी बजाते कृष्ण (उदाहरण)
- स्टेंसिल सांझी
  - माता की आकृति (उदाहरण)

**पारम्परिक अभिप्रायों/मोटिफ्स का प्रयोग**

एकम, बीज, तीज, चातु, पंचम, छठ, सत्तम, अष्टम, नवम्, दसम्

## पाठांत प्रश्न

1. विद्यार्थी अपने घर की दीवार पर गोबर की विविध आकृतियां उभारकर उन्हें अलग-अलग रंगों के फूलों तथा पत्तियों से सजाएं।

2. केले के पत्तों को एकत्र कर कैंची की सहायता से मनचाही आकृतियां काटकर उन्हें जमीन पर सफेद कपड़ा बिछाकर संयोजित करें। ये आकृतियां कपड़े से अलग न हो पायें और अपनी चमक देती रहें इसके लिए उन पर थोड़ी-थोड़ी देर में पानी का छिड़काव करें।

3. पानी का छोटा सा बर्तन लेकर उस पर पाउडर भुरकाएं। फिर मोटे कागज पर सुई अथवा नुकीले चाकू द्वारा मनचाही आकृति का सांचा तैयार करें। इस सांचे को बड़ी सावधानी से पानी पर रखे। उसके बाद महीन कपड़े द्वारा मनचाहे रंग भर कर आकर्षक चित्र बनाए। सांचा उठाने के बाद देखेंगे तो सांझी पानी पर झिलमिलाती नजर आएगी।

### शब्दकोष

**गोहली** : सांझी बनाने का आधार। मिट्टी-गोबर के मिश्रण से बनाये गए लेप को दीवार पर कपड़े की सहायता से लीप दिया जाता हैं इसी को गोहली कहते हैं। सांझी इसी गोहली पर बनाई जाती है।

**पछेटा** : खेलने के लिए पत्थर के कंकड़

**मजीरा** : कटोरीनुमा आकृति लिए मजीरा पीतल, तांबा, कांसा, लाहा आदि मिश्र धातु से बनाया जाता है। गुंबज जैसी गोलाई का उभार लिए ऊपर बीच में छेद कर

टिप्पणियाँ

डोरा बांधा जाता है इसको पकड़ कर मजीरा बजाया जाता है। मजीरे दो होते हैं। इसके परस्पर आघात से ध्वनि निकलती है।

**झालर-डंका** : मंदिरों में आरती के समय बजाई जाने वाली झालर मिश्र धातु की मोटी परत लिए खड़ किनारों वाली छोटी थालीनुमा आकृति लिए होती है। इसके किनारे पर दो छेद कर डोरी पिरो दी जाती है। डोरी को अंगूठे से लटकाकर लकड़ी की जिस डंडी से इसके उल्टी तरफ मध्य भाग में आघात किया जाता है। वह डंका कहलाता है।

**चकरी-भंवरा** : लकड़ी की बनी फिरकनी तथा लट्टू।

**पत्तल-दोना** : भोजन करते समय थाली-कटोरा की जगह काम में लिये जाने वाली वस्तु। इसका निर्माण ढाक के पत्तें से होता है। पत्तल-दोने का उपयोग प्राय: सामूहिक भोज में किया जाता है।

**पनवाड़ी:**पान की खेती के लिए विशेष प्रकार का खेत। पनवाड़ी बाड़ी की तरह होती है। इसका निर्माण सण की डंडियों द्वारा किया जाता है जो खेत को तीनों ओर से ढके रखती है।

**कोथली** : छोटी थैली।

**वांदरवाल** : कपड़े की बनी थैलियों से निर्मित सजावट।

**चितराम** : चित्रराम का अर्थ चित्र बनाने से है। इसे बनाने वाला चितेरा कहलाता है।

**ताकड़ी-तोला** : ताकड़ी से तात्पर्य तराजू और तोला का अर्थ वस्तु को तोलने वाले बाट से है। तकड़ी के दो पलड़ों में से एक में तोली जाने वाली वस्तु तथा दूसरे में बाट रखे जाते हैं।

**चरभर** : एक प्रकार का खेल। इसे छोटे और बड़े सभी खेलते हैं। इसे खेलने के लिए पासे के रूप में इमली के दो बीज (कूंगचे) की फाड़ से बने चार पासे (चीबटें) होते हैं। यह कहीं भी खेला जा सकता है।

**फूलगरिये** : भगवान श्रीनाथजी के श्रृंगार के लिए फूल एकत्र करने वाले। ये माली जाति के होते हैं। अत: इन्हें फूलमाली भी कहते हैं।

**सिंघाड़ा** : जल का फल। यह कच्चा तथा पक्का दोने रूपों में खाया जाता है। इसके आटे से कई तरह के खाद्य पदार्थ बनते हैं जो व्रत-उपवास में बड़े उपयोगी होते हैं।

# 4

# पिथौरा

शिक्षार्थी, पिछले पाठ में हमने सांझी काल के विषय में जाना। इस पाठ में हम पिथौरा लोककला सीखेंगे। पिथौरा राजस्थान एवं गुजरात की भील जातियों द्वारा की जाने वाली एक पूजा अनुष्ठान से सम्बन्धित लोक कला है, जो घर की दिवारों पर चित्रित की जाती है।

पिथौरा, भीलों की चित्र परम्परा का एक पूजा अनुष्ठान से सम्बन्धित भित्तिचित्रण है, जिसमें 'पिथौरा बापदेव' के नाम से चित्र उकेरे जाते हैं। मनौती पूर्ण होने पर घर की भीतरी दीवार पर वर्ष में एक बार चित्र बनाकर पिथौरा की पूजा की जाती है, इस समारोह में पूरा घर परिवार और समाज इकट्ठा होता है।

पिथौरा भित्तिचित्र प्राय: पुरुष ही बनाते हैं, जिन्हे 'लिखन्दरा' कहा जाता है। पिथौरा लिखने का अधिकार सामज ने 'लिखन्दरा' को ही दिया है, दूसरा व्यक्ति पिथौरा चित्र को नहीं बना सकता।

## उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने एवं अभ्यास करने के उपरान्त आप :

- पिथौरा कला को वर्णन कर सकेंगे;
- पिथौरा के भित्तिचित्र कला परम्परा का वर्णन कर सकेंगे;
- पिथौरा चित्रशैलियों में अंतर कर सकेंगे;
- पिथौरा पेंन्टिग बनाना सीख पायेंगे।

## 4.1 सामान्य परिचय

पिथौरा भीलों की एक सम्पूर्ण चित्र गाथा है, जिसमें पिथौरा कुँवर के साथ इंदीराजा, काजल राणी, धर्मीराजा, हिमाला बेन आदि की कथा चित्रित की जाती है और गाई जाती है। पिथौरा में सबसे अधिक घोड़े बनाये जाते हैं, जिनकी पूजा की जाती है। भीलों का विश्वास है कि उनके देवता घोड़ों के रूप में उतरते हैं, जो पृथ्वीलोक से स्वर्गलोक तक जाते हैं और आते हैं।

पिथौरा भित्तिचित्र में भील-भिलाला जीवन की हर गतिविधि को स्थान दिया जाता है। खेत जोतता किसान, गाय-बछड़ा, बंदर, कुँआ-बावड़ी, दही बिलौती स्त्री, पनिहारिन, भिश्ती, ताड़ वृक्ष, ताड़ी उतारता आदमी, ऊँट, राजा, दसमुंड्या, साँप, बिच्छू, शेर, सूर्य-चन्द्र, बरगद, खजूर, मधुमक्खी का छत्ता, छिनालई, दुकान, रेल, मोटर, हवाई जहाज आदि अभिप्रायों का चित्रण किया जाता है।

पिथौरा चित्र बनाने में वनस्पति और मिट्टी के रंगों का उपयोग किया जाता है। काला रंग काजल से, हरा रंग बालोड़ के पत्तों से, सफेद खड़िया से, पीला हल्दी से, गेरूवा गेरू से, नीला नील से बनाये जाते हैं। आजकल नये रेडीमेड रंगों का भी प्रयोग किया जाता है।

पिथौरा बापजी भीलों के घर की पवित्र दीवार में विराजते हैं। भीलों का अटूट विश्वास है कि जहाँ पिथौरा कुँवर रहता है, वह घर-खेत धन-धान्य वैभव से भरा रहता है। घर में अदृश्य बुरी शक्तियों का भय नहीं रहता तथा घर में बीमारियाँ और बाहरी बाधाओं का प्रवेश नहीं होता। पिथौरा बापजी घर के रक्षक देवता हैं।

पिथौरा घर में नीचे का भाग धरती होता है और ऊपर का हिस्सा आसमान। आसमान में ही स्वर्ग के लिए भी जगह होती है। आसमान में देवता रहते हैं और नीचे धरती पर मनुष्य, प्रकृति, जीव-जन्तु, हवा-पानी रहते हैं। इसे जमी माता भी कहते हैं। जमी माता को चार खानों में बाँटकर दिखाया जाता है। चारों खानों में अलग-अलग रंग भरा जाता है, जो धरती के चार खण्ड पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण को दर्शाते हैं। देशी भाबर के घोड़े पिथौरा बापजी के घोड़ों के ठीक नीचे सफेद रंग से ही बनाये जाते हैं। देशी भाबर यानी ग्रामधणी देवता होते हैं, जिन पर गाँव की रक्षा का भार होता है। पिथौरा घर का रक्षक है और ग्रामधणी गाँव के रक्षक देवता हैं। ग्रामधणी के घोड़ों की लगाम भी हाली के हाथ में होती है। पिथौरा के घोड़ों के गले में 'घुघरमाल अथवा काठली' डाली जाती है।

## 4.2 पारम्परिक पिथौरा मोटिफ/अभिप्राय

छात्रों, आपको पारम्परिक पिथौरा अभिप्राय समझेंगे।

**पिथौरा बापजी :** यह मुख्य देवता हैं, इसलिए उनके दो सफेद घोड़े आमने-सामने बनाये जाते हैं, बीच में लगाम पकड़े 'हाली' होता है, जिसे बंडी, पगड़ी और जूता पहनाया जाता है। दोनों घोड़ों को काठीयुक्त बनाया जाता है, उस पर सवार नहीं बनाये जाते हैं। इन घोड़ों को 'शोभावर' से सजाया जाता है 'शोभावर' घोड़े के आसपास रंगीन बिन्दुओं की कतारें होती हैं।

पिथौरा घर के दरवाजे के ऊपरी भाग में चाँद-सूरज, तारे बनाये जाते हैं। सूरज गोल आकृति में चकरी की तरह निकली किरणों के साथ बनाया जाता है। समीप में ही अर्धचन्द्र बनाया जाता है। सूर्य-चन्द्र के आसपास बिन्दियों के माध्यम से तारे बनाये जाते हैं।

**राणी काजल :** घोड़ी बछड़े सहित बनायी जाती है। इसे सिन्दूरी रंग से बनाया जाता है। इसे बायीं तरफ बिना काठी और सजावट के बनाया जाता है। राणी काजल की घोड़ी और बछड़ी मातृशक्तियों का प्रतिनिधित्व करती हैं।

**हाथरजा कुँवर :** यह जंगल का देवता है। आदिवासी पेड़-पौधों, नदी-पहाड़, जंगल आदि में अपने देवी-देवताओं का वास मानते हैं, जो जंगल में उनकी रक्षा करता है।

**बारामाथ्या :** ऐसा जीव जिसके बारह माथे यानी सिर हों। पिथौरा के दायें कोने में प्राय: इसकी जगह होती है। चौड़े स्कन्ध पर पतली सींक से लकीरों की तरह बारह सिरर बनाये जाते हैं। उसके हाथों में नाग या लाठी जैसी कोई चीज दे देते हैं। इसे प्राय: सफेद रंग से बनाया जाता है।

चित्र 4.1: परम्परिक पिथौरा अभिप्राय

**मेघनी घोड़ी :** यह स्वरूप अद्‌भुत होता है। उसके दो मुँह होते हैं, उसका रंग सफेद होता है। एक मुँह से वह खाती है, दूसरे से वह मेघ राजा से बात करती है और उसकी ओर देखती है, इसकी पीठ पर काठी नहीं होती। यह जल बरसाने वाली घोड़ी है।

**शेर :** शेर की आकृति प्राय: पिथौरा द्वारा के ऊपर बनायी जाती है। कहीं एक या कहीं दो शेर बनाये जाते हैं।

**हाथी :** पिथौरा में **हाथी** बनाने का रिवाज वैभव का प्रतीक है। हाथी नीले या काले रंग से बनाया जाता है। हाथी का अंकन प्राय: पिथौरा द्वार के आस-पास किया जाता है। कहीं हाथी पर पालकी अथवा हौदा भी बनाया जाता है।

**भील महिला :** सिर पर घड़े लिये **भील महिलाओं** के चित्रण में भील वेषभूषा का ध्यान रखा जाता हैं जिस रंग के कपड़े प्राय: भील स्त्रियाँ पहनती हैं, उन्हीं रंगों का प्रयोग लिखन्दरा करता है। ये पनिहारिनें देवताओं के लिये पानी लाने वाली होती हैं।

**कुआँ, बावड़ी :** पनिहारिनों के समीप ही पिथौरा में बावड़ी, कुएँ का अंकन होता है। कुँआ-बावड़ी के समीप साँप-बिच्छू, मेंढक, छिपकली, भिश्ती (कावड़्या) पानी भरने वाले का चित्रांकन किया

जाता है। भिश्ती के कंधे पर कावड़ होती है, उसे कावड़्या भी कहते हैं। भिश्ती सफेद रंग से बनाया जाता है।

**वाँदरा :** यानि बंदर पिथौरा में ये दायें कोने में ऊपर, चार-पाँच की संख्या में कतारबद्ध दिखाये जाते हैं। बंदर काले, सफेद और लाल रंग से बनाये जाते हैं।

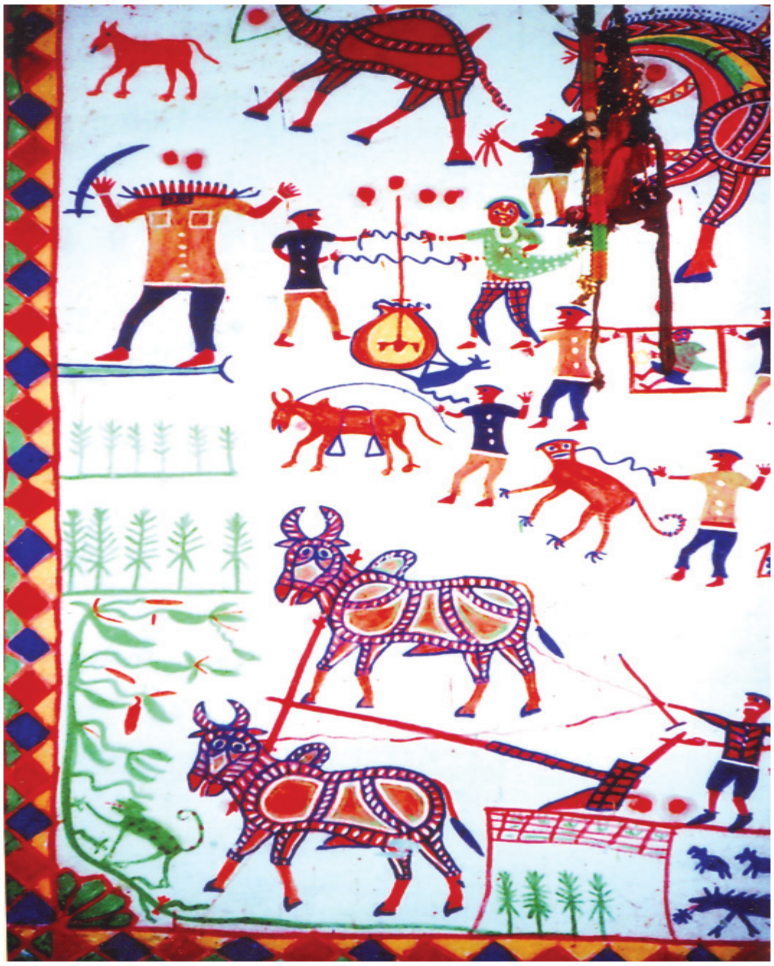

चित्र 4.2: पारम्परिक पिथौरा मोटिफ

**तोता पोपट :** ये प्रेम का प्रतीक है। पिथौरा में उसी की अभिव्यक्ति पिंजरे में पोपट की होती है। पिंजरा सफेद या काले रंग से बनाया जाता है और उसमें पोपट हरे रंग से दिखाते हैं। इसके साथ ही मोर और चिडिया अनिवार्य रूप से बनाये जाते हैं। मुर्गा-मुर्गी, बगुला, चील, कौआ आदि बनाये जाते हैं। मोर नीले रंग से बनाया जाता है, तितली, भौंरा आदि भी चित्रित होते हैं। गिद्ध, उल्लू पास-पास बनाये जाते हैं।

घोड़ा, हाथी, बैल, सिंह, बंदर पिठौर में अनिवार्य रूप से बनाये जाते हैं, इनके साथ ही ऊँट, हिरण, बिल्ली, कुत्ता, गधा, उल्लू, खरगोश, रीछ, बकरी, गाय, भैंस, साँड, बारहसिंगा आदि बनाये जाते हैं। यह चित्रण मनुष्य से पशुओं के संबंधों को व्यक्त करता है। परस्पर निर्भरता का भी द्योतक हैं।

## पिथौरा

पिथौरा में चींटी से लेकर मधुमक्खी तक जगह पाती है। छिपकली, गिरगिट, मकड़ी, कछुआ, मछली, मगर आदि पिथौरा में कहीं न कहीं अपनी गतिविधियों के साथ दिखाई देते हैं।

**ताड़ वृक्ष :** प्रकृति की ऐसी अद्भुत देन हैं जिससे उतारी गई ताड़ी भीलों के लिए जीवन का आनंद बन गई है। इसलिए उसे भी पिथौरा में दिखाया जाता है। ताड़ और खजूर का पेड़ हरे या नीले रंग से बनाये जाते हैं।

चित्र 4.3: पारम्परिक पिथौरा मोटिफ/अभिप्राय

टिप्पणियाँ



पिथौरा में बायीं तरफ किसान, हल-बैल बनाये जाते हैं, वह खेती का द्योतक है।

पिथौरा में दो शिकारी लकड़ी पर शेर (भण्डोरिया) की लाश को औधा टाँगे, जंगल से लाने का दृश्य, किसी गुहा चित्र का प्रमाण प्रस्तुत करता है।

सुपड़ कन्या का अर्थ है वह स्त्री जिसके सूपड़े जैसे बहुत लम्बे कान हों। 'एक टांग्या' गाँव के अपंग लोगों का प्रतिनिधित्व करता है।

प्रत्येक गाँव में गायों के प्रजनन के लिये एक साँड को छोड़ा जाता है, जिसे 'हाण्डया साँड' कहा जाता है। साँड की आकृति पिथौरा में धरती वाले हिस्से मे बनाई जाती है।

पिथौरा घर के बाहर भी कई चित्र देखने को मिलते हैं। पिथौरा के आसपास बची हुई दीवार पर नव सीखिया लिखन्दरा या अन्य शौकिन लोग चित्र बनाते हैं, जिनमें पशु-पक्षी, पेड़-पौधे आदि के रेखांकन होते हैं।

## 4.3 पथौरा चित्र बनाने हेतु आवश्यक सामग्री

- ड्राइंग बोर्ड
- ड्राइंग पिन
- पेंसिल
- रबर
- स्केल
- ड्राइंग शीट या मारकीन कपड़ा
- 1,3,7 नम्बर के गोल मुलायम ब्रश
- पोस्टर कलर
- प्लास्टिक का छोटा भाग
- कलर प्लेट

### प्रयोग में आने वाली सामग्री

पिथौरा के मूल रंग लाल, सफेद, सिन्दूरी, काला, हरा, पीला और नीला है। ये सारे रंग देशज होते हैं। खासकर मिट्टी रंगों का प्रयोग किया जाता है। लिखन्दरा और उसके साथी पत्तों से बने दोनों अथवा कटोरियों में रंग तैयार करते हैं। बाँस की खपच्चियों पर रूई लपेटकर कूँची (ब्रश) बना लेते हैं। आजकल पोस्टर अथवा एक्रेलिक कलर और ब्रश का चलन हो गया है।

खड़िया से सफेद, काजल से काला, बालोड़ (सेम) के पत्तों से हरा, पेवड़ी से पीला, नील से नीला, गेरू से लाल-गेरूवा से प्राप्त किया जाता है। सिन्दूर को तेल या घी में घोला जाता है, शेष रंग पानी में घोले जाते हैं रंग पक्के करने के लिए गोंद या फेवीकोल का पानी मिलाया जाता है। इससे दीवार पर बनाये गये चित्र बहुत दिनों तक चमकीले और सुरक्षित टिके रहते हैं।

## 4.4 पारम्परिक विधि

अब आप पिथौरा कला की पारम्परिक विधि का ज्ञान प्राप्त करेंगे।

### चित्रण के लिए पृष्ठभूमि तैयार करना

परम्परा से पिथौरा चित्रित करने का स्थान घर के भीतर की मध्य दीवार होती है। इस दीवार पर पिथौरा चित्र सुरक्षित और अखंडित रहता है। इस दीवार की लम्बाई 15-20 फीट और ऊँचाई 5-8 फीट होती है। इसे महिलाएँ गोबर, गेरू और पीली मिट्‌टी से पहले ही लीप-पोतकर तैयार रखती हैं।

### पिथौरा से घर या चौखट चित्रित करना

पिथौरा की चौखट बनाने के पूर्व उसकी सही नाप-जोख कर ली जाती है। सही नाप-जोख से पिथौरा का घर आड़ा-टेढ़ा नहीं बनता। नाप-जोख के बाद सूत या सुतली से चारों ओर चूने अथवा गेरू से दोहरी लाइनें बना ली जाती हैं, जिसमें पिथौरा की बार्डर या मगजी बनायी जाती है। नीचे की बार्डर में एक खुला दरवाजा बनाया जाता है, जो घर का मुख्य द्वारा होता है।

चौखट सफेद खड़िया से दो समान्तर रेखाओं से बनाई जाता है। लाल, पीले, नीले, सफेद आदि रंगों के त्रिभुजों अथवा पत्तों की बेल से उसे सजाया जाता है। चौखटे की लाइनें लाल, काली, नीली, और सफेद हो सकती है। बार्डर की लाइनों के मध्य में काँटा, सकरपारा, सिंघाड़ा, फूल, पत्ते लहरिया आदि से अलंकरण किया जाता है।

### पिथौरा चित्र में बनाए जाने वाले विभिन्न चरित्रों का चित्रण

पिथौरा भित्तिचित्र की शुरूआत सबसे पहले हुक्का पीते गणेश के चित्र से होती है। उन्हें आह्वान करके चौखटे की बायीं ओर बार्डर से कुछ अन्दर पर हुक्का पीते बनाया जाता हैं। पिथौरा में हुक्का पीते गणेश को काले रंग से बनाया जाता है।

काठिया घोड़े की पीठ पर काठी कसी होती है, इसलिए वह 'काठिया घोड़ा' कहलाता है। उस पर सवार बैठाया जाता है। उसके आगे तीन-चार बन्दूकधारी आगे-आगे चलते हुए बनाये जाते हैं। काठी कसे घोड़े पर सवार 'काठिया कुँवर' कहलाता है। यह आमंत्रण के लिए निकला घोड़ा होता है, जो सभी देवी और देवताओं को पिथौरा समारोह में शामिल होने के लिए आमंत्रण देने जाता है।

## प्रायोगिक अभ्यास 1

ड्राइंग शीट पर भील आदिवासियों द्वारा बनाए जाने वाले पिथौरा चित्र का अनुसरण करते हुए चित्रांकन।

- सर्वप्रथम भील आदिवासियों द्वारा बनाए पिथौरा चित्र को ध्यान से देखें, उसमें बनी आकृतियों को पहचाने एवं चित्रांकन का प्रारूप समझें।

टिप्पणियाँ



- अब इस मूल चित्र का ध्यान रखते हुए आप उसे किस प्रकार चित्रांकित करेंगे इसका विचार मन में करें एवं उन चरित्रों की बनावट को समझें।
- ड्राइंग शीट 14" × 20" माप का कागज लें। इस पर पेंसिल एवं स्केल की सहायता से, चारों ओर एक इंच स्थान छोड़ते हुए लाइन खींचे। इस प्रकार 12" × 18" का एक आयताकार बन जाएगा।

चित्र 4.4

- अब इस आयताकार में कोई हल्का रंग जैसे पीला या भूरा रंग, ब्रश की सहायता से भर लें। रंग को कागज या कपड़े पर ऊपर से नीचे की ओर भरते हुए आगे बढ़े। प्रयास करें कि रंग सपाट और एकसार भरा जाए, उसमें धब्बे न बनें। अब इसे सूखने दें।
- रेखांकित की गई चौखट में कोई ज्यामितिक या फूल-पत्तियों की बेल से बार्डर बना लें।
- इस प्रकार आप कागज या कपड़े पर चित्रांकन करने हेतु पृष्ठभूमि तैयार कर सकते हैं।
- अब आपने पहले ही जो पृष्ठभूमि चित्रित कर रखी है उसपर पहले पिथौरा का घर या चौखट रेखांकित कर लें।

चित्र 4.5

टिप्पणियाँ

- इसके उपरान्त इस चौखट के अन्दर जो चरित्र आप चित्रित करना चाहते हैं उनके स्थान और हल्के आकार पेंसिल से बनाएं।

चित्र 4.6

- अब प्रत्येक चरित्र की आकृति को स्पष्ट रूप से रेखांकित करें।
- इसके बाद तीन नम्बर के ब्रुश से प्रत्येक आकृति में अपनी पसंद के अनुसार सपाट रंग भरें।
- अब एक नम्बर के ब्रुश की सहायता से विभिन्न आकृतियों के विवरण चित्रित करें तथा चमकदार रंगों की बुन्दकियां लगाकर उनकी सज्जा करें।
- चित्रित घोड़ों की आकृतियों को अन्य आकृतियों से बड़ा बनाए एवं उन्हें अधिक सजाएं।

चित्र 4.7

- अब आपका पिथौरा चित्र बनकर तैयार है।

टिप्पणियाँ



## प्रायोगिक अभ्यास 2

यह आपका दूसरा अभ्यास है। इस पिथौरा चित्र का विषय भील लोगों का दैनिक जीवन है।

- भील लोगों के जीवन से संबंधित पाँच मोटिफ/अभिप्राय चुनें। सर्वप्रथम पारम्परिक पिथौरा चित्र का ध्यान से अध्ययन करें और उन पांच अभिप्रायों को चुने, जिन्हें आप चित्रित करना चाहते हैं।

चित्र 4.8

- अब आप पहले से तैयार कर रखी पृष्टभूमि पर पिथौरा के घर की चौखट अथवा मगजी का रेखांकन करें।

  सबसे पहले चौखटे को सफेद रंग से तुलिका के माध्यम रंग करे। चौखटे के चारो तरफ त्रिभुज आकृति तथा उसमें ऊपर तीन पत्तियों का कंगुरे बनाते हुए रंग भरें। चौखट के अंदर भी सफेद लाल तथा काले रंग की कोणीय रेखाआं से सजाया गया है।

- अब इस चौखट के बाहर चुने हुए पाँच चरित्रों को किस प्रकार संयोजित करना है उसकी कल्पना करें एवं हल्का रेखांकन करें।

चित्र 4.9

- चित्र संयोजन निर्धारित करने के बाद प्रत्येक चरित्र का स्पष्ट एवं सुघढ़ रेखांकन कर लें।
- अब ब्रुश की सहायता से चरित्रों में आरंभिक सपाट रंग भरें एवं चौखट में बने अलकरणों में भी रंग भरें।
- तदुपरान्त एक नम्बर के ब्रुश की सहायता से प्रत्येक चरित्र के विवरण चित्रित करें एवं चित्र को पूर्ण करें।
- रंग पूरी सफाई से भरें दाग-धब्बे न लगनें दें।

चित्र 4.10

- अब आपका पिथौरा चित्र तैयार है।

## आपने क्या सीखा

पिथौरा चित्र →

- भीलों की पारम्परिक कला
- दिवारों पर बनती है
- पिथौरा बनाने वालों को लिखन्दर कहते हैं
- लिखन्दरों को हर घर में सम्मान से बुलाया जाता है
- इंदीराजा, काजल रानी, धर्मी मुख्य विषय हैं
- पिथौरा भित्ति चित्रों में घोड़े देव स्वरूप माने जाते हैं
- घर की बुरी शक्तियों और जीवों से बचाते हैं

टिप्पणियाँ

## पाठांत प्रश्न

1. दो लाइनों के माध्यम से पिथौरा घर बनाये।
2. चौखट की बायीं ओर नीचे काले रंग से हुक्का पीते गणेश बनायें।
3. काठिया घोड़ा बायें कोने के सिरे पर बनायें।
4. मध्य में सफेद रंग से दो घोड़ें बनाएं, जिनके मुँह आमने-सामने हों। बीच में एक आदमी की आकृति लगाम पकड़े हुए बनायें।
5. दरवाजे के ऊपर चाँद-सूरज, तारे बनायें।
6. इसके पश्चात् राणी काजल की घोड़ी, हाथरजा कुँवर का घोड़ा, मेघनी घोड़ी, शेष अन्य पशु-पक्षी, कीड़े-मकोड़े, सर्प-बिच्छू, पेड़-पौधे, पनिहारिन, खेत जोतता किसान, बन्दर आदि पारम्परिक आकृतियाँ बनाकर पिथौरा भित्तिचित्र को पूर्णता प्रदान करें।

### शब्दकोष

| | | |
|---|---|---|
| पिथौरा | – | भील जनजाति से सम्बन्धित एक पारम्परिक अनुष्ठानिक भित्तिचित्र। |
| पिथौरा बापदेव | – | भील जनजाति का एक रक्षक देवता। |
| पिथौरा कुँवर | – | राजा का पुत्र होने के कारण उसे कुँवर (राजकुमार) की उपाधि से संबोधित किया गया। |
| लिखन्दरा | – | पिथौरा लिखने वाले व्यक्ति को परम्परा में 'लिखन्दरा कहा जाता है। |
| पिथौरा घर | – | पिथौरा घर दीवार पर बनी चौखट होती है। उसी घर में पिथौरा और अन्य देवी-देवताओं का वास होता है। |
| बाहरी बलाएँ | – | भूत-प्रेत, बीमारियाँ, महामारी, पराशक्तियों का प्रकोप आदि |
| बालोड़ | – | सेम की फली |
| पेवड़ी | – | पीला मिट्टी रंग। |
| देसी भाबर | – | ग्राम स्वामी देवता। |
| राणी काजल | – | वर्षा की देवी। |
| मेघनी घोड़ी | – | बादल देवता के नाम की घोड़ी। |
| राखी बहना घोड़ी | – | रक्षा बंधन पर्व पर राखी बाँधने वाली बहन के नाम की घोड़ी। |

टिप्पणियाँ

| | | |
|---|---|---|
| दिवाली बहना घोड़ी | – | दिवाली बहन नाम की घोड़ी। |
| इन्दी राजा | – | राजा इन्द्र |
| चितकबर्‍या | – | चिकबरा। जिसके शरीर पर काले, सफेद, लाल, छींटें हों। |
| नाप-जोख | – | माप अनुपात |
| किमची | – | बाँस की पतली पट्टी। |
| अनि | – | लोहे की तीर की नोक। |
| टिपका | – | बिन्दू। |
| पनिहारिन | – | सिर पर पानी का बर्तन लिए स्त्री |
| धारणी धरती | – | धरती। |
| कूँची | – | ब्रश। |
| दोना | – | पत्तों से बना प्याला। |
| हुक्का गणेश | – | हुक्का पीते गणेश। |
| काठिया घोड़ा | – | काठी यानी जीन कसा घोड़ा। |
| हाली | – | घोड़ा हाँकने वाला |
| शोभावर | – | अलंकरण, सजावट। |
| घोषण पत्र | – | जो होने वाला है |
| जमी माता | – | धरती माता |
| दसमुंडया | – | दस सिर वाला |
| खड़िया | – | चुना |
| बारामाथ्या | – | बारह सिर वाला पुरुष। |
| कावड्या | – | भिश्ती, पानी भरने वाला |
| वाँदरा | – | बन्दर |
| सिंदूर | – | लाल सिंदूर |
| पोपट | – | तोता |
| बाहरा | – | उल्लू |

टिप्पणियाँ

| | | |
|---|---|---|
| ताड़ | - | एक प्रकार का वृक्ष |
| ताड़ी | - | ताड़ से ताड़ी निकाली जाती है। जो भीलों का प्रिय पेय है। |
| कण्डी | - | बाँस की टोकनी। |
| सूपड़ कन्या | - | जिस स्त्री के सूपड़े की तरह बड़े-बड़े कान हों। |
| एक टांग्या | - | लंगड़ा, एक टाँग वाला। |
| हाण्डया साँड | - | बैल जो प्रजनन के योग्य हो। |
| दारू | - | महुआ से बना पेय। जो भीलों के अनुष्ठान पूजा का एक अनिवार्य अंग है। |
| ढाँक | - | एक ताल वाद्य। |
| बड़वा | - | औझा-गुनिया जिसके अंग में देवता उतरते हैं। |

## मॉड्यूल 4: जमीन पर बनने वाले चित्र

5. रंगोली
6. अल्पना
7. कोलम (केरल में कलम)
8. मंडना

# 5

# रंगोली

प्रिय शिक्षार्थी, पिछले पाठ में आपने पिथौरा कला के बारे में सीखा। इस पाठ में आप रंगोली लोक कला के बारे में जानेंगे। रंगोली महाराष्ट्र की एक प्राचीन कला है जो सदियों से प्रसिद्ध है। रंगोली शब्द का अर्थ रंगों की पंक्ति है। रंगोली बनाने की कला आम तौर पर भारतीय परंपरा का पालन करने वाली अनूठी हस्तकला है। महिलाओं और लड़कियों द्वारा अपनी उंगलियों का उपयोग करके फर्श पर रंगोली बनाई जाती है। रंगोली डिजाइन बनाने का हर समुदाय का अपना तरीका होता है। कुछ उज्ज्वल और रंगीन हैं, जबकि कुछ सरल और सुरुचिपूर्ण हैं। रंगोली सभी पारंपरिक अनुष्ठानों और समारोहों के लिए बनाई जाती है क्योंकि यह भारतीय परिवारों में एक महत्वपूर्ण स्थान रखती है। इसका उपयोग धार्मिक और सांस्कृतिक विश्वास के प्रतीक के रूप में किया जाता है। इसे आमतौर पर आत्मा की शुद्धि और समृद्धि की आध्यात्मिक प्रक्रिया के एक महत्वपूर्ण भाग के रूप में जाना जाता है। पवित्र त्योहार और पारिवारिक अवसर रंगोली बनाने की कला को प्रेरित करते हैं। महिलाएं घर के हर कमरे और आंगन के प्रवेश द्वार पर रंगोली बना सकती हैं। यह आत्मा का एक मूल प्रतीक है जो कभी खत्म नहीं होता। रंगोली आमतौर पर स्वस्तिक, कमल के फूल, लक्ष्मी के कदम (पेगाली) आदि जैसे चिह्नों के साथ बनाई जाती है। उन्हें समृद्धि का प्रतीक माना जाता है। महाराष्ट्र में कई परिवार रोज सुबह रंगोली बनाते हैं। रंगोली उनके दैनिक जीवन में खुशी का प्रतीक है।

## उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने एवं अभ्यास करने के बाद, आप:

- रंगोली को एक कला रूप के रूप में समझा सकेंगे;
- रंगोली की पृष्ठभूमि और महत्व का वर्णन कर सकेंगे;
- भारत के विभिन्न क्षेत्रों में जमीन पर बनने वाले चित्र (फ्लोर पेंटिंग) के विभिन्न नामों की पहचान कर सकेंगे;
- रंगोली में प्रयुक्त मीडिया और सामग्री को वर्गीकृत कर सकेंगे;
- धार्मिक अनुष्ठानों और संस्कारों से जुड़े विभिन्न रूपों की पहचान सकेंगे।

टिप्पणियाँ



## 5.1 सामान्य विवरण

रंगोली सिर्फ सजावट का माध्यम नहीं है, बल्कि यह नकारात्मक ऊर्जा को कम करती है और उस जगह पर सकारात्मकता जोड़ती है जहां बनाई जाती है। रंगोली बनाना प्राचीन प्रतीकों को एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पहुँचाने का एक तरीका है, इस प्रकार ये कला और परंपरा दोनों को जीवित रखता है। रंगोली कला महाराष्ट्र में फर्श पर एक प्रकार की सजावट है। भारत के अलग-अलग हिस्सों/प्रांतों में जमीन की सजावट और पेंटिंग के अलग-अलग नाम हैं। उदाहरण के लिए उत्तर प्रदेश में इसे चौक पूर्णा कहते हैं। राजस्थान में मंदाना, बिहार में अरिपन, बंगाल में अल्पना, कर्नाटक में रंगावल्ली, तमिलनाडु में कोल्लम, आंध्र प्रदेश में मुग्गू, केरल में अलीखथप और कोलम तथा गुजरात में सत्थियाओ।

## 5.2 पारंपरिक रूप और प्रतीक

शिक्षार्थी, आपको पहले प्रमुख रूपों और प्रतीकों को सीखना चाहिए, जिनका उपयोग रंगोली बनाने में किया जाता है। प्रमुख प्रतीक कमल का फूल, पत्ते, आम, फूलदान, मछली और विभिन्न प्रकार के पक्षी, तोता, हंस, मोर, मानव और आकृतियाँ हैं। मुक्तहस्त रंगोली की छवि सीधे जमीन पर बनाई जाती है। रंगोली बनाने में इस्तेमाल होने वाली सामग्री हर जगह आसानी से मिल जाती है। इसलिए यह कला अमीर या गरीब से नहीं जुड़ी है बल्कि सभी घरों में प्रचलित है। आमतौर पर रंगोली बनाने के लिए मुख्य सामग्री चावल का घोल, पत्तियों के रंग से बना एक सूखा पाउडर, लकड़ी का कोयला, जली हुई मिट्टी, लकड़ी का चूरा आदि होता है, इनका उपयोग मुख्य रूप से दानेदार चावल या सूखे आटे के साथ सूखा या गीला किया जाता है। इसमें सिंदूर, हल्दी, और अन्य प्राकृतिक रंग भी मिला सकते हैं। रासायनिक रंग एक आधुनिक बदलाव हैं। अन्य सामग्रियों में रेत और यहां तक कि फूल और पंखुड़ियां भी शामिल हैं, जैसा कि फ्लावर रंगोली के मामले में होता है।

1. **मोर** : यह सबसे रंगीन पक्षी है जो कलाकारों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करता है। यह सुंदरता और लय का प्रतीक है।
2. **ज्यामितीय आकार** : सभी डिजाइन और रूप ज्यामिति पर आधारित होते हैं। त्रिभुज वर्ग और वृत्त भी आध्यात्मिक शक्ति का प्रतीकात्मक प्रतिनिधित्व करते हैं।
3. **कमल** : यह न केवल एक रूप का सबसे संतुलित उदाहरण है, बल्कि हिंदू प्रतिमा में शुद्धता और पूर्णता का भी प्रतीक है।
4. **बर्तन** : बर्तनों का इस्तेमाल समशद्धि के प्रतीक के रूप में किया जाता है। लक्ष्मी देवी अपनी प्रतीकात्मक प्रस्तुतियों में सोने के सिक्कों से भरा एक बर्तन रखती हैं।
5. **तोता** : यह पक्षी प्रेम का प्रतीक है, जिसका प्रयोग अक्सर भारतीय मूर्तिकला में किया जाता है।
6. **दीपक** : भारतीय कला में इस आकृति का विपुल उपयोग है। दीपक ज्ञान, मोक्ष और प्रेम का प्रतीक प्रस्तुत करता है। इससे घर में सकारात्मक ऊर्जा आती है।

7. **पत्तियां :** पत्तियां इतनी विविध रूप से उपयोग की जाती हैं कि कलाकार उनमें से कई डिजाइन बना सकते हैं। पत्तियां यौवन, दीर्घायु और ताजगी, वृद्धि और उर्वरता का भी प्रतीक हैं।

8. **आम :** यह फल दुनिया के सबसे स्वादिष्ट फलों में से एक है। यह सुंदर आकार और हरे, पीले और लाल रंग के विभिन्न रंगों में आता है। आम की आकृति भारतीय कलाकारों की पसंदीदा डिजाइन है और प्रेम और धन का प्रतीक है।

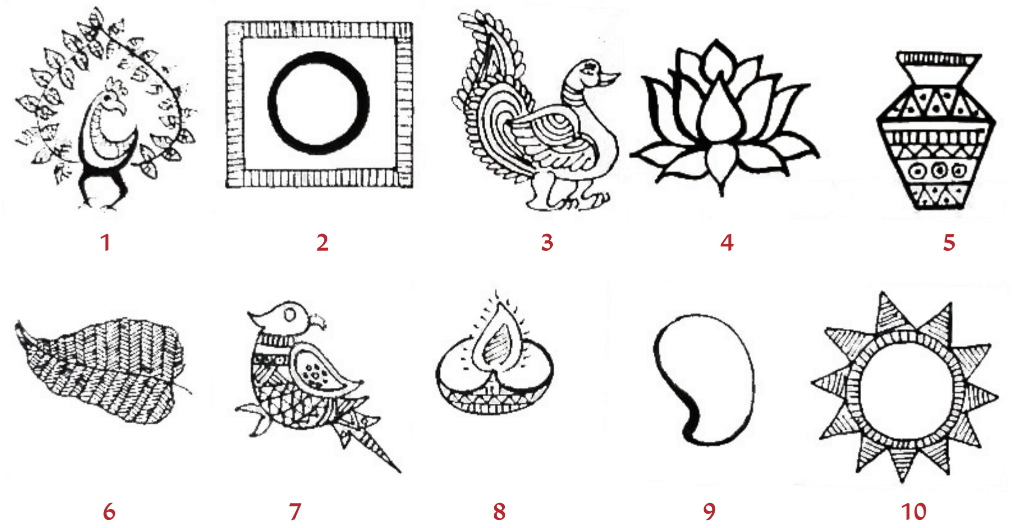


चित्र 5.1: पारंपरिक प्रतीक

9. **हंस :** हंस ज्ञान की देवी सरस्वती का वाहन है। हंस की सुंदर लयबद्ध आकृति का उपयोग अक्सर भारतीय कलाकारों द्वारा चित्रकला में किया जाता है। इसी कारण से रंगोली में भी आकृति का प्रयोग किया जाता है।

10. **सूर्य :** रंगोली में सूर्य की वृत्ताकार आकृति का प्रयोग किया जाता है। इसे वृत्त के चारों ओर सीधी रेखाओं में किरणों के साथ एक वृत्त के रूप में प्रस्तुत किया जाता है। सूर्य हमारी पृथ्वी का जीवन स्रोत है और अक्सर इसे एक देवता के रूप में पूजा जाता है।

शिक्षार्थी, आप रंगोली डिजाइन तैयार करने के लिए उपयोग किए जाने वाले रूपांकनों और मूल डिजाइनों को कॉपी करने का प्रयास कर सकते हैं।

## 5.3 रंगोली के लिए आवश्यक सामग्री

- एक ड्राइंग बोर्ड या हैंड बोर्ड
- ड्राइंग पेपर (रंगोली और विभिन्न रूपांकनों को डिजाइन करने के लिए)
- ड्राइंग पिन
- पेंसिल
- इरेजर

टिप्पणियाँ



- रंग (पृथ्वी का रंग जैसे जले हुए सिएना (गेरू) पीला गेरू (पीली माटी) सफेद आदि।
- रंगीन कागज/हस्तनिर्मित कागज
- रंग मिश्रण का कटोरा
- रंग फूल, पेस्टल और पत्ते

## 5.4 पारम्परिक विधि

आइए, अब हम रंगोली कला की पारंपरिक विधियों के बारे में जानें। रंगोली दो तरह से बनाई जाती है सूखी और गीली। रंगोली डिजाइन बनाने के लिए सबसे पहले फर्श को गीले कपड़े या गाय के गोबर या मिट्टी से साफ किया जाता है। इसे लीप या लीपना कहते हैं। फिर फर्श पर डिजाइन के अनुसार कुछ डॉट्स खींचे जाते हैं। डॉट्स लगाने के बाद उन्हें डिजाइन के अनुसार जोड़ दें। बिन्दुओं को जोड़कर मनचाहा रूप बनाने के बाद, जगह को अलग-अलग रंगों या पेस्टल से भरा जाता है, जिसके परिणामस्वरूप एक सुंदर रंगोली बनती है।

(i) डिजाइन के विशिष्ट भाग को सूखे गेहूं के पीले पाउडर (पीले रंग के साथ गेहूं का पाउडर जैसा चित्र 5.3 में दिखाया गया है) से भरें।

(ii) पीले रंग को सुशोभित करने के लिए चिकनी टोनल प्रभाव के लिए नारंगी और लाल रंग जोड़ें जैसा कि चित्र 5.4 में दिखाया गया है।

(iii) डिजाइन के सभी हिस्सों को अलग-अलग रंगों और उपरंगों से भरने के बाद जैसा कि चित्र 5.5 में दिखाया गया है। एक अद्भुत रंगोली मिलेगी।

(iv) इस डिजाइन को पूरा करने और अंतिम रूप देने के लिए हम गेहूं या चावल के पाउडर से अंतिम रूपरेखा तैयार करते हैं।

(v) डिजाइन के कुछ हिस्से को महत्व देने के लिए रंगोली के उस विशिष्ट हिस्से में चमक जोड़ें, जो दूर से एक चमकदार प्रभाव देता है जैसा कि चित्र 5.6 में दिखाया गया है।

(vi) अंत में, हमारी सुंदर और शुभ रंगोली पूरी हुई।

रंगोली एक या एक साथ काम करने वाली महिलाओं के समूह द्वारा बनाई जा सकती है। यह सुंदर शुभ रंगोली बनाते हुए प्रेम करुणा और अनुकूलता पैदा करके परिवार समुदाय को एक इकाई में बांधने में मदद करता है।

## प्रायोगिक अभ्यास 1

तो प्रिय शिक्षार्थी, आपने रंगोली पेंटिंग के पारंपरिक तरीके सीखे हैं। अब हम रंगोली सीमा के एक डिजाइन का वर्णन करेंगे।

**चरण 1:** दो समानांतर रेखाएँ खींचिए। बीच में एक घेरा लगाएं। इसके चारों ओर पाँच पंखुड़ियों वाली आकृतियाँ बनाएँ। सेंटरपीस के दोनों किनारों पर दो सर्पिल रूपांकनों को बनाएं।

चित्र 5.2

**चरण 2:** इन आकृतियों को रंग दें।

चित्र 5.3

**चरण 3:** प्रत्येक आकृति को स्पष्ट करने के लिए काले रंग से रूपरेखा बनाएं।

चित्र 5.4

## प्रायोगिक अभ्यास 2

यह रंगोली डिजाइन का एक और अभ्यास है। इसका विषय है ज्यामितीय आकार (जियोमेट्रिकल शेप) वाली रंगोली।

**चरण 1:** बीच में एक वृत्त के साथ दो रेखाओं वाला एक वर्ग बनाएं। हीरे के आकार में रखें, और दो क्षैतिज और दो लंबवत रेखाएं प्रतिच्छेद करें। चार त्रिकोणीय आकार देने के लिए चारों कोनों में लाइनों को जोड़ दे। वर्ग की प्रत्येक भुजा पर चार रेखाएँ खींचिए।

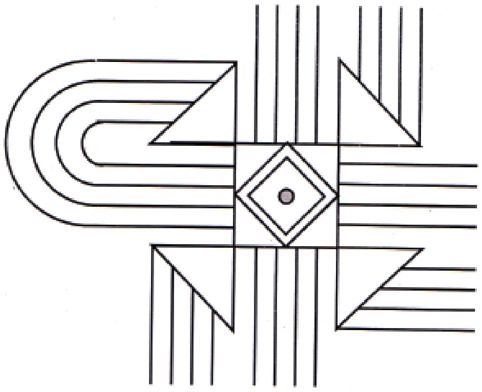

चित्र 5.5

टिप्पणियाँ

टिप्पणियाँ



**चरण 2:** प्रत्येक रेखा पर U आकार बनाएं और इसे त्रिभुज से जोड़ दें। सभी त्रिभुजों के लिए समान दोहराएं।

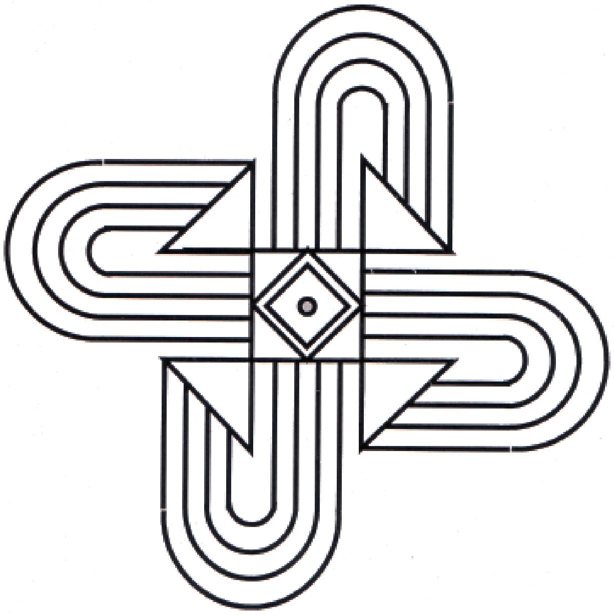

चित्र 5.6

**चरण 3:** चारों कोनों पर कमल की आकृति बनाएं, और त्रिभुजों के प्रत्येक कोने पर छोटे-छोटे वृत्त बनाएं।

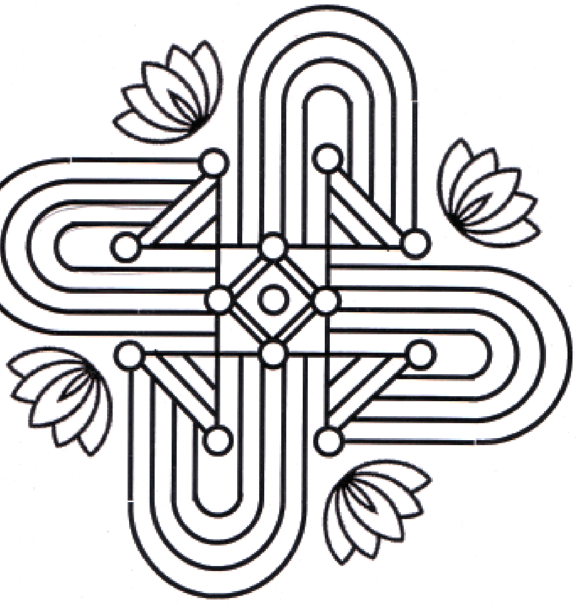

चित्र 5.7

टिप्पणियाँ

**चरण 4:** रंगों का प्रयोग करें, जैसा कि चित्र में दिखाया गया है और डिजाइन को पूरा करें।

चित्र 5.8

## प्रायोगिक अभ्यास 3

अब हम एक और रंगोली पेंटिंग बनाते हैं। इसकी विषय बिंदुओं से बनी रंगोली है।

**चरण 1:** काल्पनिक वर्ग बॉक्स बनाने के लिए 36 बिंदुओं वाला एक काल्पनिक वर्ग बनाएं। फ्रीहैंड का उपयोग करना बेहतर है, लेकिन यदि आवश्यक हो तो आप स्केल की मदद ले सकते हैं।

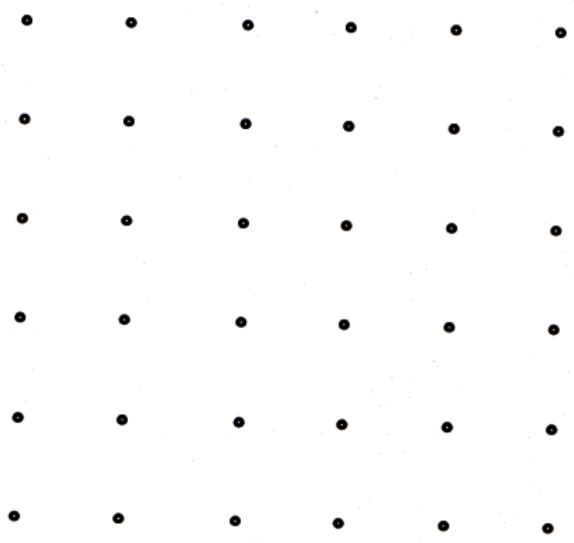

चित्र 5.9

**चरण 2:** कोने में तीन विकर्ण बिंदुओं को एक रेखा से मिलाएँ। मध्य बिंदु को अन्य तीन बिंदुओं के साथ लाइनों से कनेक्ट करें। दूसरे कोनों में भी यही दोहराएं। चार बिंदुओं के बीच में एक वर्ग बनाएं और वर्ग के चारों ओर चार दिल के आकार की पंखुड़ी की आकृति बनाएं। वर्ग के बीच में एक गोला लगाएं।

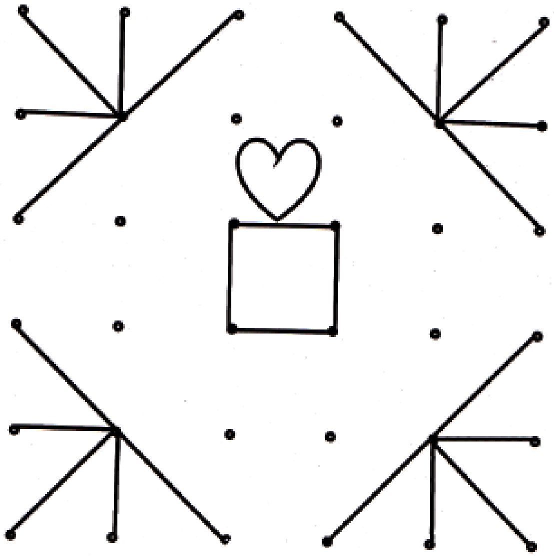

चित्र 5.10

**चरण 3:** एक डिजाइन बनाने के लिए प्रत्येक कोने में सभी पाँच बिंदुओं को जोड़ने के लिए एक अर्ध-वृत्त बनाएं। चार पंखुड़ियों वाले रूपांकनों में मध्य बिंदु से चार पत्ती के रूपांकनों को बनाएं। दूसरे कोनों में भी यही दोहराएं।

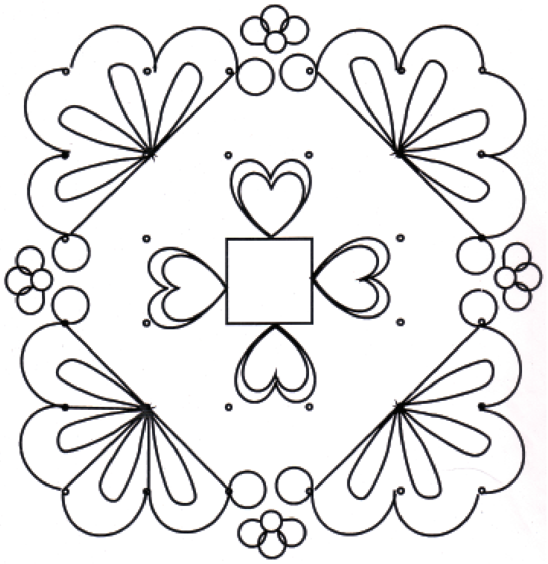

चित्र 5.11

**चरण 4:** रंगोली को सजाने के लिए अपनी पसंद के रंगों का प्रयोग करें। डिजाइन की खूबसूरती में चार चांद लगाने के लिए आप आउटलाइन और रंगीन डॉट्स का इस्तेमाल कर सकती हैं।

चित्र 5.12

डिजाइन के सभी हिस्सों को अलग-अलग रंगों और रंगों से भरने के बाद, हम डिजाइन को पूरा करने और अंतिम रूप देने के लिए अंतिम रूपरेखा तैयार करेंगे। अंत में, एक सुंदर और शुभ रंगोली पूरी होती है (रंगीन स्केच पेन से बचने की कोशिश करें)।

## आपने क्या सीखा

रंगोली
|
लोक कला
|
जमीन/धरातल चित्र
|
अभिप्रायों/मोटिफ्स का प्रयोग

मोर | कमल | बर्तन | घड़ा | दीप | पत्तियां | तोता | फल | हंस | सूर्य | ज्यामितीय आकार

↓
रंगोली के प्रकार

किनारे वाली रंगोली | ज्यामितीय आकार वाली रंगोली | बिंदुओं से बनी रंगोली

## पाठांत प्रश्न

1. विभिन्न राज्यों में रंगोली के विभिन्न नामों की पहचान करें और उनके रूपांकनों को बनाएं।
2. लक्ष्मी पूजा के अवसर पर प्रयुक्त आकृति को रेखांकित कर रंग भरे।
3. दरवाजे पर एक सजावटी रंगोली बनाएं और रंग भरें।
4. लाइनों की मदद से एक सजावटी रंगोली बनाएं और रंग भरें।
5. पारंपरिक शैली में फर्श पर एक सजावटी रंगोली बनाएं और रंग भरें और उसकी तस्वीर जमा करें।
6. अपने आस-पास के निवासियों को उनके घरों के बाहर रंगोली बनाने या पेंट करने में सहायता करें।

### शब्दावली

आकृतियाँ : एक पवित्र व्यक्ति की चित्र

प्रतीकात्मक : प्रतीक के माध्यम से किसी चीज का प्रतिनिधित्व करना

धार्मिक : किसी धर्म से संबंधित या विश्वास करने वाला

अनुष्ठान : एक समारोह जिसमें एक निर्धारित क्रम में किए गए कार्यो की एक श्रृंखला शामिल होती है

संस्कार : धार्मिक समारोह, अन्य पवित्र प्रक्रिया

प्रतीक : किसी चीज के प्रतिनिधित्व के रूप में इस्तेमाल किया जाने वाला चिह्न या चरित्र

प्रचलित : आम, व्यापक

सामग्री : घटक, भाग या तत्व

दानेदार बनाना : दानों के रूप में

देवता : भगवान और देवी

विस्तृत करें : अधिक विवरण में कुछ विकसित करें

पेस्टल : रंगोली बनाने के लिए इस्तेमाल किए जाने वाले नरम रंग का चाक या क्रेयॉन

पंखुड़ी : प्रत्येक खंड जो फूल के बाहरी भाग का निर्माण करता है

# 6

# अल्पना

प्रिय शिक्षार्थी, पिछले पाठ में आपने रंगोली कला के बारे में सीखा। इस पाठ में हम अल्पना लोक कला के बारे में जानेंगे। अल्पना बंगाल में फ्लोर पेंटिंग और सजावट के सबसे भाववाहक लोक कला रूपों में से एक है। फर्श की सजावट का उपयोग भारत के हर हिस्से में पाया जाता है। ये विभिन्न प्रकार के रंगों में और फर्श की विभिन्न प्रकार की सतह पर किए जाते हैं। ग्रामीण बंगाल में घरों या झोपड़ियों में मिट्टी के फर्श होते हैं। यहां तक कि आंगन को भी पतली मिट्टी की परत दी गई है। मिट्टी के फर्श सफेद रंग के रूपांकनों पर धूसर रंग दिखाते हैं, जो चावल का एक तरल पेस्ट होता है, जो एक अद्भुत प्रभाव लाता है। अल्पना विशेष रूप से लोक कला का एक कर्मकांडीय रूप है। अल्पना संभवतः अलीपोना से ली गई है, इस विश्वास के कारण प्रचलित एक कला है कि ये सजावटी चित्र निवास स्थान या घर को जादू/विशेष शक्तियों से सुरक्षित और समृद्ध, भूमि उपजाऊ और फलदायी रखते हैं। अल्पना का अध्ययन लोक कला का अत्यंत महत्वपूर्ण अंग है। यह लोगों के कलात्मक जीवन, उनके रीति-रिवाजों, धार्मिक विश्वास और सामाजिक व्यवहार को व्यक्त करता है। यह मुख्य रूप से पारंपरिक कला, नृत्य, संगीत और साहित्य के अध्ययन से जुड़ा है। आज कल के दिनों में अल्पना की शैली और सामग्री में काफी बदलाव आया है। फर्श की सतह की सामग्री में परिवर्तन और रेडीमेड पेंट की उपलब्धता कलाकार को पुरानी सामग्री को बदल देती है।

## उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने एवं अभ्यास करने के बाद, आप :

- अल्पना को एक कला के रूप में समझा सकेंगे;
- अल्पना की पृष्ठभूमि को पहचान सकेंगे;
- अल्पना में प्रयुक्त विधि और सामग्री का वर्णन कर सकेंगे;
- धार्मिक अनुष्ठानों और संस्कारों से जुड़े विभिन्न रूपों के बारे में समझा सकेंगे;
- अल्पना का अभ्यास कर सकेंगे।

## 6.1 सामान्य विवरण

अल्पना बंगाल में महिलाओं द्वारा निष्पादित फर्श चित्रों की अनुष्ठानिक सजावट है। इसे विभिन्न पूजाओं और व्रतों (उपवासों) और सामाजिक समारोहों जैसे शादी, बच्चे का पहला चावल खाने (अन्नप्रासन), यज्ञोपवीत (उपनयन) संस्कार आदि के अवसर पर बनाया जाता है। अल्पना घर के फर्श और आंगनों पर चित्रित की जाती हैं। उपयोग की जाने वाली सामग्री चावल का पेस्ट पानी के साथ मिश्रित है। इसलिए, यह आमतौर पर सफेद होता है। विशेष अवसरों पर कई अन्य रंगों और सामग्रियों का उपयोग किया जाता है। अल्पना मुख्यत: महिलाओं द्वारा हाथ से बनाई जाती हैं। विशेष उत्सवों और समारोहों के लिए कुछ रूपांकनों का निर्धारण किया जाता है, जिनका उपयोग चित्रकार बार-बार करते हैं। सबसे लोकप्रिय रूपांकनों में कमल की पंखुड़ी, शंख, केले का पत्ता और लहरदार रेखाएँ हैं। लक्ष्मी पूजा के दौरान अल्पना डिजाइन में लक्ष्मी देवी के स्टाइलिश पैरों के निशान जरूरी हैं।

## 6.2 पारंपरिक रूप और प्रतीक

प्रिय शिक्षार्थी, सबसे पहले, आपको अल्पना चित्रकला में उपयोग किए जाने वाले पारंपरिक रूपांकनों और प्रतीकों को जानना होगा। अल्पना की डिजाइन जगह, अवसर और व्यक्तियों के आधार पर अलग-अलग होते हैं। एक ही समारोह के लिए विभिन्न पैटर्न का उपयोग किया जाता है और अलग-अलग गांवों में एक ही समारोह के लिए अलग-अलग पैटर्न का उपयोग किया जाता है। प्रत्येक अल्पना में कुछ प्रतीकों का प्रतिनिधित्व करने की आवश्यकता के बावजूद ऐसा प्रतीत होता है कि कलाकार को बहुत अधिक स्वतंत्रता प्राप्त है।

चित्र 6.1: पारम्परिक रूपांकन एवं प्रतीक

अल्पना में सामान्य आकृति लक्ष्मी, विष्णु और ब्रह्मा से जुड़ा कमल है। कमल सार्वभौमिक जीवन शक्ति का भी प्रतीक है। लक्ष्मी का पदचिह्न हमेशा घर के अंदर की ओर इशारा करता है, जो समृद्धि की देवी के प्रवेश का प्रतीक है। सूर्य-देवता का प्रतिनिधित्व या तो एक पुरुष या एक वृत्त/गोल के रूप में किया जाता है। अल्पना डिजाइनिंग के लिए एक छात्र को रूपांकनों और

प्रतीकों का अनुसरण करना चाहिए और उनकी नकल करनी चाहिए ताकि वह अपनी नई अल्पना डिजाइन बनाने में सक्षम हो सकें। ये रूपांकन इस प्रकार हैं।

1. **कमल** : यह फूल सुंदरता और सार्वभौमिक शक्ति का प्रतीक है। यह लक्ष्मी, ब्रह्मा, विष्णु और सरस्वती की छवियों का एक हिस्सा है।
2. **मछली** : परिवार की समृद्धि और खुशहाली का प्रतीक है।
3. **शंख** : यह विष्णु के गुणों में से एक है। एक अच्छे शगुन का प्रतीक है।
4. **मोर** : बारिश की बूंदों की धुन पर नाचते हुए सुंदरता, रोमांस, पुनर्जन्म और ताल का प्रतीक है।

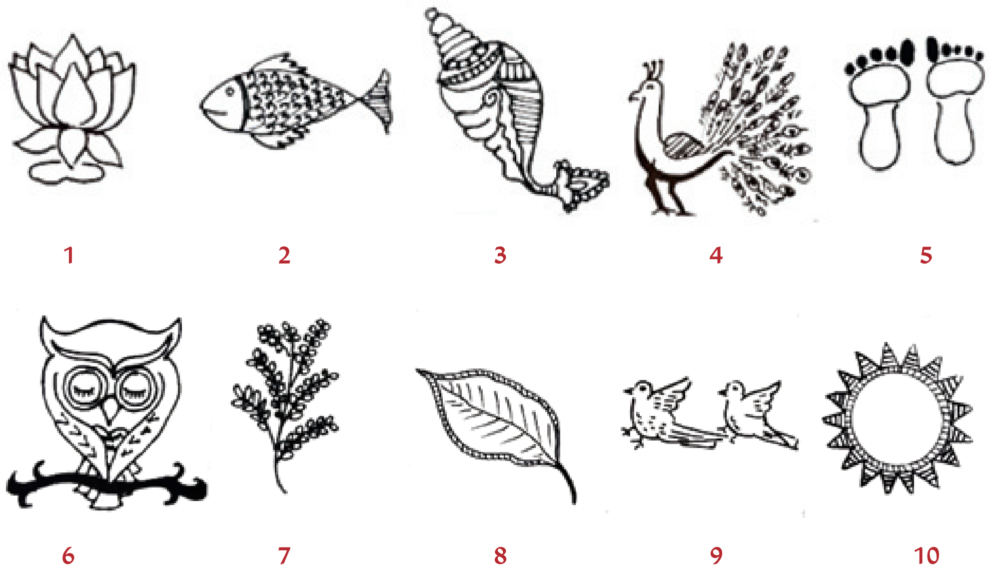


चित्र 6.2: पारम्परिक प्रतीक

5. **पदचिन्ह** : लक्ष्मी धन और भाग्य की देवी हैं। लक्ष्मी देवी कदम घर में लक्ष्मी के प्रवेश का प्रतीक हैं।
6. **उल्लू** : लक्ष्मी की उपस्थिति का प्रतीक है क्योंकि यह उनका वाहन है।
7. **राइस स्टिक** : मोटिफ को दो समानांतर रेखाओं के साथ खींचा जाता है जो दो तरफ छोटी विकर्ण रेखाओं के साथ लटकी होती हैं। यह समृद्धि का प्रतीक है।
8. **पत्तियां** : कलाकार पत्तियों की विभिन्न आकृतियों को सजावटी डिजाइन के रूप में उपयोग करते हैं। यह युवावस्था का भी प्रतीक है।
9. **पक्षी** : पक्षियों को उनकी सुंदरता के अलावा स्वतंत्रता का प्रतीक माना जाता है।
10. **सूर्य** : जीवन शक्ति और सभी प्रकार की ऊर्जा के स्रोत का प्रतीक है।

टिप्पणियाँ

## 6.3 अल्पना के लिए आवश्यक सामग्री

1. ड्राइंग बोर्ड या हार्डबोर्ड
2. ड्राइंग पेपर (अल्पना और विभिन्न रूपांकनों को डिजाइन करने के लिए)
3. ड्राइंग पिन
4. पेंसिल
5. इरेजर
6. रंग (पृथ्वी का रंग जैसे जले हुए सिएना (गेरू) पीला गेरू (पेली माटी) सफेद आदि।
7. रंगीन कागज/हस्तनिर्मित कागज
8. फर्श पर अभ्यास के लिए कपड़े और चावल का पेस्ट।
9. रंग मिलाने वाली प्याली (कलर मिक्सिंग बाउल)

अल्पना को सजाने के लिए कई मिट्टी के रंगों का उपयोग किया जाता है जैसे लाल मिट्टी (लाल माटी या गेरू), पीली मिट्टी (पेली माटी), और पन्ना हरा रासायनिक पाउडर भी इस्तेमाल किया जाता है।

अल्पना डिजाइन का सबसे आवश्यक तत्व रचना है। अल्पना एक पारंपरिक कला है, और इसके तत्व पीढ़ी दर पीढ़ी आते हैं। गुणवत्ता अल्पना चित्रकारों के कौशल पर निर्भर करती है। इसलिए, शिक्षार्थियों को एक सुंदर अल्पना डिजाइन की रचना करने में सक्षम होना चाहिए।

## 6.4 अल्पना की पारंपरिक विधि

इस भाग में आपको अल्पना कला की पारंपरिक पद्धति को समझाया है।

अल्पना के लिए सामग्री सरल और बहुत कम है। अल्पना को चित्रित करने के लिए मुट्ठी भर चावल और कपड़े का एक छोटा टुकड़ा बुनियादी आवश्यकताएं हैं। चावल को पानी में डालकर गाढ़ा पेस्ट बना लिया जाता है। एक पेस्ट प्राप्त करने के लिए पर्याप्त पानी मिलाया जाता है जो रेखाचित्र बनाने में मदद करेगा। पेस्ट को कपड़े के टुकड़े पर लगाया जाता है। कपड़े को हथेली के निचले हिस्से में (या उंगलियों की जड़ में) रखा जाता है। पेस्ट को छोड़ दिया जाता है और अनामिका के नीचे बहने दिया जाता है, जो डिजाइन बनाने के लिए साथ चलती है।

अल्पना को फर्श पर चित्रित किया गया है। हालांकि, किसी भी ड्राइंग या लेआउट के बिना, फर्श पर एक सुंदर डिजाइन बनाना असंभव है। शिक्षार्थी को फर्श पर अल्पना के आकार का पता होना चाहिए ताकि वह कागज पर तदनुसार रूपांकनों और प्रतीकों की रचना कर सके। फर्श पर अल्पना के वास्तविक प्रभाव का पता लगाने के लिए, शिक्षार्थियों छात्रों को पहले फर्श की पृष्ठभूमि को पेंट करना चाहिए। मिट्टी के फर्श का प्रभाव देने के लिए पुराने टूथब्रश की मदद से जले हुए सिएना को सफेद और पीले गेरू से स्प्रे करें। यह कागज पर मिट्टी के फर्श जैसा

दिखना चाहिए। इस पृष्ठभूमि पर ब्रश के साथ रूपांकनों और प्रतीकों को खींचा जाना चाहिए 'चित्र 6.4 देखें)।

अल्पना की सजावट विभिन्न अवसरों के लिए की जाती है। त्यौहारों के अनुसार विभिन्न रूपांकनों और प्रतीकों का उपयोग किया जाता है। हम पहले ही मुख्य पृथ्वी के रंगों और उनके रंजकों पर चर्चा कर चुके हैं। अब हम स्थानीय बाजार में आसानी से उपलब्ध होने वाले मिट्टी के रंग तैयार करेंगे। उदाहरण के लिए, पीला गेरू (पेली माटी), जली हुई सिएना या भारतीय लाल (गेरू) नीला (नील), सफेद (चूना), काला (चारकोल)। उपरोक्त पाउडर रंगों को पानी और कुछ मात्रा में बाइंडर, जैसे गोंद, फेविकोल, या सरेस (अरबी गोंद) के साथ मिलाया जाता है। अब, हम इन रंगों को कागज पर या फर्श पर इस्तेमाल करने के लिए तैयार हैं।

टिप्पणियाँ

## प्रायोगिक अभ्यास 1

आइए अब हम एक अल्पना डिजाइन का वर्णन करें। अल्पना का विषय लक्ष्मी पूजा है।

इस अल्पना में हमने लक्ष्मी की वेदी पर पूर्ण खिले हुए कमल के फूल को बड़े आकार में रंगा है। लयबद्ध रेखा में कमल के पत्तों की दो पंक्तियाँ भी खींची गयी हैं। इसमें दो पंक्तियों के बीच लक्ष्मी के पदचिन्ह को दर्शाया गया है। ये पैरों के निशान घर के बाहर से अंदर की दिशा को दर्शाते हैं।

**चरण 1:** एक पेंसिल के साथ फर्श पर मूल आकृति बनाएं। प्रतीकों जैसे, पद चिन्ह, गोलाकार आदि का प्रयोग करें।

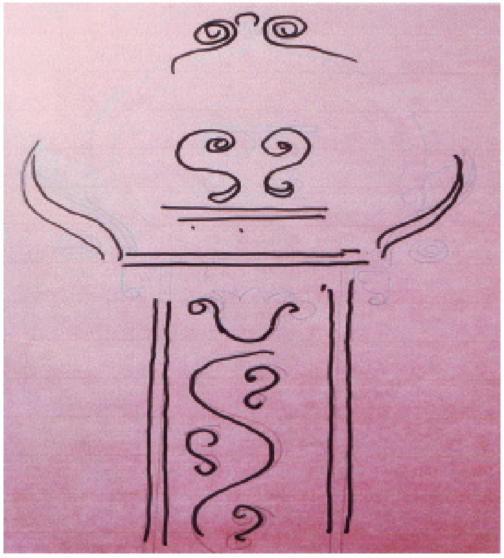

चित्र 6.3

**चरण 2:** चावल को रात भर भिगोकर पीस लें और पेस्ट बना लें। फिर, फर्श पर डिजाइन बनाने के लिए अपनी अंगुली का उपयोग करें। एक अन्य विकल्प पोस्टर सफेद रंग और ब्रुश का उपयोग करना है।

चित्र 6.4

**चरण 3:** इसे सजावटी रूप देने के लिए विवरण के साथ डिजाइन को समाप्त करें।

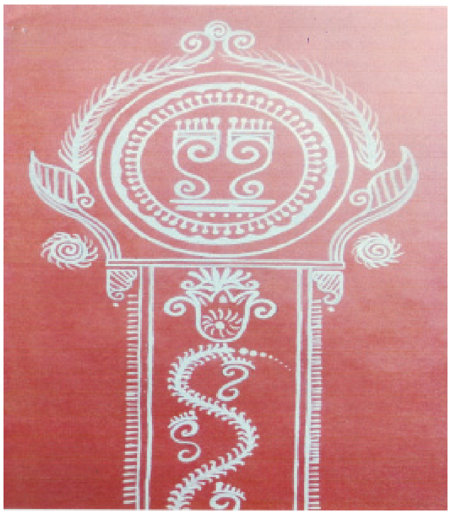

चित्र 6.5

## प्रायोगिक अभ्यास 2

अब हम एक और अल्पना कला का अभ्यास करें।

आइए जानते हैं विवाह समारोह में प्रयोग होने वाली अल्पना डिजाइन की विधि जानते हैं। विषय है विवाह समारोह के लिए अल्पना।

विवाह की रस्म मानव जीवन में सबसे महत्वपूर्ण समारोहों में से एक है। यह आश्वासन दिया जाता है कि सभी दूल्हे विष्णु हैं और सभी दुल्हनें लक्ष्मी हैं, और नवविवाहित एक सुखी वैवाहिक जीवन जीएंगे। तो यहाँ, हम कमल और शंख के प्रतीकों का प्रतिनिधित्व करते हैं।

**चरण 1:** कमल, शंख, पदचिन्ह आदि जैसे रूपांकनों के साथ डिजाइन बनाएं।

चित्र 6.6

**चरण 2:** डिजाइन के छोटे हिस्से को सफेद चावल के पेस्ट या पोस्टर रंग से रंग भरे।

चित्र 6.7

**चरण 3:** निचले हिस्से के दूसरे हिस्से को भी इसी तरह से रंग भरे। इस प्रकार डिजाइन का निचला आधा भाग पूरा हो गया है।

चित्र 6.8

**चरण 4:** अब अल्पना के ऊपरी हिस्से में जाएँ और डिजाइन को पूरा करें।

चित्र 6.9

## प्रायोगिक अभ्यास 3

आइए अब एक और अल्पना डिजाइन सीखें। ये फर्श/जमीन के सजावट के लिए अल्पना है।

अल्पना एक प्रकार की फर्श की सजावट है जो त्यौहारों और समारोहों जैसे शादी, अनुष्ठान आदि के दौरान की जाती है। इसे बहुत शुभ माना जाता है। अल्पना के लिए विभिन्न रूपांकनों का उपयोग किया जाता है, जो पक्षियों, जानवरों, फूलों और लोक कला की छवियों से प्रेरित होते हैं। पुष्प डिजाइन के साथ अल्पना पेंटिंग की एक विधि नीचे दी गई है:

1. एक वृत्त बनाएं और वृत्त के चारों ओर एक पंखुड़ी के आकार का रूप जोड़ें।

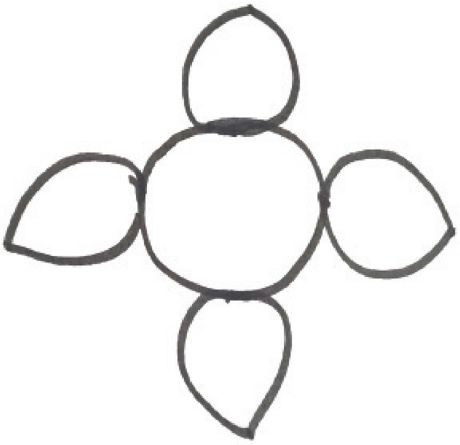

चित्र 6.10

2. गोलाकार के बीच में एक छोटा गोलाकार बनाएं और स्पेस को कवर करने के लिए पतली पंखुड़ी फॉर्म बनाएं।

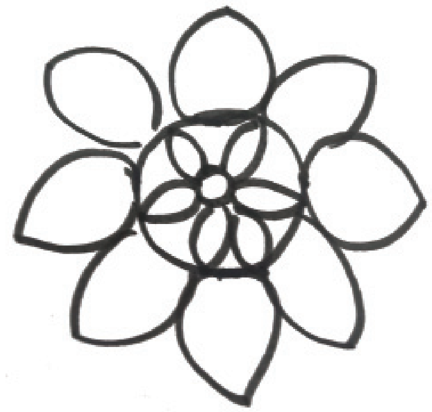

चित्र 6.11

3. बाहरी पंखुड़ियों के अंदर आकार घटाने में पंखुड़ी का रूप जोड़ें।

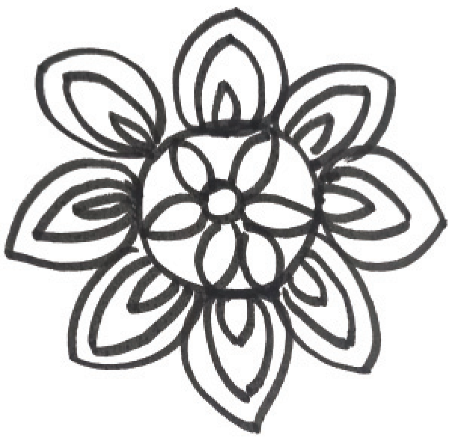

चित्र 6.12

4. चित्र में दिखाए गए अनुसार पूरे अल्पना को एक गोल आकार देने के लिए बाहरी पंखुड़ियों के बीच के अंतराल को पत्ती के रूपों से भरा जा सकता है।

चित्र 6.13

टिप्पणियाँ

5. अब चित्र में दिखाए गए अनुसार डॉट लाइनों और पुष्प रूपांकनों के साथ डिजाइन को सुशोभित करें।

चित्र 6.14

## आपने क्या सीखा

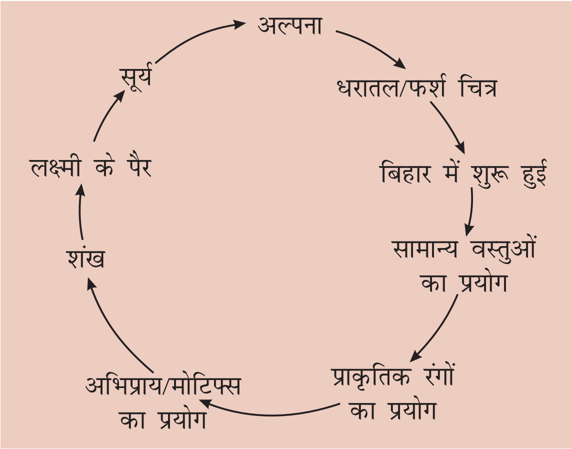


## पाठांत प्रश्न

1. विभिन्न राज्यों में अल्पना के विभिन्न नामों की सूची बनाएं और उनके रूपांकनों को बनाएं।
2. लक्ष्मी पूजा के अवसर पर प्रयुक्त आकृति को बनाये और रंग भरे।
3. दरवाजे पर एक सजावटी अल्पना बनाएं और रंग भरे।
4. रेखाओं की सहायता से एक सजावटी अल्पना बनाएं और रंगें।
5. फर्श पर पारंपरिक शैली में सजावटी अल्पना रंग भरे और उसकी एक तस्वीर जमा करें।
6. आस-पास के निवासियों को अपने घर के बाहर अल्पना बनाने के लिए प्रेरित करें।

## शब्दावली

| | | |
|---|---|---|
| अल्पना | : | बंगाल में एक प्रकार की फ्लोर पेंटिंग |
| व्युत्पन्न | : | किसी स्रोत से कुछ प्राप्त करना |
| आवास | : | घर |
| पता चलता है | : | गुप्त जानकारी ज्ञात होना |
| आकांक्षाएं | : | एक आशा, महत्वाकांक्षा |
| विश्वास | : | यह महसूस करना कि सच है |
| संघटक | : | घटक भाग या तत्व |
| चित्रलेख | : | एक छोटी छवि, एक शब्द या वाक्यांश का प्रतिनिधित्व करने वाला चित्र |
| अवसर | : | एक विशेष घटना या उत्सव |
| अनुष्ठान | : | एक समारोह जिसमें प्रदर्शन की एक श्रष्टंखला शामिल होती है |
| संस्कार | : | धार्मिक समारोह, अन्य पवित्र प्रक्रिया |
| मोटिफ्स | : | एक पैटर्न या डिजाइन |
| रंगद्रव्य | : | रंग बनाने के लिए तरल के साथ मिश्रित रंगीन पाउडर |

# 7

# कोलम (केरल में कलम)

प्रिय शिक्षार्थी, पिछले पाठ में आपने पारंपरिक लोक कला अल्पना के बारे में सीखा। इस पाठ में आप लोक कला कोलम के बारे में जानेंगे। फर्श की सजावट भारत में लोक कला के सबसे लोकप्रिय रूपों में से एक है। फर्श पर सजावट को तमिलनाडु (दक्षिण भारत) में कोलम कहा जाता है, और इसे घर के सामने (आंगन) में खींचा जाता है। यह क्षेत्र फर्श पर अनुरेखित डिजाइन द्वारा संरक्षित है।

कोलम देशी शब्द कलम के तहत केरल में अपने विकसित रूप में देखा जाता है, लेकिन संदर्भ, संरचना और कार्य कोलम के समान नहीं हैं। मलयालम में, कलम शब्द का अर्थ है कुछ करने के लिए विशिष्ट स्थान। इस संदर्भ में, कलम एक ऐसा स्थान है जहाँ देवता के प्रकट होने की अपेक्षा की जाती है। एक बार संबंधित देवता के कलम की ड्राइंग पूरी हो जाने के बाद, व्यक्तियों द्वारा प्रसन्न करने वाले गीतों, प्रसाद और अनुष्ठान प्रदर्शन सहित कई अनुष्ठानों को किया जाता है, जो कलम को नष्ट करने वाले भक्तों या दैवज्ञ द्वारा समाप्त होता है। कोलम और कलम के बीच मुख्य अंतर यह है कि कलम या तो एक देवता की आकृति का चित्रण है या पांच रंगों का उपयोग करके सममित रूप में इसका प्रतीकात्मक प्रतिनिधित्व है। इसके विपरीत, कोलम सफेद पाउडर का उपयोग करके कुछ पैटर्न की रेखा रेखाचित्र है। कलम दो प्रकार के होते हैं। एक है देवता का चित्र, और दूसरा है देवता के प्रकट होने के स्थान का प्रतिनिधित्व करने वाली ज्यामितीय आकृतियों का क्रमपरिवर्तन। पहले वाले को दो भागों में विभाजित किया जा सकता है: भूतावतीवु और चित्रावतीवु। चित्रावतीवु के मामले में, देवता की आकृति मानव शरीर के समान अनुपात में खींची गई है जबकि भूतावतीवु में इसे अतिरंजित तरीके से खींचा गया है।

## उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने एवं अभ्यास करने के बाद, आप :

- कोलम की विशेषताओं का वर्णन कर सकेंगे;
- कोलम में प्रयुक्त विभिन्न रंगों और इन रंगों को तैयार करने के लिए प्रयुक्त सामग्री की पहचान कर सकेंगे;

- लोक कला का संदर्भ और कार्य बता सकेंगे;
- कोलम में प्रयुक्त रूपांकनों की पहचान कर सकेंगे;
- भद्रकाली का पारंपरिक चित्र बना सकेंगे;
- भद्रकाली के विभिन्न आभूषणों और हथियारों की व्याख्या कर सकेंगे।

## 7.1 सामान्य विवरण

शिक्षार्थी, पहले हम कोलम चित्रकला के सामान्य विवरण को समझते हैं। कलम की चित्र आम लोक धार्मिक प्रथा का एक हिस्सा है जो जातियों की परवाह किए बिना पूरे केरल में प्रचलित है। कलम वह स्थान है जहां उचित अनुष्ठानों से देवता का आह्वान और प्रसन्नता होती है। मान्यता के अनुसार देवी-देवताओं के बैठने की जगह को लेकर लोग ज्यादा परेशान नहीं होते हैं। फिर भी, उन्हें यकीन है कि कलम को आकर्षित करने और आवश्यक अनुष्ठान करने के बाद देवता कलम में प्रकट होंगे। कलम से धीरे-धीरे यह संबंधित कर्मकांड या दैवज्ञ के शरीर में प्रवेश करता है। अंत में, कलाकार दवमय हो जाता है। प्रदर्शन के अंत में, आविष्ट व्यक्ति या दैवज्ञ कलम को अखरोट के पेड़ से या दैवज्ञ द्वारा लयबद्ध नृत्य के माध्यम से या एक फूल गुच्छा का उपयोग करके मिटा देता है। यह रात भर चलने वाला अनुष्ठान है।

पुल्लुवा, कुरुप्पु, नंबूदिरी कुछ ऐसे समुदाय हैं जो परंपरागत रूप से कलम अनुष्ठानों में लगे हुए हैं। कई अन्य जातियां अपनी जातियों के लिए यह कर्तव्य निभाती हैं। कलम को चित्रित करने की प्रत्येक जाति की अपनी परंपरा है, लेकिन मूल सिद्धांत समान हैं। कलम चित्र के लिए पारंपरिक स्थान संबंधित देवता के मंदिर के सामने का आंगन या घर के सामने का आंगन है जहां कलम के संबंध में अनुष्ठान एक व्रत के रूप में किया जाता है। कलम के चित्र में प्रयुक्त रंगों को पंचवर्णम (पांच रंग) के रूप में जाना जाता है: अर्थात् काला, सफेद, पीला, लाल और हरा। हालाँकि, मलयालम में, कलामेझुतु शब्द कलम के चित्र को आटे/फूलों के चित्र के अलावा कुछ और नहीं दर्शाता है। रेखाचित्र बनाने के लिए सफेद या काले रंग का उपयोग किया जाता है, और एक बार रेखाचित्र बनाने के बाद स्तंभों को विशिष्ट रंगों में बनाई गई सजावट से भर दिया जाता है। परंपरागत रूप से यह तय किया जाता है कि कौन सा रंग आकृति के किस हिस्से में जाता है।

## 7.2 पारंपरिक मोटिफ/अभिप्राय

कोलम चित्र में इस्तेमाल किए जाने वाले पारंपरिक मोटिफ को पहचानना सबसे अच्छा होगा। आंध्र प्रदेश के गांवों में प्रमुख मोटिफ/अभिप्राय बिंदी घरों की भीतरी दीवारों के चारों ओर सावधानीपूर्वक व्यवस्थित है। तेलंगाना, आंध्र, कर्नाटक और तमिलनाडु में, दहलीज मुख्य रूप से लाल और पीले रंग में बिंदीदार हैं। सिंदूर बिंदी एक शक्तिशाली प्रतीक है, जो रक्त, जीवन के स्रोत और देवी मां से जुड़ा है।

1. **डॉट** : डॉट बीज का प्रतीक है, जीवन का स्रोत है। यह देवी मां का भी प्रतीक है।

टिप्पणियाँ

2. **वर्मिलियन डॉट** : प्रबल प्रतीक–जिसका मूल अर्थ रक्त से जुड़ा है–जीवन का स्रोत और आदिम देवी मां।

3. **अलवत्तम** : यह कुंडलम के चारों ओर एक आभूषण है जो देवी भद्रकाली (माथे से कमर तक) के दोनों ओर होता है।

4. **मुकुट** : यह देवी/देवताओं द्वारा पहना जाने वाला एक सजावटी सिर का आभूषण है

5. **कुंडलार्त** : देवी भद्रकाली के कान का आभूषण।

6. **त्रिशूल** : शक्ति के प्रतीक के रूप में देवी भद्रकाली द्वारा उठाए गए तीन बिंदुओं वाला भाला।

7. **शील्ड** : हमले से सुरक्षा के लिए यह भद्रकाली द्वारा उठाए जाता है।

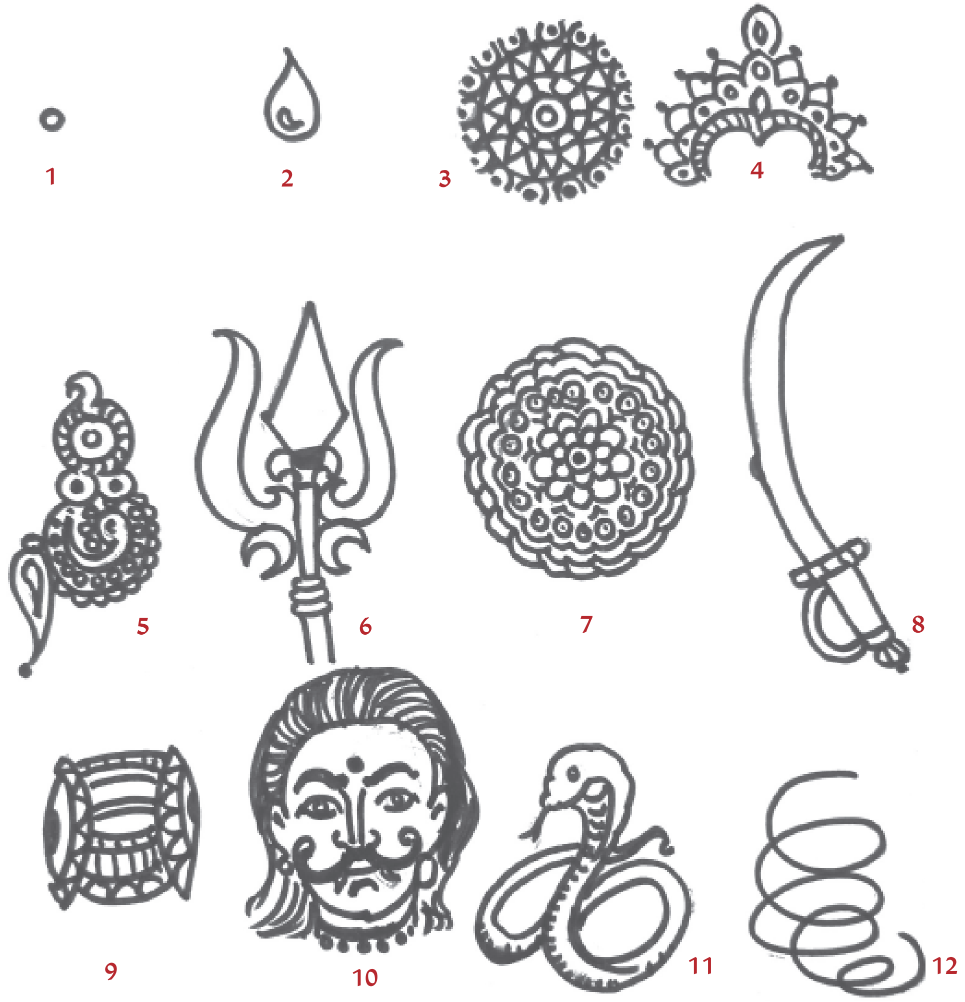


चित्र 7.1: पारंपरिक मोटिफ/अभिप्राय

8. **तलवार** : एक लंबी पतली धातु और एक संरक्षित हैंडल वाला हथियार - देवी भद्रकाली इसे अधिकार की निशानी के रूप में धारण करती हैं।

9. **चिलम्बु** : पायल : देवी भद्रकाली द्वारा टखने के चारों ओर पहना जाने वाला एक सजावटी आभूषण है।

10. **दरिका** : देवी भद्रकाली द्वारा मारा गया राक्षस।

11. **नागा** : देवी भद्रकाली द्वारा पहना जाने वाला नाग (उर्वरता और समष्द्धि का प्रतीक)।

12. **लूप** : एक वक्र द्वारा निर्मित आकृति जो स्वयं को काटती है।

## 7.3 कोलम के लिए आवश्यक सामग्री

- कैनवास
- प्राकृतिक रंग
- प्राकृतिक वस्तुएं जैसे पत्ते, फूल आदि।
- काले रंग के लिए चारकोल
- सफेद रंग के लिए कच्चे चावल
- हल्दी पाउडर पीले रंग के लिए
- हरे रंग के लिए पेड़ के हरे पत्ते
- कोलम को आकर्षित करने के लिए ड्राइंग शीट, पेंसिल, इरेजर और रंग

## 7.4 पारंपरिक विधि

आपने पारंपरिक रूपांकनों को सीखा है। अब आप कोलम चित्रकला की पारंपरिक पद्धति के बारे में जानेंगे। इस चित्र के लिए कैनवास फर्श/जमीन है। इसलिए, कोलम को बनाने का पहला कदम फर्श को ड्राइंग के लिए उपयुक्त बनाना है। तो, फर्श को समतल करें, इसकी सतह को सख्त और साथ ही चिकना बनाएं। इसके बाद, मिट्टी के साथ विशिष्ट भूखंड को समतल करें, इसे लकड़ी के तख्ते से सख्त करें और इसे चिकना बनाने के लिए गाय के गोबर के पेस्ट से लिप दें। उसके बाद, सतह को समतल और चिकना करने के लिए कोई भी देशी तकनीक का उपयोग कर सकते है।

### रंगों की तैयारी

जैसा कि पहले उल्लेख किया गया है, कोलम को चित्रित करने के लिए पाँच रंगों का उपयोग किया जाता है। ये सभी प्राकृतिक रंग हैं जो प्राकृतिक वस्तुओं से तैयार किए जाते हैं जैसे कि आसपास से एकत्र की गयी पत्तियां है।

**काला :** धान की भूसी को कढ़ाई में डालकर चारकोल का रंग आने तक भून लें. फिर उसका पाउडर बना लें।

**सफेद चावल :** कच्चे चावल को 3 से 4 घंटे के लिए पानी में भिगो दें, पानी निकाल दें और सूखने के लिए फर्श पर फैला दें।

**लाल :** हल्दी पाउडर को 3 : 1 के अनुपात में चुन्नम्बू (क्विकलाईम) के साथ लपेटा जाता है। हल्दी पाउडर का रंग लाल हो जाता है।

**पीला :** हल्दी पाउडर पीले रंग के लिए प्रयोग किया जाता है।

**हरा :** पेड़ की हरी पत्तियों जैसे वाका (बबूल का अडोराटिस्मा) को छाया में सुखाकर आटा जैसे गूंथ लिया जाता है। यह ग्रे टोन के साथ हरा रंग देता है।

## प्रायोगिक अभ्यास 1

शिक्षार्थी, आइए हम एक कोलम पेंटिंग का उदाहरण बनायें। विषय भद्रकाली की ड्राइंग है।

केरल में सौ से अधिक कलम और उनके क्षेत्रीय रूप अभी भी जीवित हैं। इनमें भद्रकाली और विभिन्न प्रकार के नाग आम हैं। यहाँ, व्यावहारिक उद्देश्यों के लिए, लोकप्रिय कलमों में से एक भद्रकाली का चयन किया जाता है। ताज, चेहरा, चेहरे से पेट तक, पेट से पोशाक की निचली सीमा तक, पैर।

भद्रकाली के कलम को खींचने की चरणबद्ध विधि नीचे दी गई है।

### रूपरेखा का आरेखण

1. एक वर्ग बनाएं। एक ऊर्ध्वाधर रेखा खींचकर इसे दो बराबर भागों में विभाजित करें।

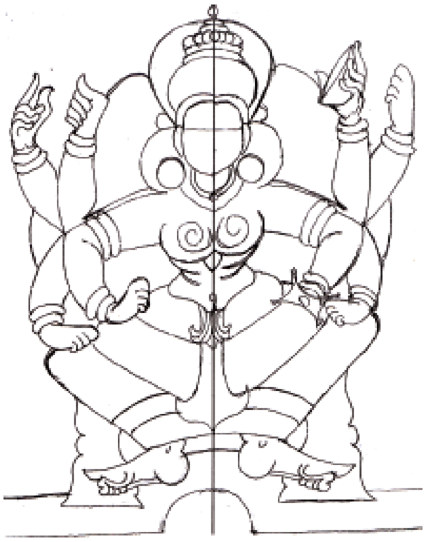

चित्र 7.2

2. भद्रकाली के मस्तक का रेखाचित्र खींचिए और शीर्ष पर भद्रकाली का मुकुट बनाने के लिए जगह छोड़िए। ताज की रूपरेखा तैयार करें।

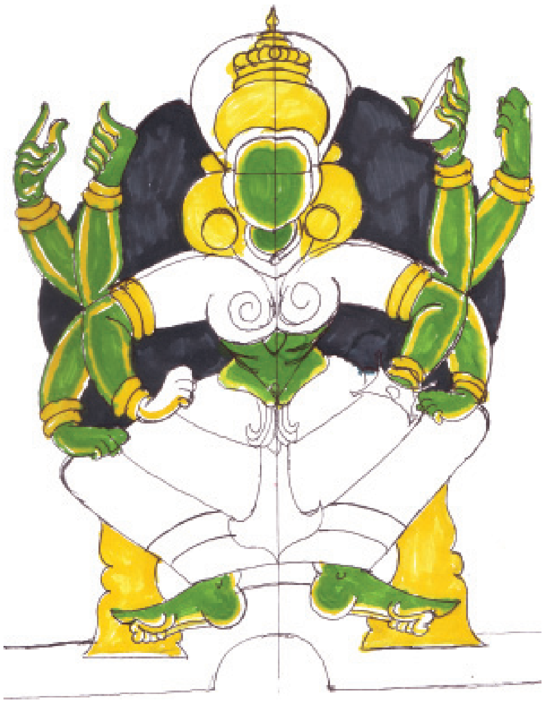

चित्र 7.3

3. इसी तरह माथे से शुरू होकर नाक के सिरे तक चेहरे की रूपरेखा तैयार करें।

4. चेहरे के दोनों ओर कर्ण-आभूषण, कुंडलम की रूपरेखा बनाएं।

5. कुंडलम के दोनों किनारों पर ''आलवट्टम'' को स्केच करें। आलावतम का ऊपरी किनारा ऊपरी माथे के स्तर पर और निचला किनारा स्तनों के निचले किनारे पर होना चाहिए। आलुवट्टम वह सजावट है जो आकृति के दोनों ओर, माथे के दोनों किनारों से लेकर कमर तक पर पड़ती है।

6. स्तनों, पेट, कमर की पोशाक और पैरों की रूपरेखा तैयार करें।

7. प्रत्येक हाथ में आठ हाथों और हथियारों का समानुपातिक रूप से चित्र बनाएं और चित्र के अनुसार रंग भरें।

8. कमर की पोशाक की पृष्ठभूमि काली है, और इसलिए पोशाक का पूरा हिस्सा काला पाउडर से भर जाता है, और उस पर लाल रंग का पाउडर फैलाकर लाल रंग की छाया दी जाती है।

चित्र 7.4

9. फिर ड्रेस के लिए बॉर्डर लगाएं। बार्डर दोनों तरफ काली रेखाओं के बीच में सफेद होता है और उसके बाहर एक पतली सफेद रेखा होती है। आप पोशाक की पृष्ठभूमि का चयन करने के लिए स्वतंत्र है। डिजाइन हरे/पीले/सफेद रंग में हो सकते हैं।

चित्र 7.5

10. बाहर जहां कहीं नंगे शरीर दिखाई देता है, वह श्हरे चूर्ण से भराश होगा। ऐसा इसलिए होता है क्योंकि शरीर के अंगों की सीमा काले चूर्ण से मोटी हो जाती है। चेहरा, गर्दन, स्तन, पेट, पैर और हाथ शरीर के अंग हैं, आमतौर पर हरे रंग में।

11. आभूषणों का रंग लाल में पीला होता है। क्षेत्र को पीले रंग से भरें और उसके ऊपर लाल पाउडर फैलाएं। जहां कहीं अलंकार के लिए बॉर्डर की जरूरत होगी, उसे काले पाउडर से खींचा जाएगा। मुकुट की पृष्ठभूमि का रंग काला है, और सफेद रंग की रेखा के साथ लाल रंग के सीमाएँ खींची गई हैं।

12. गोल आकार में आकृति की बाहरी सीमा को ''प्रभामंडलम'' के रूप में जाना जाता है और इसे सफेद रंग में रंगा जाता है, और कलाकार द्वारा चुने गए किसी भी अन्य रंगों में सजावट की जाती है। कलाकार को ''प्रभामंडलम'' को सजाने के लिए डिजाइन चुनने की स्वतंत्रता है। चित्र अब पूरा हो गया है।

चित्र 7.6

## प्रायोगिक अभ्यास 2

अब, आपको ज्यामितीय आकृतियों में फर्श के डिजाइन की तैयारी के बारे में जानने की जरूरत है। विषय ज्यामितीय कोलम डिजाइन है।

कोलम बनाने के लिए आपको एक सपाट सतह की आवश्यकता होगी। उपयोग की जाने वाली सामग्री चावल का आटा या चावल का पेस्ट है क्योंकि सभी भारतीयों के लिए चावल समृद्धि का प्रतीक है। इन दिनों बारीक पिसा हुआ सफेद पत्थर का पाउडर या चाक भी इस्तेमाल किया जाता है, क्योंकि यह लगाने में आसान होता है और कोलम को चमकदार और अच्छी तरह से तैयार करता है। कागज पर कोलम बनाते समय, समान दूरी वाले बिंदु बनाने के लिए आप स्केल औरा पेंसिल का उपयोग कर सकते है।

टिप्पणियाँ



## चरणबद्ध तरीके से बिंदु बनाकर कोलम का रेखांकन

**चरण 1:** चॉक का उपयोग करके समतल सतह पर समान दूरी वाले बिंदु बनाकर कोलम बनाना शुरू करें, और 8 समानांतर बिंदुओं के साथ आठ रेखाएं बनाएं।

चित्र 7.7

**चरण 2:** केंद्र में स्वस्तिक का चिन्ह बनाएं। नीचे दिखाए गए पैटर्न में सीधी रेखाओं का उपयोग करके बिंदुओं को सिरे से अंत तक मिलाएं।

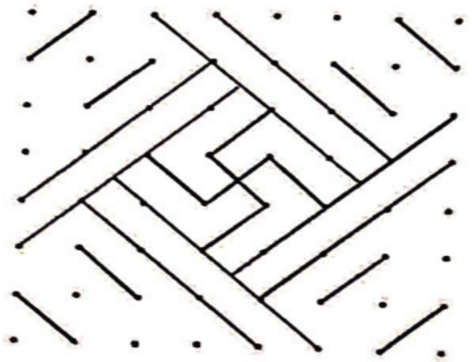

चित्र 7.8

**चरण 3:** पहले डिजाइन के एक पक्ष को पूरा करें। किसी भी तरफ, सभी कर्व्स को मिलाने के लिए ड्रा करें। साथ ही, नीचे दिखाए अनुसार दीया को पूरा करें।

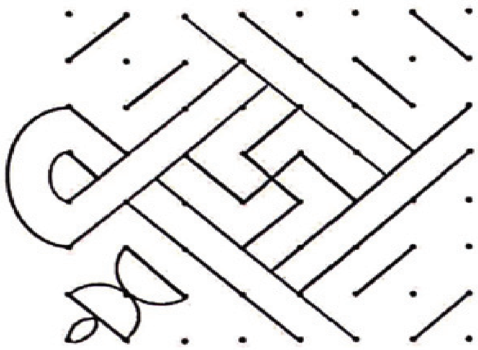

चित्र 7.9

**चरण 4:** अंत में, चरण 3 को दोहराकर डिजाइन को पूरा करें।

चित्र 7.10

आप रंगीन समतल सतह पर भी कोलम बना सकते हैं. साधारण कोलम पाउडर एक सफेद पत्थर का पाउडर है जिसे चावल के पाउडर के साथ सही अनुपात में मिलाया जाता है ताकि चिकनाई सुनिश्चित हो सके। रंगीन कोलम के लिए आप रंगोली रंग के पाउडर का इस्तेमाल कर सकते हैं।

## प्रायोगिक अभ्यास 3

अब हम एक और कोलम की तैयारी के बारे में जानेंगे। वो है पोंगल कोलम।

पोंगल दक्षिण भारत में मुख्य रूप से तमिलनाडु में सबसे लोकप्रिय फसल त्यौहारों में से एक है। उत्सव की प्रमुख परंपराओं में से एक कोलम पोंगल का चित्रण करना है जो फसल उत्सव है, और इसलिए लोग अपने घरों को पोंगल कोलम से सजाते हैं। पोंगल कोलम आमतौर पर कई अलग-अलग रंगों में बनाए जाते हैं। इसे फूलों, चावल के आटे या रंगों से सजाया जा सकता है। पोंगल अनुष्ठान में मिट्टी के बर्तन का बहुत बड़ा महत्व है। यह समृद्धि का प्रतीक है और ज्यादातर कोलम में खींचा जाता है क्योंकि इसे सौभाग्य का प्रतीक माना जाता है।

पोंगल से जुड़ी अगली चीज गन्ना है। गन्ना मन और पाँच इंद्रियों का प्रतिनिधित्व करता है। ऐसा माना जाता है कि यह पाँच बुरी चीजों को नियंत्रित करता है: काम, क्रोध, लोभ, अभिमान और ईर्ष्या।

**चरण 1:** कोलम बनाने के लिए आपको एक सपाट सतह की आवश्यकता होगी। उपयोग की जाने वाली सामग्री चावल का आटा है क्योंकि सभी भारतीयों के लिए चावल समृद्धि का प्रतीक है। इन दिनों बारीक पिसा हुआ सफेद पत्थर का चूरा, चाक या रंगोली रंगों का भी प्रयोग किया जाता है। यह लगाने में आसान है और कोलम को उज्जवल और अच्छी तरह से तैयार करता है। कागज पर कोलम बनाते समय, आप एक स्केल और पेंसिल का उपयोग करके समान दूरी वाले बिंदु बना सकते हैं।

चॉक का उपयोग करके समतल सतह पर समान दूरी वाले बिंदु बनाकर कोलम बनाना शुरू करें। 7 समानांतर बिंदुओं वाली सात रेखाएँ बनाएँ।

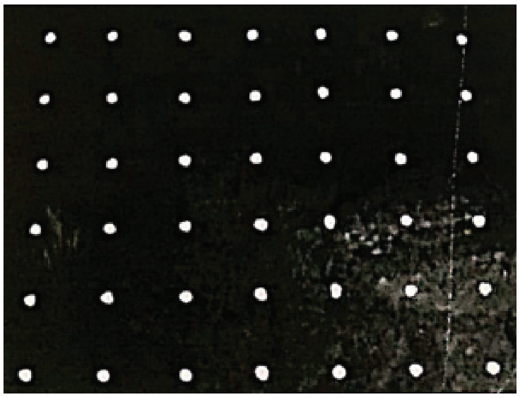

चित्र 7.11

**चरण 2:** सबसे पहले बर्तन बनाते हैं। सभी क्षैतिज रेखाओं को मिलाएं। फिर नीचे दिखाए गए चित्र के अनुसार रेखाओं को वक्र करें। साथ ही, बीच के निचले हिस्से में 4 क्रॉस बनाएं।

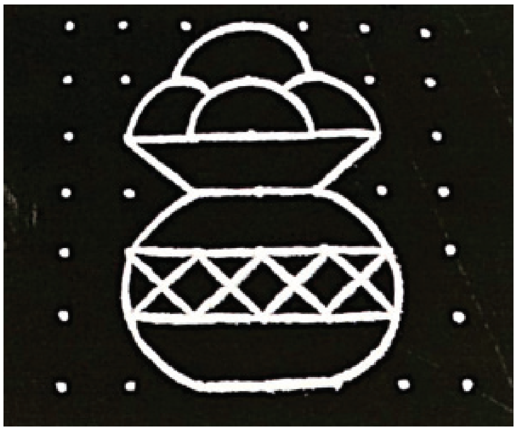

चित्र 7.12

**चरण 3:** अब, हम बर्तन के दोनों तरफ गन्ना डालेंगे। सबसे पहले, क्षैतिज और लंबवत रेखाएँ खींचें और फिर पत्तियाँ बनाएँ।

चित्र 7.13

**चरण 4:** अंत में, बर्तन के चारों ओर अन्य चिन्ह बनाएं। यहां, हमने सूर्य और फूलों का अंकन किया है। सूर्य और फूल प्रकृति के साथ मनुष्य के संबंध का प्रतीक हैं।

इसके बाद, ज्यामितीय आकृतियों का उपयोग करके कुछ और डिजाइन तत्व जोड़ें और रंग जोड़ने के लिए आप रंगोली के रंगों, रंगीन चावल या फूलों की पंखुड़ियों का उपयोग कर सकते हैं। चित्र को सुंदर बनाने के लिए इस चरण में रचनात्मक बनें।

चित्र 7.14

## आपने क्या सीखा

**कोलम की डिजाइन** →

- जमीन डिजाइन
- घर के सामने
- केरल कोमल पाँच रंगों में तैयार करते हैं
- समृद्धि और उर्वरता का प्रतीक
- डॉट्स कुंडलम किरीतम रूपांकनों का प्रयोग किया जाता है
- पहले चित्र की रूपरेष तैयार की जाती है
- फिर आकृति रंगों से भरे जाते हैं

## पाठांत प्रश्न

1. उन स्थानों/राज्यों के नाम बताइए जहां कोलम/कलम ड्राइंग का अभ्यास किया जाता है।
2. कोलम किस प्रकार के पाए जाते हैं? सामाजिक-सांस्कृतिक संदर्भ में उनके महत्व की व्याख्या करें?
3. कलम को चित्रित करने में किस प्रकार की सामग्री और रंगों का उपयोग किया जाता है?
4. कोलम में प्रयुक्त कुछ महत्वपूर्ण रूपांकनों की पहचान करें।
5. कुछ महत्वपूर्ण बुनियादी तकनीकों की पहचान करें जो कोलम को चित्रित करने में लागू होती हैं
6. भद्रकाली कोलम कैसे खींचा जाता है? आकृति बनाने में उठाए जाने वाले प्रमुख कदमों की पहचान करें।
7. केरल के कुछ महत्वपूर्ण समुदायों के नाम बताइए जो परंपरागत रूप से कोलम अनुष्ठान में लगे हुए हैं?
8. कोलम को रंगने के लिए किन रंगों का इस्तेमाल किया जाता है और ये रंग कैसे तैयार किए जाते हैं?

### शब्दावली

आलावट्टम : आभूषण जो कुंडलम के चारों ओर सजाता है

भद्रकाली : देवी जिसने राक्षस दारिका का वध किया

चिलम्बु : पायल

चित्रावतीवु : एक अतिरंजित तरीके से खींची गई देव आकृति

चुननम्बु : क्विकलाइम

दारिका : भद्रकाली द्वारा मारा गया राक्षस

किरीतम : (क्राउन) मुकुट

कोरालाराम : हार

पुलुवा : एक जाति समाज

कलामेझुट्टू : केरल की पुष्प चित्रण परंपरा

कुरुप्पु : एक जाति समाज

## कोलम (केरल में कलम)

कुंडलम : कान की सजावट

नागा : नाग देवता/देवी

नजोरी : पोशाक के सामने के हिस्से में दो हिस्से

नंबूदिरी : दक्षिण भारतीय समाज की एक जाति

पंचवर्णम : कलामेझुत्तु में पाँच रंगों का प्रयोग किया जाता है। वे काले, सफेद, लाल, पीले और हरे हैं;

पंडाल : चार कोनों में चार खंभों वाली एक अस्थायी संरचना और सपाट छत पर आमतौर पर नारियल के पत्तों के साथ छप्पर और नीचे एक लाल कपड़ा फैला होता है।

पुलुवा : एक जाति समाज

पीठाक्कलु : देव के पैर

तिरुमुडी : मुकुट

वाका : बबूल

विष्णुशम : मुकुट और माथे के बीच में पहना जाने वाला आभूषण।

टिप्पणियाँ

# 8

# माँडणा

पिछले पाठ, में आपने कोलम लोक कला के विषय में पढ़ा। इस पाठ में आप माँडणा लोक कला के विषय में सीखेंगे। माँडणा राजस्थान एवं मध्य प्रदेश की एक पारम्परिक लोक कला है, जो धरती पर बनाई जाती है। यह प्राय: घर के बाहर, दीवार के साथ लगे आंगन में अथवा कोनों में बनाई जाती है। माँडणा भूमि चित्र है, इन्हें भूमि अलंकरण भी कहते हैं। ये प्राय: गोबर से लीपी हुई जमीन पर गेरू और खडिया से बनाये जाते हैं। इनको बनाने के लिए शुभ अवसर, त्योहार जैसे दशहरा, दीपावली, होली आदि पर्व-त्यौहार हैं। इन्हें केवल महिलाएँ ही बनाती हैं। माँडणा का शाब्दिक अर्थ माँडने अथवा बनाने से है, लेकिन लोककला में 'माँडणा' केवल बनाने के अर्थ में प्रयुक्त नहीं होता, बल्कि माँडणा लोक चित्रकला परम्परा में एक विधा, एक शैली के रूप में प्रचलित है। आदिम समय से लेकर आज तक माँडणा घर-आँगन की सुन्दरता बढ़ाते आया हैं। इनमें धरती को सजाने-संवारने का भाव निहित है। माँगलिक अवसरों, पूजा-अनुष्ठान, पर्व त्यौहारों के आगमन यज्ञादि पर चावल के पीठे, जुवार के आटे, हल्दी-कुंमकुम, गेरू-खडिया, पत्थर के सफेद और रंगीन चूर्ण और मिट्टी रंगों से माँडणे बनाये जाते हैं। मुख्य रूप से माँडणा गेरू और खडिया से ही बनाया जाता है।

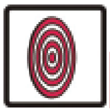

## उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने एवं अभ्यास करने के बाद, आप :

- माँडणा कला को जान पायेंगे;
- माँडणा कला के महत्त्व के बारे में सीख पायेंगे;
- देश के विभिन्न अंचलों में माँडणा किन नामों से जाना जाता है और उनमें अन्तर के बारे में परिचित होंगे;
- माँडणा बनाने की विधि, माध्यम और शैली को समझ सकेंगे;
- माँडणों में प्रयुक्त विभिन्न अभिप्रायों के अर्थ जान सकेंगे;
- सबसे महत्वपूर्ण यह कि माँडणों को सहजता से बनाना सीख सकेंगे।

## 8.1 समान्य परिचय

माँडणों में मुख्य रूप से फूल, पत्ते, बेल बूटे, पशु-पक्षियों के साथ ज्यामितिक आकृतियाँ अधिक बनाई जाती हैं। फूलों में कमल का फूल, त्रिभुज, चतुर्भुज, वृक्ष तथा आड़ी-खड़ी रेखाएँ प्रमुखता से बनाई जाती हैं। ये घर की शुभता को प्रकट करते हैं। सारे भारत में माँडणा-परम्परा का चलन है। राजस्थान तथा मध्यप्रदेश में इन्हें 'माँडणा', उत्तरप्रदेश में चौक पुराना, बंगाल में 'अल्पना',, गुजरात-महाराष्ट्र में 'रंगोली', बिहार में 'अरिपन' दक्षिण में 'कोलम' कहा जाता है। इन सबके नाम, माध्यम और बनाने के तरीके बिल्कुल अलग-अलग हैं, परन्तु, ये सब जमीन पर ही बनाये जाते हैं।

माँडणा प्राय: घर-सज्जा और अनुष्ठान की पूर्ति के लिए बनाये जाते हैं। ये मंगल सूचक हैं और घर-आँगन को सौन्दर्य से भर देते हैं। इनको देखने मात्र से ही मन खुशी और आनन्द से भर उठता है। इनके रहने से बाहरी बाधाओं का घर में प्रवेश नहीं होता। इनसे अतिथियों का स्वागत और देवी-देवताओं का आह्वान करते हैं। इन्हें महिलाएँ पर्व-त्यौहारों पर अपने हाथों से बनाती हैं।

हम यहाँ केवल गेरू और खड़िया से बनाये जाने वाले 'माँडणा' के बारे में जानकारी हासिल करेंगे।

इनमें आकारों यानी अभिप्रायों की संख्या सबसे अधिक होती है। हर अंचल के माँडणा अभिप्राय संस्कृति के अनुरूप प्राय: अलग-अलग हैं, जिससे उनकी पहचान बनती है। ये पर्व-त्यौहार, अनुष्ठान, स्थान और अवसर विशेष पर मिलते हैं। जैसे दीपावली पर महालक्ष्मी के रथ का माँडणा, देव प्रबोधिनी एकादशी का माँडणा और मकर संक्रान्ति का माँडणा आदि। माँडणों का मुख्य पर्व दीपावली है, जिसमें घर-आँगन के कोने-कोने में माँडणा बनाये जाते हैं।

- माँडणों के मुख्य स्थान
  1. गोबर से लिपा-पुता आँगन एवं तुलसी के आस-पास।
  2. दरवाजे के बाहर, बेदियाँ, चबूतरे।
  3. चौखट के बाहर और भीतर।
  4. देवघर के आस-पास।
  5. घर के कोने।
- माँडणा बनाने के अवसर-माँगलिक समारोह, पर्व त्यौहार, नया घर बनने और लीपने के पश्चात।

## 8.2 पारम्परिक माँडणा अभिप्राय

अब हम विभिन्न प्रकार के पारम्परिक माँडणा मोटिफ सीखेंगे।

### 1. पगल्या ( पदचिह्न ) माँडणा

पगल्या का अर्थ पदचिह्न से है। ये पदचिह्न आगमन के प्रतीक हैं। भारतीय संस्कृति में पैर-पूजने की परम्परा है। ये पैर, देवी-देवता, पूर्वज, अतिथि और पराशक्तियों के आगमन का मार्ग प्रशस्त

करती है। इसी उद्देश्य से प्रत्येक घर में पगल्या का माँडणा बनाया जाता है। यह माँडणा चौखट के बाहर-भीतर, देवस्थान, सीढियों आदि पर बनाये हैं। इसे 'लक्ष्मी-विष्णुजी के पग' भी कहा जाता है। दीवाली पर लक्ष्मी पूजा में पगल्या माँडणा घर के प्रवेशद्वार की सीढियों से लेकर लक्ष्मी पूजा के स्थल तक बनाये जाते हैं। इसमें दोनों पैरों के निशान बनाये जाते हैं। चौखट में इन्हें जोड़ी के साथ और आगे बढ़ते हुए एक-एक पैर के रूप में बनाया जाता है। दीपावली पर यह एक अनिवार्य माँडणा है।

### 2. लक्ष्मीजी का रथ माँडणा

लक्ष्मीजी के रथ का माँडणा दीपावली या अमावस्या को लक्ष्मीपूजन की जगह बनाया जाता है। इसमें लक्ष्मी का वास होता है। इसमें सोलह चौकोर खाने बनाये जाते हैं, जिनमें सोलह जलते दिये लगाये जाते हैं। इस चौखाने को चार पँखुड़ी के कमल फूल से सजाया जाता है, छल्ले और कंगूरे बनाकर अलंकृत किया जाता है। इसी के साथ 'देवी ज्योत' का माँडणा भी बनाया जाता है, जो 'दीपक' के प्रकाश का प्रतीक होता है। समीप ही आठपँखुड़ी का कमल फूल और अन्य शुभंकर माँडणे भी उकेरे जाते हैं। कमल फूल पर लक्ष्मीजी विराजती हैं।

### 3. चार पँखुड़ी फूल माँडणा

माँडणा कला में प्रमुख रूप से कमल फूल का अंकन किया जाता है। इसमें चार पँखुड़ी, छह पँखुड़ी और सोलह पँखुड़ी तक के कमल फूल बनाये जाते हैं। अधिकतर चार पँखुड़ी और आठ पँखुड़ी के कमल फूल माँडणा हर जगह मिल जाते हैं। कमल की चार पँखुड़ी माँडणा बनाने में पारम्परिक विधि और रंगों का प्रयोग किया जाता है। माँडणे के आसपास कई तरह के अलंकरण अभिप्राय बनाकर उसे सजाया जाता है। छः पँखुड़ी माँडणा घर, आँगन या देवस्थान आदि में बनाया जा सकता है। माँडणा सदैव पँखुडियों पर विस्तरित होता है, जो सृष्टि के विस्तार का प्रतीक होता है।

### 4. अठपँखुड़ी का फूल माँडणा

माँडणा कई पर्व-त्यौहारों पर, पूजा-पाठ और अनुष्ठानों के अवसरों पर बनाये जाते हैं। इन अवसरों में मकर संक्रान्ति, देव शयनी-देवउठनी ग्यारस, होली आदि हैं। इनमें विशेषकर कमल का अठपँखुड़ी फूल माँडणा ही बनाया जाता है। अभ्यास 2 में दर्शाया माँडणा अठपँखुड़ी कमल का माँडणा है। इसे घर, आँगन और देवस्थान की जगह पर छोटे-बड़े आकार में बनाया जा सकता है। कमल माँडणा कला का सबसे लोकप्रिय और महत्त्वपूर्ण अभिप्राय है।

### 5. चौखट माँडणा

चौखट माँडणा घर के मुख्यद्वार के भीतर बनाया जाता है। इसका मुख्य उद्देश्य देवी-देवताओं का आह्वान है, देवताओं का स्वागत है, घर में शुभतया का स्वागत करना और बाधाएँ दूर करना है। चौखट को सजाना भी इसका सौन्दर्यात्मक उद्देश्य है।

चौखट माँडणा कई तरह से बनाया जाता है। प्राय: इसका रूप त्रिभुजात्मक होता है। दीपावली पर चौखट माँडणा हर घर में बनाया जाता है। इसका स्थान निश्चित है, इसे अन्य और किसी जगह नहीं बनाया जाता है।

चित्र 8.1: पारम्परिक मोटिफ

## 8.3 माँडणा बनाने हेतु आवश्यक सामग्री

- ड्राइंग बोर्ड
- पैंसिल
- स्केल
- 3, 5, 7, एवं 12 नम्बर के गोल ब्रुश
- सफेद, ब्राउन, नीला पोस्टर कलर
- प्लास्टिक का छोटा मग
- ड्राइंग पिन
- रबर
- ड्राइंग शीट या हार्ड बोर्ड
- गेरु
- फैवीकॉल

## 8.4 माँडणा बनाने की परम्परिक विधि

शिक्षार्थियों, आपने माँडणा के पारम्परिक अभिप्रायों के विषय में सीखा। अब माँडणा बनाने की पारम्परिक विधि सीखते हैं।

**प्रथम चरण : भूमि तैयार करना:** सबसे पहले घर-आँगन को गोबर और पीली मिट्टी के घोल से लीपकर माँडणों के लिये भूमि तैयार की जाती है। यह कार्य घर की महिलाएँ करती हैं।

**द्वितीय चरण : रंग तैयार करना:** गेरू और खडिया का बारीक चूर्ण बनाकर उनका अलग-अलग कटोरियों में थोड़ा गाढ़ा घोल लिया जाता है। स्थायित्व के लिये इन रंगों में घिसा हुआ गोंद अथवा फैवीकोल मिलाया जाता है। गेरूवे अथवा लाल रंग के लिये कहीं हिरमची का भी उपयोग किया जाता है। सफेदी के लिये कहीं-कहीं चूने को भी काम में लेते हैं, जिसमें नील या नीला रंग मिला दिया जाता है, जिससे माँडणा नीली रूप देते हैं। चूने से ऊँगलियाँ कट जाती हैं, इसलिए आजकल इसका उपयोग कम ही होता है।

**तृतीय चरण : माँडणा बनाना:** माँडणा प्राय: महिलाएँ बनाती हैं। महिलाएँ माँडणा बनाना बचपन में अपनी माताओं से सीखती हैं। माँडणा बनाने की लोक कला इसी परम्परा की देन है। माँडणा बनाने के लिए किसी प्रकार की कूँची या ब्रश का उपयोग नहीं किया जाता, वरन् हाथ की ऊँगलियाँ ही कूँची का काम करती हैं। ऊँगलियों और अँगूठे के बीच रंग में भिगोयी रूई के फाये अथवा कपड़े की चिन्दी को रखकर अनामिका ऊँगली से माँडणा की रेखाएँ धरती पर खींची जाती हैं। गेरू की रेखाओं से माँडणा का मूल आधार या खाका तैयार किया जाता है। इसके पश्चात् खड़िया के श्वेत घोल की रेखाओं से लाल रेखाओं के भीतर और बाहर के भाग को आवश्यकता और आकृति के अनुरूप भर दिया जाता है। माँडणा के मूलाधार को सफेद रंग से परिपूरित करना सबसे महत्वपूर्ण और कठिन कार्य है। इसे 'भरत' कहा जाता है। भरत भर जाने के बाद पूरा माँडणा खिल उठता है।

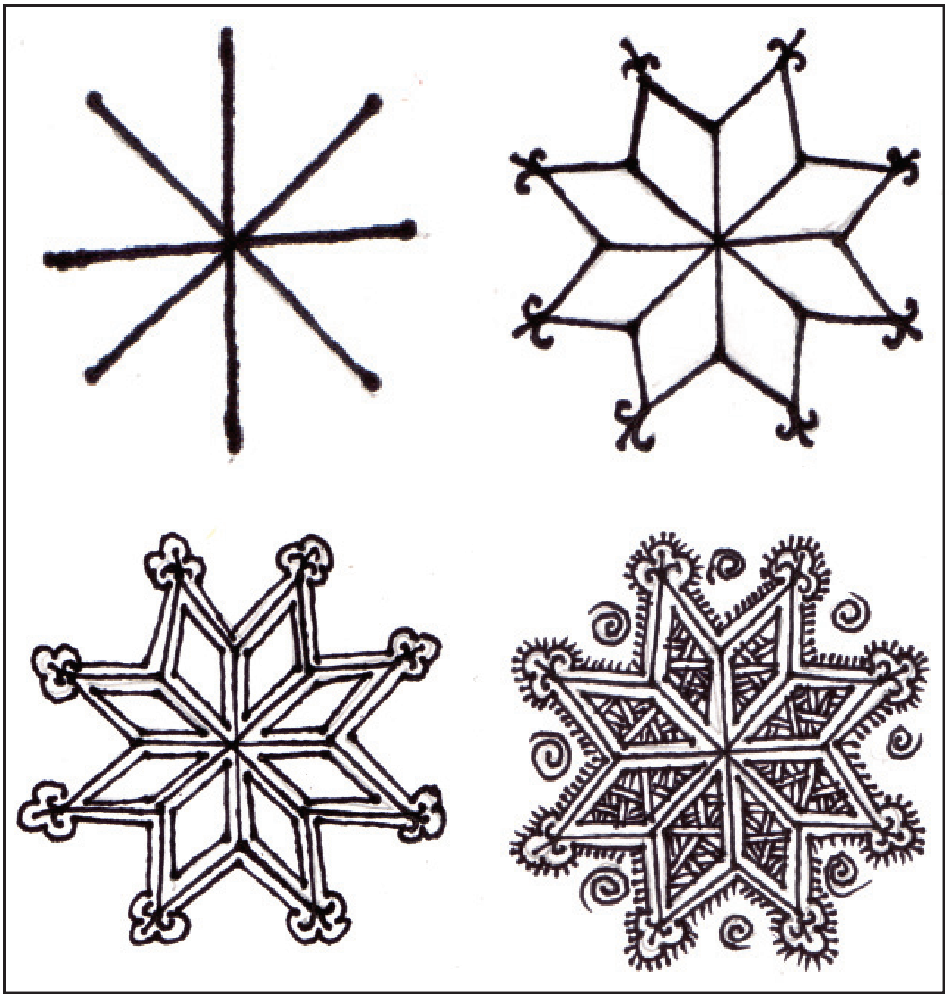

चित्र 8.2

1. सबसे पहले भूमि को गोबर से लेपन करें अथवा गोबर रंग की कोई गहरी शीट लें।
2. माँडणा बनाने के लिये हाथ की ऊँगलियों अथवा कूँची या ब्रुश का उपयोग किया जा सकता है।

3. एक कटोरी में खड़िया तथा दूसरी कटोरी में गेरू का गाढ़ा घोल तैयार कर लें।
4. हाथ की ऊँगलियों और अँगूठे के बीच गेरूवे रंग में भिगोये रूई के फाये या चिन्दी को रखें या ब्रुश रखें।
5. फिर अनामिका ऊँगली के सहारे माँडणे की मूल रेखाएँ खीचें। यह कार्य कागज पर ब्रुश के सहारे कमल का माँडणा बनाने के लिए किया जाये।
6. एक बिन्दु पर चार या छः आड़ी-खड़ी रेखाऐं काटते हुए खीचें। फिर ऊपर की ओर त्रिकोण में सारी रेखाओं को दिये चित्र के अनुसार मिला दें। इस प्रकार कमल के फूल की आकृति बना लें।
7. त्रिकोणों के शीर्ष पर नीचे दिये चित्र के अनुसार छल्ले बना दें।
8. हाथ धो लेने के बाद खड़िया के घोल में भिगोया फोया हाथ में रखें। फिर कमल फूल को भीतर और बाहर सफेद रेखा से घेर दें।
9. बाहर की सफेद रेखा पर खड़ी या तिरछी छोटी रेखाएँ खीचें।
10. अन्दर के सफेद खानों में आड़ी और खड़ी 'भरत' भरें।
11. माँडणों के आसपास छोटे-छोटे अभिप्रायों को उकेरें।
12. आवश्यकतानुसार माँडणा की आकृति बढ़ाई जा सकती है।

## प्रायोगिक अभ्यास 1

अब हम माँडणा कला का चित्रण करना सीखते हैं।

**प्रथम चरण :** सबसे पहले हम अपने धरातल अथवा चित्रभूमि पर पेंसिल से माँडणा का प्रारूप बना लेते हैं। भूमि पर यदि हमें बनाना हो तो हम चौक से या चौक पउडर से भी प्रारूप बना सकते हैं, जैसा कि चित्र में दिखया गया है।

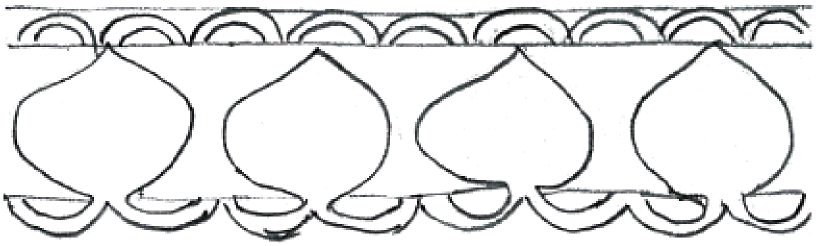

चित्र 8.3

**द्वितीय चरण :** नीचे दिए चित्र के अनुसार हम चित्र भूमि को गेरू से या पीली मिट्टी से फ्लैट ब्रश से एक सपाट रंग लगाते हैं। इस रंग में पानी की मात्रा ज्यादा होती है, जिससे कि हमारी ड्रांइग रंग भरने के बाद भी नीचे से दिखाई देती रहे। इसके पश्चात् सफेद खड़िया या पोस्टर रंग से चित्र के अनुसार सफेद सीधी लाइन तथा अर्धवृत्ताकार कंगुरे बना लेते हैं।

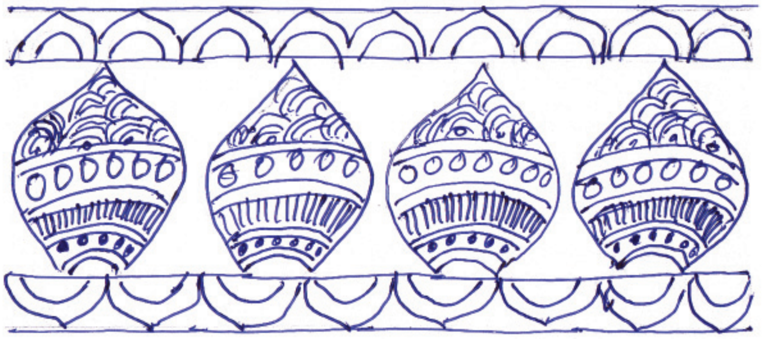

चित्र 8.4

**तृतीय चरण :** नीचे दिए चित्र के अनुसार सभी कंगुरे बनाने के बाद इन कंगुरों के ऊपर थोड़ी जगह छोड़कर फूल के पत्ती की भाँति आकृति बना लेते हैं। इसके पश्चात् कंगुरे के दूसरी तरफ कमल के फूल की पत्ती या शंख के आकार की आकृति को बना लेते हैं।

चित्र 8.5

**चतुर्थ चरण :** अब हम इन शंख की आकृतियों को पूरे चित्रतल पर रेखा के साथ-साथ चित्रित कर लेते हैं। जिस प्रकार के कंगुरे हमने एक तरफ बनाऐ थे, वैसे ही कंगुरे हम दूसरी तरफ भी बना लेते हैं। इसके पश्चात् शंखनुमा आकृति को तिरछी या क्षैतिज रेखाओं से तथा वृत्ताकार रेखाओं को भर कर शंख को अलंकृत कर लेते हैं, जिससे वह बहुत सुन्दर हो जाता है। यह माँडणा हम घर की देहरी तथा दरवाजे के अन्दर तथा बाहर की तरफ बना लेते हैं, जो चौखट माँडणा के नाम से प्रसिद्ध है।

चित्र 8.6

## प्रायोगिक अभ्यास 2

अब हम दूसरी तरह के माँडणा चित्र बनायेंगे।

यह माँडणा घर के केन्द्रिय भाग, घर के आंगन में अथवा चौक में बनाया जाता है। इस माँडणा में एक आठ पंखुड़ी वाला ज्यामितीय आकृति फूल बनाया जाता है। जिसे चार वृत्त घेरे हुए होते हैं। इन वृत्तों को हम पत्तियों तथा पुष्पों के द्वारा अलंकृत कर देते हैं।

**प्रथम चरण :** इस माँडणा को बनाने के लिए सबसे पहले एक केन्द्रिय बिंदु लेते हैं। इस केन्द्रिय बिंदु के चारों तरफ अलंकरण बनाया जाता है। इस केन्द्रिय बिंदु के चारों तरफ एक वृत्त बनाते हैं। इस वृत्त को मिलाते हुए चार रेखाएं एक दूसरे को काटते हुए बनाते हैं। इन रेखाओं को जब वृत्त से मिलाते हैं, तो आठ पत्तियों के पुष्प का निर्माण होता है। इस वृत्त के बाहर कुछ दूरी पर दूसरा बड़ा वृत्त बनाते हैं। इस वृत्त में चारों तरफ से अन्दर की तरफ तीन पत्तियों वाले पुष्प बनाते हैं। जैसा कि नीचे दिए गये चित्र में बनाया गया है। इन वृत्त के बाहर फिर एक बड़ा वृत्त बनाते हैं। इस वृत्त में 16 पत्तियाँ बनाते हैं। इस पत्तियों के बीच में 16 फूल भी बनाते हैं।

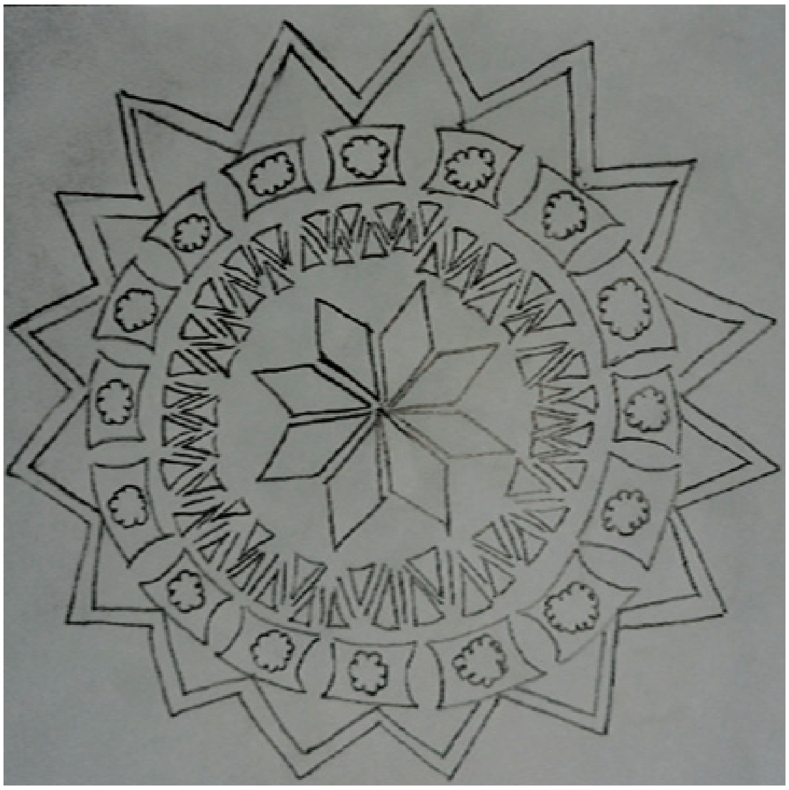

चित्र 8.7

**द्वितीय चरण :** इसके पश्चात् वृत्त के चारों तरफ 16 त्रिभुजाकार की पत्तियाँ तथा इन पत्तियों के बाहर कुछ दूरी छोड़कर बाह्य रेखा बनाते हैं। अब हमारा आठ पंखुड़ी के फूल और 16 पत्तियों वाला माँडणा तैयार हो जाता है।

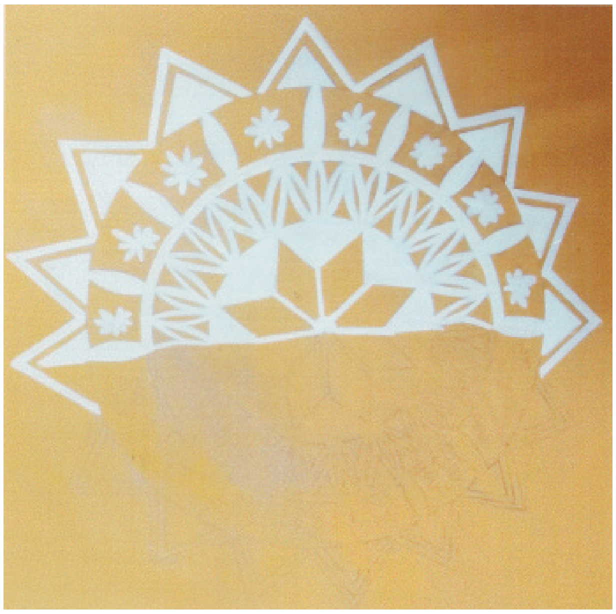

चित्र 8.8

**तृतीय चरण :** इस माँडणे को रंगने के लिए हम इसे चार भागों में विभाजित करके सबसे पहले एक भाग को सफेद पोस्टर रंग से या खड़िया रंग के ब्रुश की सहायता से सीधी तथा वृत्ताकार रेखायें खींच लेते हैं।

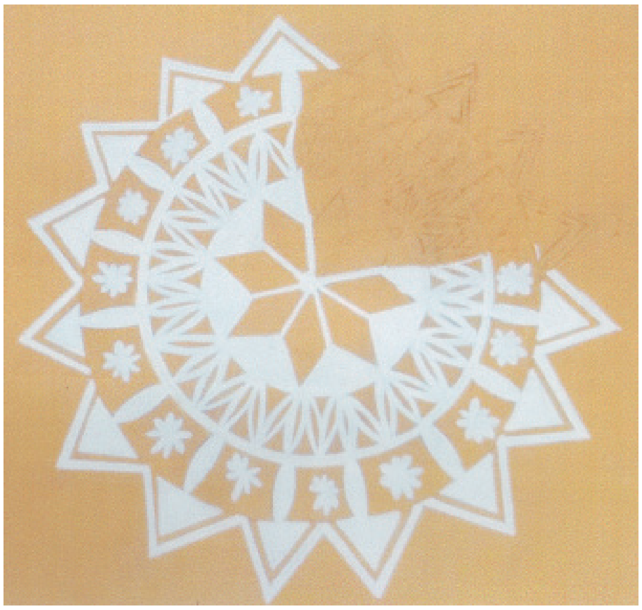

चित्र 8.9

जिस प्रकार से हमने 1/4 भाग को पेन्ट की सहायता से बनाया, उसी प्रकार पुनरावृत्ति करते हुए आधे भाग को बना लेते हैं। आधे भाग के बन जाने के पश्चात् हमें फूल की चार पत्तियाँ दिखाई

देने लगेंगी तथा माँडणा का आधा भाग हमें दिखाई देने लगेगा। यदि हमें दीवार से लगता हुआ कोई अलंकरण बनाना हो, तो वह इस प्रकार से दिखाई देगा।

**चतुर्थ चरण :** बचे हुए 1/4 हिस्से के लिए भी यही विधि दोहरायें। माँडणा के आखिरी भाग को बनाने के पश्चात हमारा माँडणा पूरा वृत्त रूप में आठ पंखुड़ियों वाला फूल तथा 16 पत्तियों वाला बाहरी वृत्त तथा उसमें 16 छोटे-छोटे पूरे खिले हुए कमल के पुष्प दिखाई देगा। इस माँडणे को हम जितना चाहे आगे इसी तरह से वृत्त बना-बना कर फैलाते चले जाएेंगे।

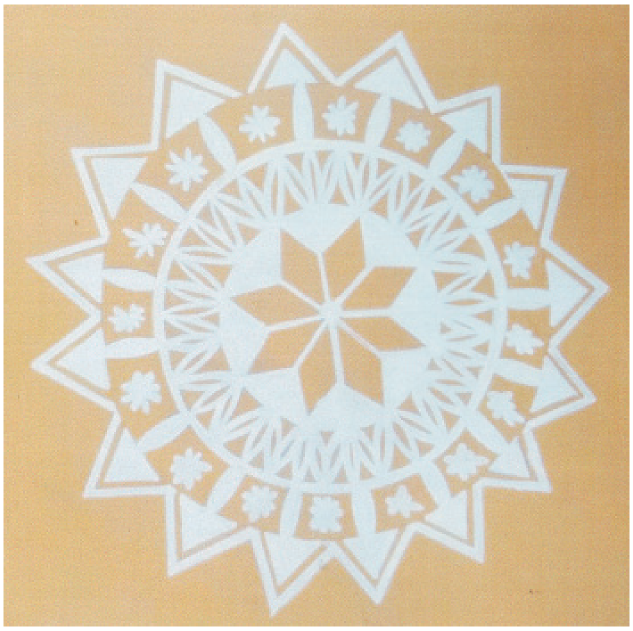

चित्र 8.10

## प्रायोगिक अभ्यास 3

अब हम एक और माँडणा का चित्रण करना सीखेंगे।

**प्रथम चरण :** किसी भी माँडणा को चित्रित करने के लिए हम उस माँडणा के केन्द्र से रेखाओं के माध्यम से प्रारम्भ करते हैं। एक केन्द्र बिन्दु लेकर उसके चारों तरफ कुछ दूरी पर छः बिन्दु लेते हैं। इन बिन्दुओं को हम केन्द्र से सीधी मिलाते हुए रेखा लेकर दो त्रिभुज बनाते हैं। इनके चारों तरफ 12 त्रिभूजों का निर्माण करते हैं। नीचे दिए गए चित्र को देखें। अब यह छः पत्तियों के फूल की एक सुन्दर आकृति बन जाती है। इस फूल को घेरते हुए एक षट कोण की आकृति थोड़ा सा अन्तराल देते हुए बना लेते हैं। इस षटकोण के चारों तरफ छः त्रिभुज अन्दर की तरफ तथा छः त्रिभुज आकृतियां बाहर की तरफ जाती हुई बनाते हैं। बाहर वाले त्रिभुज के मुख्य कोने में दोनों दिशाओं में जाते हुए कंगुरे बना कर इस त्रिभुज आकृति को और आकर्षक बना लेते हैं।

इन कंगुरों के बीच में चार बिन्दु बना कर सुन्दर रूप देते हैं। हमने जो षटकोण बनाया था, उसके बाहर वाले कोणों से छः लम्बी कोणीय आकृतियां बना लेते हैं। इसके ऊपर एक गोल आकृति

बना लेते हैं। अन्त में ऊपर दो अर्धवृत्ताकार रेखाऐं खींच लेते हैं। इनमें बाहरी रेखा के ऊपर बाहर को जाती हुई किरणें जैसी रेखाएं बना कर एक सुन्दर चित्र का सृजन कर लेते हैं।

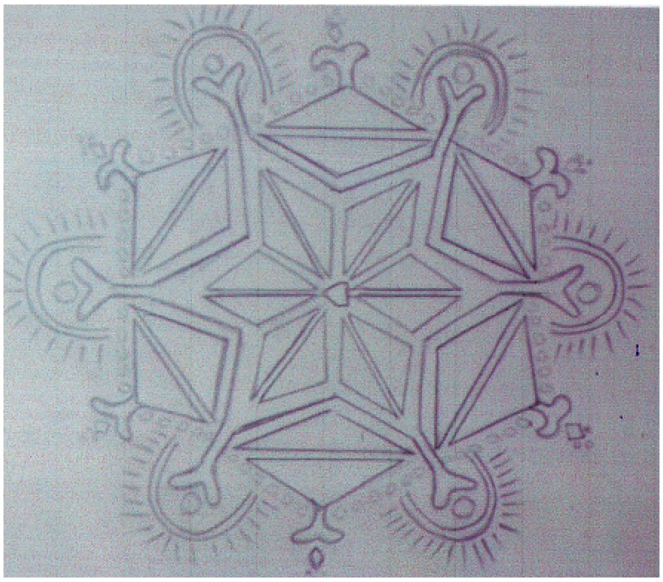

चित्र 8.11

**चरण 2 :** अब इस रेखांकित माँडणा में सफेद खड़िया या पोस्टर रंग से तुलिका के माध्यम से लाइनों को बना लेते हैं। कुछ त्रिभुज आकार वाली पत्तियों को सफेद रंग से भर देते हैं।

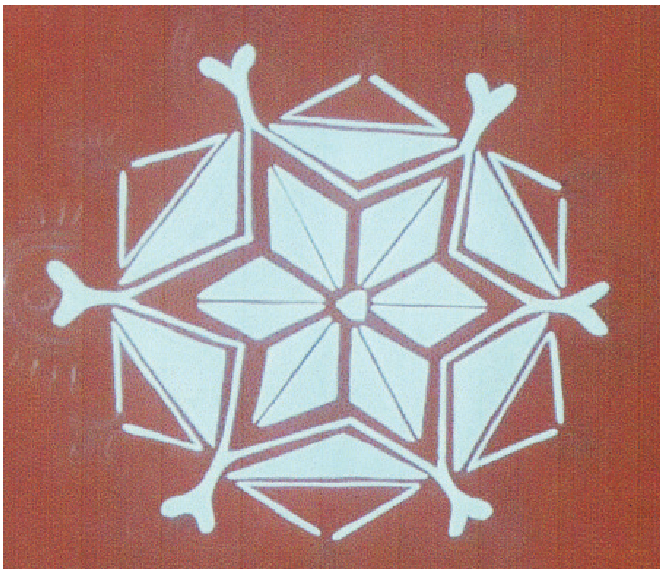

चित्र 8.12

**चरण 3:** इस माँडणा की चित्र भूमि के सफेद रंग के अतिरिक्त बाहरी हिस्सों को चारों तरफ घूमकर तुलिका से पूरा पेन्ट कर लेते हैं।

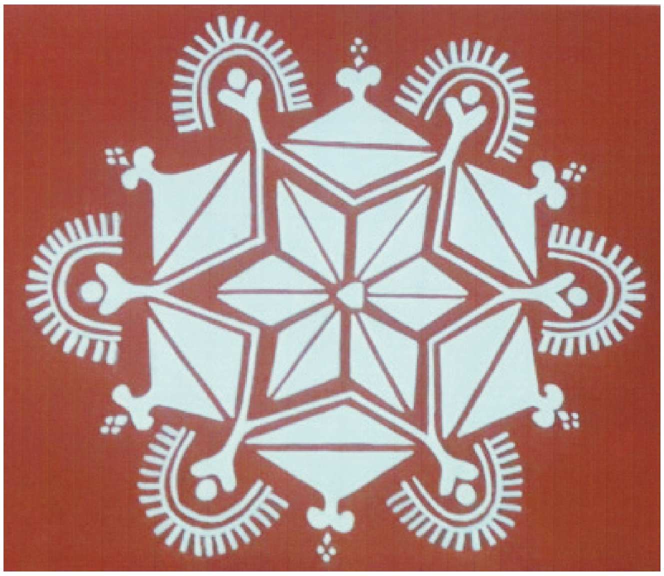

चित्र 8.13

## आपने क्या सीखा

**माँडणा**

- राजस्थान की लोक कला
- घर के आगन में बनती है
- गाय के गोबर से बनती है
- खड़िया और मिट्टी के लेप
- विशेष अवसरों पर बनता है
- पारंपरिक मोटिफ कमल
- मुख्यत: ज्यामितीय आकारों का प्रयोग
- घर की सुन्दरता बढ़ाता है

## पाठांत प्रश्न

1. चार पँखड़ी कमल का माँडणा बनाइयें।
2. अष्ट कमल दल का माँडणा बनायें।
3. सोलह पँखड़ी कमल दल माँडणा बनायें।
4. लक्ष्मी के रथ का माँडणा बनायें।
5. चौखट माँडणा पगल्या सहित बनायें।
6. माँडणा के महत्व पर टिप्पणी लिखिए।

टिप्पणियाँ



## शब्दावली

| | | |
|---|---|---|
| माँडणा | : | भूमि पर बनाये जाने वाले आलेखन |
| गेरू | : | मिट्‌टी लाल |
| खडिया | : | सफेद मिट्‌टी |
| चौखट | : | दरवाजे की चौखट की लकड़ी का नीचे का हिस्सा या घटक जो जमीन पर रहता है |
| अनामिका | : | सबसे छोटी उँगली के पास की उँगली |
| तुलसी क्यारा | : | आँगन में मिट्‌टी से बना चौकोर ऊँचा चौरा, जिस पर तुलसी का पौधा लगाया जाता है |
| हिरमची | : | मिट्‌टी का गहरा लाल रंग |
| पगल्या | : | पद चिन्ह माँडणा |
| साँतिया | : | स्वस्तिक |

## मॉड्यूल-5: चित्रों के अन्य माध्यम

9. कपडे पर बने चित्र
10. मिटटी के वस्तुओ पर बने चित्र
11. लकड़ी के वस्तुं पर बने चित्र
12. कठपुतली का निर्माण

9

# कपड़े पर चित्रकारी

अभी तक हमने कई तरह की लोक कला के विषय में जाना। आइये इस पाठ में हम कपड़े पर चित्रकारी कैसे होती है, इस कला की जानकारी लेते हैं।

कपड़ा प्राचीनकाल से ही चित्रकला के माध्यम के रूप में प्रयुक्त होता आया है। कपड़े की खोज के साथ-साथ उस पर चित्रों के अंकन की शुरूआत हुई। सबसे पहले तो मानव ने कपड़े को रंगना सीखा होगा और फिर उस पर रेखाओं या बुंदकियों से सज्जा करना जाना होगा।

## उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने एवं अभ्यास करने के बाद, आप :

- कपड़े पर चित्रण के इतिहास का व्याख्या कर सकेंगे;
- कपड़े पर चित्र बनाने की विधि को वर्णन कर सकेंगे;
- विभिन्न प्रदेशों में प्रचलित कपड़े की चित्रकारी को पहचान कर सकेंगे;
- पटचित्रों या कपड़े पर चित्रण कर सकेंगे;
- कपड़े पर चित्रण के लिए उपयोग किए जाने वाले रंगों की पहचान कर सकेंगे।

## 9.1 सामान्य परिचय

कपड़े पर जो चित्र बनाए जाते हैं, उनको सामान्यतया 'पटचित्र' कहा जाता है और इन चित्रों को बनाने की विधि 'पटचित्रण' कहलाती है। 'पट' शब्द संस्कृत का है, जिसका सामान्य अर्थ वस्त्र, कपड़ा होता है। आधुनिक केनवास भी इसी का नाम है।

राजस्थान में लोक महापुरूषों देवनारायण और लोकदेवता पाबूजी के जीवन चरित्र पर फड़ों का निर्माण हुआ। इनके अलावा रामलला की फड़ में रामायण के प्रसंगों और कृष्णलला की फड़ में श्रीकृष्ण के जीवन पर आधारित प्रसंगों का चित्रण होने लगा। राजस्थान में भीलवाड़ा और इसी

जिले के शाहपुरा में वर्तमान में फड़ चित्रण का कार्य होता है। छीपा जोशी परिवार इस कार्य को करते हैं।

हर्षवर्धन के शासनकाल में रचित 'हर्षचरित' और आठवीं-नवीं सदी में लिखित 'कुवलयमाला कहा' और 'नीति वाक्यामृत' से पता चलता है कि साधु प्रवृत्ति के लोग अपने पास ऐसे पटचित्रों को रखते थे जिन पर स्वर्ग-नरक के सुख दुखों का चित्रण होता था। यम की यातनाओं वाला पट सुलोक पट होता था। भिक्षुक लोग इन चित्रपटों को लोगों को दिखाते थे और अपने जीवन में अच्छे आचरण करने पर जोर देते थे। ऐसे चित्रों को कुंडलित चित्रपट कहा जाता था।

पिछवाई से आशय है मंदिरों में मुख्य प्रतिमा के पीछे टांगा जाने वाला चित्रित परदा। देव पूजा के अर्थ में जो चित्रित पट प्रतिमा के पीछे लगाया जाता है, वह पिछवाई कहलाता है। वातावरण को उक्त देवता के जीवनकाल से जोड़ने के लिए उक्त परदे पर उस काल के विभिन्न प्रसंगों कहानियों, परिदृश्य, प्रकृति आदि को चित्रित किया जाता है। एक प्रकार से पिछवाई उस काल के स्वरूप को देव दरबार में बनाने का प्रयास है।

इस पाठ में कपड़े पर चित्रांकन की परंपरा और उसकी विधाओं का परिचय दिया जा रहा है। मुख्य रूप से श्रीकृष्ण की उपासना पर आधारित राजस्थान की पिछवाई कला, लोकदेंवता देवनारायण और पाबूजी के जीवन चरित्र पर आधारित फड़ कला एंव आंध्र प्रदेश की पारंपरिक कलमकारी लोकचित्र शैली पर प्रकाश डाला जा रहा है।

## 9.2 कपड़े पर चित्रकारी के पारम्परिक मोटिफ या अभिप्राय

आइये अब हम कपड़े पर की जाने वाली चित्रकला के पारम्परिक अभिप्रायों के विषय में जानें।

1. **लोकमहापुरुष :** देवनारायण और लोकदेवता पाबूजी का जीवन चरित्र, श्रीकृष्ण के जीवन पर आधारित प्रसंग आदि।

2. **श्रीकृष्ण नृत्य करते हुए :** महारास पिछवाई को दिखाने के लिए श्रीनाथजी को नृत्य में लीन दर्शाया जाता है।

3. **वाद्य यंत्र :** बांसुरी, शंख आदि।

4. **कदम्ब :** कदली (केला) के वृक्ष

5. गाय, कमल, मोर, मछली, कुल्हाड़ी बिच्छू आदि।

6. **दरबार का दृश्य :** पिछवाई में मुख्य प्रतिमा के पीछे टांगा जाने वाला परदा होता है। प्रतिमा के पीछे लगाया जाता है, इसलिए देवता के जीवनकाल से जोड़ने के लिए कुछ दृश्य बनाये जाते हैं। यह दृश्य प्रकृति का या दरबार का हो सकता है, जो उस काल की कहानियों को दर्शाता है।

7. **ज्यामितीय आकृतियां :** विभिन्न प्रकार की ज्यामितीय आकृतियों का प्रयोग होता है।

टिप्पणियाँ

बांसुरी

शंख

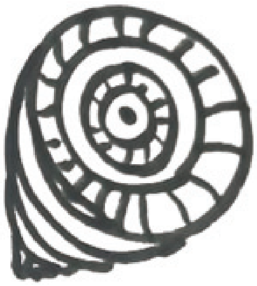

ज्यामितीय आकृतियां

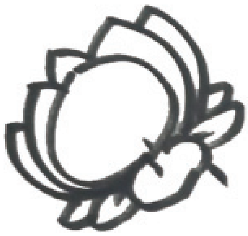

कमल

बर फुल के वृक्ष

कदली वृक्ष

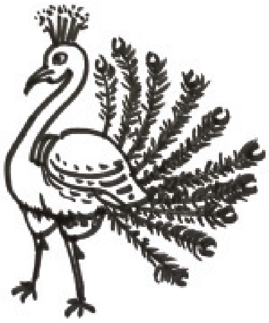

मोर

कुल्हाड़ी

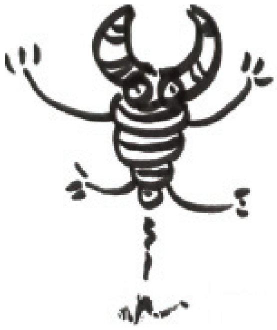

बिच्छू

मछली

पाबूजी

चित्र 9.1: पारम्परिक मोटिफ

## 9.3 कपड़े पर चित्रकारी हेतु आवश्यक सामग्री

- ड्राइंग बोर्ड
- ड्राइंग पिन
- पैंसिल
- रबर
- स्केल
- मारकीन कपड़ा
- 1, 3, 7 नम्बर के गोल ब्रुश
- पोस्टर रंग
- लेही या कलफ बनाने हेतु आटा, मैदा अथवा चावल का मांड़
- प्लास्टिक का मग
- रंग घोलने की प्लेट

### कपड़े पर चित्रण हेतु सतह अथवा चित्र फलक तैयार करना

- कोरे मारकीन के कपड़े से एक मीटर कपड़ा काट लें।
- अब 100 ग्राम मैदा अथवा आटे को छान कर उसे पानी में घोलकर उसे आग पर कुछ देर उबालें, इस प्रकार लेही तैयार हो जाएगी।
- इस लेही को एक छोटी बाल्टी में एक लीटर पानी में घोल कर उसमें मारकीन का कपड़ा कुछ देर भींगने दें।
- जब कपड़े पर लेही का घोल पूरी तरह चढ़ जाए तब उसे पानी ने निकाल कर बिना निचोड़े धूप में अच्छी तरह सुखा लें।
- कपड़े को सूखने के बाद समतल भूमि पर बिछाकर सीधा सपाट कर लें।
- अब इस कपड़े की सतह को कांच के गोल पेपरवेट या पत्थर के चिकने बट्टे से अच्छी तरह घिसाई करें जिससे वह समतल एवं चिकना हो जाए।
- अब चित्राकारी हेतु कपड़े की सतह तैयार है।

## 9.4 कपड़े पर चित्रण की पारम्परिक विधि

आपने कपड़े पर होने वाले चित्रण के पारम्परिक अभिप्रायों के बारे में जाना है। अब आप कपड़े पर चित्रण की पारम्परिक विधि सीखेगे।

फड़ निर्माण के लिए जिस कपड़े का उपयोग किया जाता है, वह थोड़ा मोटा और दरदरा होता है। ऐसे पांच से लेकर तीस फीट तक लंबे कपड़े पर चित्रकार लोकगाथा को चित्रित करता है। फड़ को तैयार करने की विधि निम्न प्रकार है।

जिस कपड़े को फड़ के लिए काम में लिया जाना हो, उस पर चावल के मांड का कलफ लगा दिया जाता है और उसे घोटे द्वारा खूब घोटा जाता है। इससे कपड़ा कड़क हो जाता है और उस

पर रंग फैल जाने की आशंका नहीं रहती है। कलफ सूखने पर चित्रों को चांका जाता है। रेखांकन को ही चांकना कहा जाता है। प्रायः कच्चे पीले रंग से चांकना होता है।

इसके बाद रंग भरने का कार्य किया जाता है। चित्रों के मुंह और शरीर में केसरिया रंग भरा जाता है। अन्य आवश्यकता के अनुसार क्रमशः पीला, हरा, कत्थई, हींगुल और नीला रंग भरकर पूरी फड़ चितेरी जाती है। फड़ कलाकारों द्वारा मूल, चटख रंगों का ही उपयोग किया जाता है। फड़ चितेरे रंगों में गोंद, सफेद मसूली आदि को मिलाकर प्रयोग करते हैं।

मुलायम बालों से तैयार कूंची से रंगों को भरा जाता है। कूंची को गाय, भैंस, बैल, बकरी और श्वान के बालों से तैयार किया जाता है। रंग भरने के बाद उनको चिकने पाषाण से 'घोटा' जाता है। यह विधि 'घुटाई' कही जाती है। फड़ में रंग पर भी घुटाई होती है। इस घुटाई से चित्रों में भरे गए रंगों में चमक आ जाती है, चित्र चमकते हैं।

### देवनारायण की फड़ : स्वरूप और प्रस्तुति

देंवनारायण राजस्थान के प्रमुख लोकदेवता हैं जो गुर्जरों के आराध्य हैं। इस फड़ में देवनारायण द्वारा अपने पितृपुरूषों के स्थान पर प्रतिशोध लेने के लए की जाने वाली लड़ाई का प्रसंग विस्तार से आता है और इसी आधाार पर उनके चरित्र को उभारा गया है। इस फड़ में मालेसर की डूंगरी पर देवनारायण का जन्म होना, मां साडू द्वारा उनको लेकर हीरा दासी के साथ मालवा जाना, मार्ग में शेरनी का दुग्धपान करना, नाग की रस्सी बनाकर पालना झुलाने, मालवा में ही उनके बचपन में चमत्कार दिखाने, मेवाड़ लौटकर खोखा पीर का वध करने, सोनियाणा का तालाब भरने, मांडल के अधूरे निर्माण कार्य पूरे करवाने और राणाजी से लड़ाई करने तक का जीवन वृतांत चित्रित होता है।

### महारास ( नृत्योसव )-पिछवाई

रास कि पूर्णिमा पर धारण करवाई जाने वाली पिछवाई महारास की पिछवाई कहलाती है। इस प्रकार की पिछवाई में श्रीनाथ जी को नृत्य में लीन दर्शाया जाता है और वे प्रत्येक चाहने वाले के साथ नृत्य करते, ये दिखा रहे हैं कि वे सबके लिए हैं। इसमें श्रीनाथ जी को बीच में खड़े व बांसुरी बजाते हुए दर्शाया गया है। दो-दो गोपियों को दोनों ओर खड़े दिखाया जाता है। इनको चारों ओर गोपियों के साथ नृत्य करते हुए दिखाया गया है। इसमें नीचे बाद्य यंत्र बजाती गोपियों को दिखाया गया है। सबसे नीचे पंक्ति में गायें को दर्शाया जाता है। ऊपर कदली, कदम्ब आदि के वृक्ष दिखाए गये हैं। ऊपर से देवी-देवताओं को रास का आनन्द लेते दिखाया है। आसमान स्वच्छ और तारों से परिपूर्ण और तीन ओर श्रीनाथ जी के 25 दर्शन का अंकन किया जाता है। महारास की द्वितीय पिछवाई बहुत बड़ी होती है। एक ही पिछवाई में श्री कृष्ण की विभिन्न लीलाओं को दिखाती है। ऊपर तारा आच्छादित रात में देवाताओं का विचरण है। बीच में रास, बांसुरी वादन से मुग्ध गोपियाँ, छेड़छाड़ और जल विहार जैसे दृश्य अंकित किये गये हैं। यह रास पंचाध्यायी प्रसंग का प्रतिनिधित्व करती है।

टिप्पणियाँ



## कलमकारी की विधि

कलमकारी आंध्रप्रदेश की चित्र शैली है। इसके केंद्र में दो प्रकार से चित्रांकन होता है। मछलीपट्टनम की कलमकारी में लकड़ी के छापों और कूंची का उपयोग किया जाता है। श्रीकालाहस्ती की कलमकारी में कलम और कूंची का उपयोग होता है। वनस्पति रंग दोनों ही शैलियों में प्रयुक्त होते है। मछलीपट्टनम परदे, बेडशीट्स, देवमंदिर केनोपी, आसन पिलो कवर और टेबल क्लॉथ के लिए प्रसिद्ध है लेकिन श्रीकालाहस्ति की कलमकारी पौराणिक आख्यानों के चित्रण के लिए मशहूर है।

कलमकारी के लिए सूती कपड़ा काम में लिया जाता है और उसे पहले तैयार किया जाता है। कलमकारी में लाल, काला, नीला, पीला, और हरा ये पांच रंग प्रयुक्त होते हैं। कई चित्र लाल और काले रंग से ही बनाए जाते हैं। इसमें जब पांचों रंगों का प्रयोग होता है तो चित्र सजीव हो उठते हैं। वैसे रंगों का प्रयोग कथा के प्रसंगों के अनुकूल ही होता है। परंपरानुसार गंभीर प्रसंगों को लाल रंग से ही बनाया जाता है।

कपड़ा तैयार हो जाने के बाद उस पर स्केच किया जाता है। इसके लिए इमली की पतली-पतली काढ़ियों को जलाकर चारकोल तैयार किया जाता है। इसे 'चिन्त बोग्यु' कहा जाता है। इसी से स्केच किया जाता है। इस प्रकार तैयार किए गए कपड़े पर जो चित्र खींचनाा हो, उसका स्वरूप बनाया जाता है।

इस प्रकार कलमकारी में रंग निर्माण, स्केच, रंग भरण, धोने, सूखाने, उबालने की बहुत जटिल प्रक्रिया है जिसमें कई दिन लग जाते हैं। इसी कारण कलमकारी के कलाकार बहुत धैर्य रखते हैं। यह रेखांकन की कला पर आधारित है, इसलिए इस कला में रेखाओं का ही बड़ा महत्व है।

## पछिवाई निर्माण की विधि

पिछवाई के लिए प्रारंभ में मोटा कपड़ा काम मे आता था किंतु बाद में पतले कपड़े का प्रयोग किया जाने लगा। इस कपड़े पर आंटे से तैयार लेई का कलफ लगाया जाता है। कपड़े के सूख जाने के बाद उसे समतल कर लिया जाता है, अब प्रारंभिक खाका बनाया जाता है। इसे कच्ची टिपाई कहते हैं। कच्ची टिपाई के सही बन जाने पर सिंदूर से पक्की टिपाई की जाती है। इस प्रकार चित्रांकन कि बाह्य रेखाएं बन जाती हैं।

इसके उपरांत सुनियोजित चित्रों में रेखाओं की सजीवता और सही रंगों का प्रयोग किया जाता है। पिछवाई के चित्रों, आकारों में रंगाकन हेतु प्राय: प्राकृतिक रंग उपयोग में लिए जाते हैं। कहीं-कहीं इनमें सोने, चांदी के रंगों का भी प्रयोग किया जाता है। सर्वप्रथम चित्रों में समतल रंग भरकर रेखाई की जाती है। इसके बाद इसमें छाया और प्रकाश का भाव दिखाया जाता हैं इससे प्रत्येक आकृति उभर जाती है।

नाथद्वार चित्रशैली में मूलत: छह रंगों का प्रयोग होता है। ये हैं लाल, पीला, सफेद, नीला, काला और हरा। इनमें काला रंग काजल से तैयार किया जाता है अन्य सभी रंग खनिजों से तैयार किए जाते हैं किंतु धीरे-धीरे बाजार में इनकी उपलब्धता हो गई।

श्रीनाथजी के मंदिर की पिछवाई सामान्यतया 11 फीट लंबी, 7' 6" ऊंची अथवा चौड़ी होती है।

## प्रायोगिक अभ्यास 1

इस अभ्यास में आप कुछ अभिप्रायों को चुन कर पटचित्र बनाना सीखेंगे। देव नारायण के पारम्परिक फड चित्र को ध्यान से देखें और इसके शैली, स्वरूप और रंग समायोजन का अध्ययन करें।

**प्रथम चरण :** सर्वप्रथम सूती कपड़े का 50 से.मी. कपड़ा लें और इस पाठ में पहले दी गई चित्रफलक तैयार करने की विधि के अनुरूप चित्रफलक तैयार करें।

चित्र 9.2

**द्वितीय चरण :** अब इस चित्र में से उन अभिप्रायों एंव चरित्रों का चयन करें, जिन्हें आप अपने चित्र में चित्रित करना चाहते हैं। चुने हुए अभिप्रायों एंव चरित्रों को आप किस प्रकार संयोजित करना चाहते हैं, उसकी कल्पना करें एंव मन में एक संयोजन निश्चित करें। जैसे नीचे दिए गए चित्र में दिखाया गया है। अब स्केल की सहायता से चित्र का बार्डर अथवा हाशिया बना लें। अब पैंसिल की सहायता से चित्र में बनाई जाने वाली आकृतियों का स्थाान निश्चित करते हुए उनका हल्का रेखाचित्र बनाएं। अब प्रत्येका चित्रित आकृति का स्पष्ट आलेखन करें।

चित्र 9.3

**तृतीय चरण :** इसके उपरान्त चित्रित आकृतियों में तीन नम्बर के ब्रुश की सहायता से रंग भरना आरंभ करें। रंग उसी योजना के अनुसार भरें जैसे कि ऊपर देवनारायण फड़ के मूल चित्र में देख रहे हैं। पहले चित्रित आकृतियों के शरीर में हल्के सपाट रंग भरें तदुपरान्त गहरे रंग भरें।

चित्र 9.4

**चतुर्थ चरण :** अन्त में एक नम्बर ब्रश की सहायता से काले रंग से प्रत्येक आकृति की बाह्यरेखा चित्रित करें। चित्र में यदि कोई दाग-धब्बे हों तो उन्हें रबड़ से मिटा दें।

चित्र 9.5

- अब आपका चित्र तैयार है।

## प्रायोगिक अभ्यास 2

अब आप कपड़े पर महारास पिछवाई चित्र तैयार करेंगे।

**प्रथम चरण :** सबसे पहले सूती मारकीन कपड़े का 35 से.मी. × 50 से. मी. का एक टुकड़ा लें एंव इस पाठ में पहले दी गई चित्रफलक तैयार करने की विधि से अपने लिए एक चित्रफलक तैयार करें।

महारास पिछवाई चित्र के एक भाग की अनुकृति तैयार करनी है, सर्म्पूण चित्र की नहीं अतः श्रीनाथजी के चित्र के सूक्ष्म विवरण भी अपने मन में बैठा लें। अब स्केल की सहायता से चित्र का बार्डर अथवा हाशिये बनाऐं एंव हल्के हाथ से पैंसिल चलाते हुए श्रीनाथजी की आकृति का स्केच बना लें।

चित्र 9.6

**द्वितीय चरण :** तदुपरान्त हाशिए के डिजाइन एंव श्रीनाथजी की आकृति को स्पष्ट रूप से रेखंकित करें, प्रत्येक विवरण को पूर्ण सजीवता से चित्रित करें। रबर से अतिरिक्त रेखाएं मिटा दें एंव पृष्ठभूमि से रंग भरना आरंभ करें। सम्पूर्ण चित्र में सपाट एंव हल्के रंग भरते हुए आगे बढ़े।

चित्र 9.7

**तृतीय चरण :** अब चित्र में चेहरे, वस्त्र एंव अभूषण आदि के विवरण स्पष्ट करते हुए विभिन्न रंगों को सफाई से भरें।

चित्र 9.8

**चतुर्थ चरण :** तदुपरान्त एक नम्बर के ब्रुश की सहायता से मूल चित्र का अनुसरण करते हुए काले रंग से आकृतियों की बाह्यरेखाओं को चित्रित करें।

चित्र 9.9

अन्त में सबसे गहरे एंव सबसे प्रकाशवान रंग लगाए। अब पिछवाई चित्र तैयार है।

चित्र 9.10

## प्रायोगिक अभ्यास 3

अब आप कपड़े पर कलमकारी चित्र के लिए एक और डिजाइन बनाये।

**प्रथम चरण :** सर्वप्रथम सूती मारकीन कपड़े का एक 35 से.मी. × 50 से.मी. का टुकड़ा काट लें। अब इस पाठ में पहले दी गई चित्र फलक तैयार करने की पद्धति का अनुसरण करके कपड़े के चित्रफलक को तैयार कर लें।

इसके बाद कलमकारी चित्र का सूक्ष्म अध्ययन करें। चित्र का प्रारूप, आकृतियों की बनावट एंव निरूपण शैली तथा रंग योजना को ध्यान से समझें। आप इस चित्र को बनाने की शैली ध्यान से समझें। पहले चित्र का बार्डर बनाए फिर मुख्य चरित्रों का स्थान निर्धारित कर उनका हल्का रेखांकन करें तत्पश्चात अन्य आकृतियों का निरूपण करें।

चित्र 9.11

**द्वितीय चरण :** अब प्रत्येक आकृति को सुस्पष्ट करें, उनके विवरण रेखांकित करें एवं अनावश्यक रेखाओं को रबर से मिटा दें।

चित्र 9.12

**तृतीय चरण :** कलमकारी की रंगयोजना को ध्यान में रखते हुए विभिन्न आकृतियों में रंग भरें। अब एक नम्बर के ब्रुश से काले रंग से सभी आकृतियों की बाह्यरेखा चित्रित करें। रेखांकन बहुत ही सफाई से किया जाना चाहिए।

चित्र 9.13

**चतुर्थ चरण :** चित्र में ध्यानपूर्वक रंग भरें।

चित्र 9.14

अब कलमकारी चित्र तैयार है।

## आपने क्या सीखा

**कपड़े पर चित्रकारी**

विभिन्न प्रकार

| फेब्रिक्स चित्र (पेंटिंग) | फड़ चित्र (पेंटिंग) | पिछवाई चित्र (पेंटिंग) | कलमकारी चित्र (पेंटिंग) |
|---|---|---|---|
| चावल का स्टार्च लगाएं | चावल का स्टार्च लगाएं | गेहूँ का लेई/कलफ लगाएं | गेहूँ का स्टार्च लगाएं |
| पहली रूपरेखा पीला रंग द्वारा | पत्थर द्वारा पॉलिस | प्रारम्भिक डिजाइन बनाए | कलम द्वारा रेखांकन (स्केच) बनाए |
| डिजाइन भरे उज्ज्वल रंग से | रूपरंखा तैयार करे फिर रंग भरे | प्राकृतिक रंग भरें | लकड़ी के ब्लॉक और ब्रश का प्रयोग करे |

## पाठांत प्रश्न

1. कपड़े पर चित्रकारी हेतु चित्रफलक किस प्रकार तैयार किया जाता है?
2. भारत में कपड़े पर चित्रकारी की कौन सी प्रमुख परम्पराएं हैं?
3. फड़ अथवा फड़ चित्र क्या होता है?
4. पिछवाई चित्रों के विषय क्या होते हैं तथा ये क्यों बनाए जाते हैं?
5. कलमकारी चित्रों की विशेषताएं बताइए?
6. श्रीनाथजी का एक चित्र बनाइए।
7. रामदेव की फड़ से रामदेव की आकृति का चित्रण करें।

### शब्दकोश

घोंटा : चिकना गोल पत्थर

कलफ : चावल का मांड या मैदा से बनी पतली लेही जिसे कपड़े को कड़क बनाने हेतु उस पर लगाया जाता है।

श्वान : कुत्ता

पाषाण : पत्थर

पितृपुरूष : पूर्वज

टिप्पणियाँ

# 10

# मिट्टी पर चित्रकारी

प्रिय शिक्षार्थी, पिछले पाठ में आपने कपड़े पर चित्रकारी के बारे में सीखा। इस पाठ में आप मिट्टी पर चित्रकारी के बारे में जानेंगे। कुम्भकार, कुम्हार को प्रजापति और विश्व के निर्माता विश्वकर्मा भी कहा जाता है। अथर्ववेद के अनुसार ब्रह्मा ने सबसे पहले कुम्हार की रचना की, ताकि जो चीजें पृथ्वी पर नहीं हैं, उन्हें उसके द्वारा आकार दिया जा सके। कुम्हार लोगों के जीवन में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। प्रागैतिहासिक काल से ही बर्तन मां के प्रतीक रहे हैं। महान माता के साथ पृथ्वी के जुड़ाव की उत्पत्ति प्राचीन है। अनुष्ठान के आधार पर बर्तनों को निकाल दिया जाता है या बिना बेककिये बनाया जाता है। बीज बोने और कटाई के समय, जन्म संस्कार में, दुल्हन के घरों को सजाने के लिए या मृतकों को अनुष्ठान में, बर्तन का उपयोग किया जाता है। कुंवारी माँ पृथ्वी की प्रतिमा मिट्टी से बने होते हैं, स्थापित किए जाते हैं, पूजा की जाती है और फिर पानी में डाल दिया जाता है या देवी के स्थलों पर चढ़ाया जाता है। देवी-देवताओं के बर्तनों और आकृतियों के अलावा, भारत में कुम्हार कई अन्य टेराकोटा वस्तुएं बनाते हैं जैसे घोड़े, हाथी, बाघ, बैल, ऊंट, गाय, घर, चरवाहे और संगीत वाद्ययंत्र वाले पुरुष, मां और बच्चे की आकृतियाँ, पुरुष और महिलाएं।

## उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने तथा अभ्यास करने के बाद, आप :

- मिट्टी के चित्रों को एक सार्थक लोक कला के रूप में समझा सकेंगे;
- क्ले चित्र और वस्तुओं की पृष्ठभूमि की व्याख्या कर सकेंगे;
- कुम्हारों द्वारा तैयार की गई मिट्टी की वस्तुओं के विभिन्न रूपों की पहचान कर सकेंगे;
- मिट्टी की वस्तुओं को रंगने के लिए प्रयुक्त माध्यम और सामग्रियों की पहचान करें।

## 10.1 सामान्य विवरण

पहले आपको मिट्टी पर चित्रकारी का सामान्य विवरण जानने की जरूरत है। भारत के हर क्षेत्र में मिट्टी के सामान बनाए जाते हैं। प्रत्येक भौगोलिक क्षेत्र अपनी विशेषता और विशिष्ट पहचान के लिए जाना जाता है, फिर भी सभी अखिल भारतीय पहचान के कुछ बुनियादी धागे से जुड़े हुए हैं। उदाहरण के लिए दिल्ली और जयपुर (राजस्थान) नीले मिट्टी के बर्तनों के लिए प्रसिद्ध हैं; जम्मू और कश्मीर की टेराकोटा और मिट्टी के बर्तन बहुत आकर्षक हैं और लोगों के कलात्मक स्वाद के बारे में बताते हैं; हरियाणा और पश्चिमी उत्तर प्रदेश के कुछ हिस्सों के हुक्का शिल्प का अपना इतिहास, विरासत और आकर्षण है; टेराकोटा आभूषण अब भारत के सभी कोनों के फैशन प्रेमी पुरुषों और महिलाओं का ध्यान आकर्षित कर रहे हैं; कच्छ का टेराकोटा अपनी भूमि के विशेषता और रंग को प्रदर्शित करता है तथा दुनिया के अन्य हिस्सों से खरीदारों को आकर्षित करता है; मणिपुर के लोंगपी कुंडलित मृदभांड उत्तर-पूर्व के इस छोटे और खूबसूरत राज्य को हर जगह लोकप्रिय बना रहे हैं भारत; गुजरात का चित्रित टेराकोटा बेहद अद्भुत है; कर्नाटक मिट्टी के बर्तनों और टेराकोटा के लिए प्रसिद्ध है।

## 10.2 मिट्टी पर चित्रकारी के लिए आवश्यक सामग्री

आपके पास मिट्टी के चित्र बनाने के लिए निम्नलिखित सामग्री होनी चाहिए। सामग्री सरल, आत्मसात करने वाली और बहुत कम हैं।

- मिट्टी के बर्तन/वस्तुएं
- पेपर प्लेट
- मिश्रित तूलिका
- पानी के साथ कटोरा
- पोटीन चाकू
- कागज के तौलिये
- सूती कपड़े या सूती कपड़े
- एक्रिलिक मुहर
- ग्रेफाइट ट्रेसिंग पेपर
- निर्माता
- उच्च चमक बाहरी तामचीनी स्प्रे पेंट
- पेंसिल

## 10.3 मिट्टी के बर्तनों को रंगने की पारंपरिक विधि

आइए हम मिट्टी के बर्तनों को रंगने की पारंपरिक पद्धति के विभिन्न प्रकारों के बारे में जानें। मिट्टी की सतह पर चित्रण के लिए कच्चा माल साधारण मिट्टी है, जो नदियों, झीलों और तालाबों

जैसे जल निकायों के बिस्तरों से प्राप्त होती है। मिट्टी को साफ किया जाता है, मिश्रित किया जाता है और फिर हाथ, पहिया या वांछित वस्तुओं में ढाला जाता है। वस्तुओं को आवश्यकता के अनुसार सुखाया जाता है, निकाल दिया जाता है और चमकाया जाता है। मिट्टी या टेराकोटा उत्पादों को उनके रंग, ताकत और जल अवशोषण क्षमता के अनुसार वर्गीकृत किया जाता है।

गहरी कलात्मक समझ के साथ पेंटिंग सादे बर्तनों को आकर्षक कंटेनरों में बदल देती है, घर में रंग भर देती है, और पौधों या फूलों की सुंदरता को जोड़ती है।

### कालीघाट की तश्तरी पेंटिंग की विधि (सारा चित्र)

पक्की मिट्टी और कच्ची मिट्टी की तश्तरी पर चित्रण की जाती है। पिछले हिस्से को जमीन के रूप में इस्तेमाल किया जाता है। सतह पर सफेद मिट्टी का एक कोट दिया गया है। पेंसिल की सहायता से आकृतियाँ और वस्तुएँ खींची जाती हैं। फिर चेहरे और आकृतियों के अन्य भाग रंगीन होते हैं, एक बार में एक रंग भरे जाते है । रंग सब्जियों और मिट्टी से बनाए जाते हैं। इमली के गोंद का उपयोग बाइंडर के रूप में किया जाता है। चमक के लिए वार्निश का एक कोट दिया जाता है।

### मिट्टी के खिलौने कृष्णा नगर, पश्चिम बंगाल

ये खिलौने मिट्टी से बनी मानव और जानवरों की आकृतियों की यथार्थवादी प्रस्तुति के लिए बहुत प्रसिद्ध हैं। ये आकार में छोटे होते हैं लेकिन विवरण और रंग बहुत यथार्थवादी तरीके से भरे होते हैं। खिलौनों को बनाने के बाद चमकीले रंग में रंगा जाता है। उबले हुए इमली के बीज से निकाले गए गोंद का एक कोट मजबूती और चिकना बना देता है। रंग स्थानीय रूप से उपलब्ध सब्जियों और फूलों से बनाए जाते हैं।

### कपाइकुडी, तमिलनाडु के चित्रित मिट्टी के घोड़े

चेट्टीनाड: अय्यानाप के मिट्टी के घोड़े। मिट्टी, रेत, पुआल और धान की भूसी के मिश्रण को एक निर्दिष्ट क्रम में गूँथकर आकार दिया जाता है और एक भट्ठे में डाल दिया जाता है। घोड़ों को विभिन्न रंगों में रंगा जाता है। ये मिट्टी के घोड़े अय्यनार मंदिर में पारंपरिक प्रसाद हैं। रंग मुख्य रूप से खनिजों और फूलों के साथ-साथ पृथ्वी के रंगों से भरे जाते हैं।

### मोरेला के मिट्टी के बर्तनों पर चित्रकारी

इस पारंपरिक कला रूप की उत्पत्ति राजस्थान के मोरेला गाँव में हुई थी। टेराकोटा की आकृतियों को खोखला बना दिया जाता है। सबसे प्रसिद्ध वस्तुएँ पट्टिकाएँ हैं जो देवी-देवताओं की छवि को दर्शाती हैं। इस मिट्टी को एल्युमिना, सिलिका और चूने के साथ मिलाकर गूंथ लिया जाता है। पिंचिंग, रोलिंग, प्रेसिंग आदि तकनीक के माध्यम से आकृतियां बनाए जाते हैं। जब पट्टिकाएं तैयार हो जाती हैं, तो उन्हें नौ दिनों के लिए भट्टी में सुखाया जाता है। इसके बाद इन्हें खनिज और पत्थर के रंगों से रंगा जाता है।

## प्रायोगिक अभ्यास 1

इस अभ्यास में आप मिट्टी के पॉट पेंटिंग के बारे में जानेंगे।

**चरण 1:** अपने काम की सतह को कवर करें। छात्रों को सलाह दी जाती है कि वे प्लास्टिक के कपड़े, अखबार की एक परत या एक पुराने विनाइल मेजपोश का उपयोग करें। अब एक टेराकोटा पॉट को स्क्रब करें। धक्कों और खामियों को दूर करने के लिए कड़े ब्रश का इस्तेमाल करें। वैकल्पिक रूप से, बर्तन को हल्के से महीन सैंडपेपर से रेत दें।

चित्र 10.1

एक नम सूती कपड़े से बर्तन को पोंछ लें। यह धूल और बालू कण के सभी निशान हटा देगा। पेंटिंग से पहले बर्तन को सूखने दें।

**चरण 2:** टेराकोटा पॉट के अंदर सील करें। यह स्पष्ट ऐक्रेलिक स्प्रे पेंट के 2 से 3 कोटों का छिड़काव करके किया जाता है। स्पष्ट पेंट बर्तन को सील कर देता है और नमी को बर्तन के बाहर से अंदर आने से रोकता है। बर्तन को अच्छी तरह सूखने दें। फिर दूसरा कोट लगाएं। उसके बाद कोट सूख जाए, फाइनल कोट लगाएं।

चित्र 10.2

**चरण 3:** पहले कोटिंग के रूप में पॉट को प्राइमर पेंट के साथ परत करें। अब बर्तन के बाहर पेंट करें। इसके बाद हाई ग्लॉस एक्सटीरियर इनेमल पेंट के पतले कोट का इस्तेमाल करें। पेंट को बर्तन के अंदर के शीर्ष 2 इंच तक बढ़ाएँ। बर्तन को अच्छी तरह सूखने दें। फिर दूसरा कोट लगाएं। उसके बाद कोट सूख जाए, फाइनल कोट लगाएं।

चित्र 10.3

**चरण 4:** डिजाइन जोड़ें: यदि वांछित है, तो टेराकोटा पॉट पर डिजाइन को पेंट करने के लिए विषम रंगों में उच्च चमक वाले बाहरी पेंट में डूबा हुआ स्पंज का उपयोग करें। स्पंज को चौकोर, तारे या वृत्त जैसे आकार में काटें या किसी बनावट पर थपथपाने के लिए स्पंज का उपयोग करें। उदाहरण के लिए, संकीर्ण पट्टियों में काटे गए स्पंज का उपयोग बर्तन पर क्षैतिज या ऊर्ध्वाध र धारियों को पेंट करने के लिए किया जा सकता है।

चित्र 10.4

**चरण 5:** स्पष्ट ऐक्रेलिक पेंट के एक कोट के साथ बर्तन को सील करें। मुहर उन्हें खरोंच से बचाता है, स्थायित्व जोड़ता है और बर्तन को साफ रखना आसान बनाता है। सीलर को पूरी तरह सूखने दें, और फिर दूसरे कोट पर स्प्रे करें।

चित्र 10.5

रंगने से पहले कम से कम 2 से 3 दिनों के लिए बर्तन को ठीक से सूखने के लिए अलग रख दें।

चित्र 10.6

यह मिट्टी के बर्तन पर चित्रकारी का एक और उदाहरण है।

## प्रायोगिक अभ्यास 2

आइए हम एक और कलाकृति सीखें जो क्ले बोर्ड पर चित्रकारी है।

क्ले बोर्ड पर ऐक्रेलिक या वॉटरकलर पेंट कैसे लगाएं? क्ले बोर्ड एक प्रकार का स्थिर पैनल है जो कलाकारों को नक्काशी के साथ पारभासी और अपारदर्शी पेंटिंग तकनीकों को संयोजित करने की अनुमति देता है। सफेद मिट्टी के बोर्ड पर पेंट कई अलग-अलग तरीकों से लगाया जा सकता है - ब्रश, स्पंज या पुटी चाकू। अद्वितीय बनावट और यथार्थवादी पेंटिंग बनाने के लिए क्ले बोर्ड पर पेंट को हटाया या उकेरा जा सकता है।

टिप्पणियाँ

**चरण 1:** एक नियमित फैले हुए कैनवास का उपयोग करने की तरह, आपको शुरू करने से पहले मिट्टी के बोर्ड का आकार निर्धारित करना होगा। वॉटरकलर कलाकारों के लिए याद रखने के लिए यह एक महत्वपूर्ण कदम है, जो वॉटरकलर पेपर को अपनी अंतिम पेंटिंग के आकार में काटने के लिए उपयोग किया जाता है।

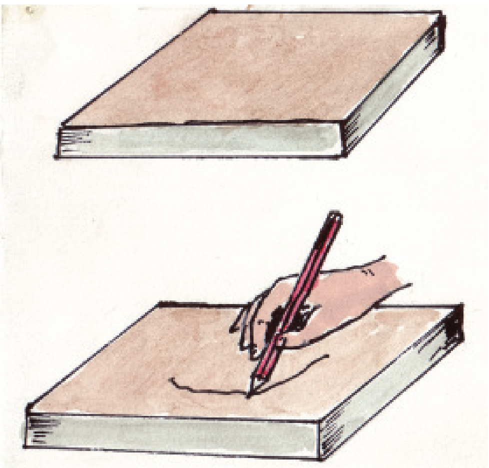

चित्र 10.7

यदि आप चाहें तो अपनी पेंटिंग की मूल रूपरेखा और मुख्य आकृतियों को एक पेंसिल से स्केच करें। चूंकि मिट्टी के बोर्ड को पेंट करने के लिए तैयार किया जाता है, इसलिए आपको पेंटिंग के लिए बोर्ड तैयार करने की आवश्यकता नहीं है। जब आप क्ले बोर्ड पर पेंट करना शुरू करेंगे तो आपकी पेंसिल लाइनें एक गाइड के रूप में दिखाई देंगी।

**चरण 2:** पृष्ठभूमि रंगों के लिए पेंटब्रश में वॉटरकलर पेंट के पतले कोट से शुरू करें। यदि आप ऐक्रेलिक पेंट का उपयोग करना चुनते हैं, तो याद रखें कि ऐक्रेलिक पारभासी और अपारदर्शी दोनों गुणों को ले सकता है, इसलिए आपको एक अंतर्निहित, पारभासी रंग बनाने के लिए अपने पेंट को पतला करना चाहिए।

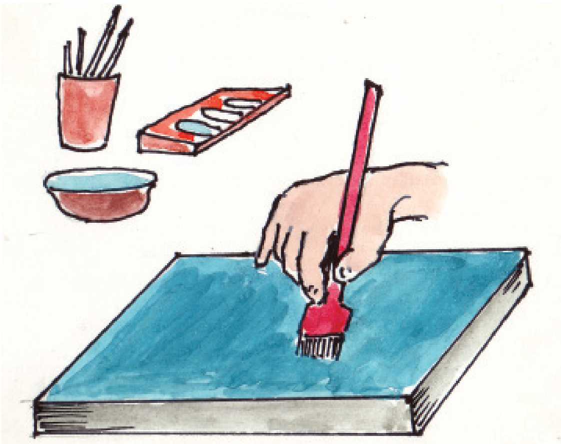

चित्र 10.8

टिप्पणियाँ

अपनी पेंटिंग में मुख्य आकृतियों को अवरुद्ध करने के लिए ऐक्रेलिक या वॉटरकलर पेंट का एक और कोट लागू करें। पेंट को सूखने दें।

**चरण 3:** अपने चित्रों में विवरण उकेरने के लिए एक नक्काशीदार सुई या स्क्राइबर का उपयोग करें। जब आप पेंट के माध्यम से खरोंच करते हैं, तो नक्काशीदार रेखाएं सफेद दिखाई देंगी, जिससे आपके द्वारा बनाए जा रहे विवरण को देखना आसान हो जाएगा।

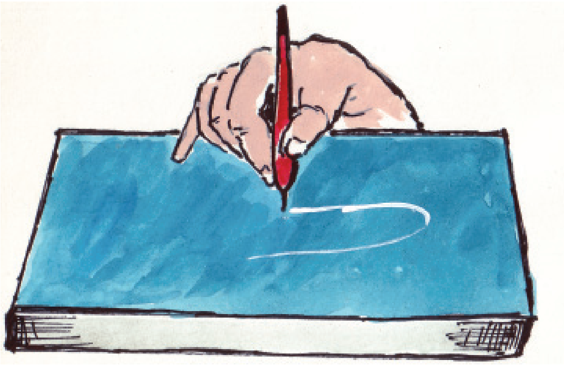

चित्र 10.9

**चरण 4:** ऐक्रेलिक या वॉटरकलर पेंट की अगली परत को अपने क्ले बोर्ड पर ब्रश करें, नक्काशीदार क्षेत्रों पर पेंटिंग करें। नक्काशीदार रेखाएँ पेंटिंग में बनावट और गहराई जोड़ने लगती हैं।

चित्र 10.10

**चरण 5:** इस प्रक्रिया को तब तक जारी रखें जब तक आप अपनी पेंटिंग पूरी नहीं कर लेते। आप अपनी पेंटिंग को नक्काशीदार रेखाओं के साथ समाप्त कर सकते हैं जिसे आप अपनी पेंटिंग के विपरीत सफेद छोड़ना चाहते हैं, या नक्काशीदार रेखाओं को अपनी पेंटिंग में रंगीन होने दें। इसके अलावा, आप मिट्टी की दीवार पर पेंट कर सकते हैं।

चित्र 10.11

यह क्ले बोर्ड पेंटिंग का एक और उदाहरण है।

## आपने क्या सीखा

मिट्टी पर चित्रकारी
|
विभिन्न प्रकार

| कृष्णा नगर के खिलौने | कालीघाट की तश्तरी पेंटिंग | कपाइकुडी के चित्रित मिट्टी के घोड़े | मोरेला की मिट्टी पर चित्रकारी |
|---|---|---|---|
| पश्चिम बंगाल | पश्चिम बंगाल | तमिलनाडु | राजस्थान |
| रंग मुख्य रूप से सब्जियों और फूलों से प्राप्त होते हैं। | रंग मुख्य रूप से सब्जियों और फूलों से प्राप्त होते हैं। | रंग मुख्य रूप से खनिजों और फूलों से प्राप्त होते हैं। | रंग मुख्य रूप से खनिजों और पत्थरों से प्राप्त होते हैं। |

## पाठांत प्रश्न

1. भारत में विभिन्न भौगोलिक या सांस्कृतिक क्षेत्रों में मिट्टी की वस्तुओं के विभिन्न रूपों की पहचान करें। उनमें से कुछ को पेंट करें।
2. ऐक्रेलिक पेंट का उपयोग करके एक फूलदान को पेंट करें और साधारण स्थानीय डिजाइन का उपयोग करें।

3. लोकप्रिय शैली में एक टेराकोटा मूर्तिकला पेंट करें और सबमिट करें।

4. मिट्टी के बोर्ड पर पेंट करें और सबमिट करें।

टिप्पणियाँ

## शब्दावली

ऐक्रेलिक पेंट : यह तेजी से सूखने वाला पेंट है जिसमें ऐक्रेलिक पॉलीमर इमल्शन में पिगमेंट सस्पेंशन होता है। इसे पानी से पतला किया जा सकता है लेकिन पानी प्रतिरोधी बन जाता है।

विश्वास : एक स्वीकृति कि ये एक कथन सत्य है या कुछ मौजूद है।

हुक्का : एक पूर्वी धूम्रपान पाइप, जो भारतीय गांवों में बहुत लोकप्रिय है, जिसे पानी के एक कलश से गुजरने वाली एक लंबी ट्यूब के साथ डिजाइन किया गया है जो धुएं को ठंडा कर देता है।

संघटक : घटक भाग या तत्व

कुम्भकर : कुम्हारों (कुम्हारों) का नाम संस्कृत शब्द कुम्भर से लिया गया है, जिसका अर्थ है मिट्टी के बर्तन बनाने वाला।

लोंगपी : मणिपुर की कुंडलित मिट्टी के बर्तन। वे सभी अपने डिजाइन में काले, सरल और लगभग न्यूनतर हैं।

प्रजापति : हिंदू पौराणिक कथाओं में, कुम्हार भगवान ब्रह्मा के पुत्र भगवान प्रजापति दक्ष के वंशज हैं। इसलिए इन्हें प्रजापति भी कहा जाता है।

पुट्टी चाकू : एक लचीला ब्लेड उपकरण जिसका उपयोग पुट्टी को खुरचने और लगाने के लिए किया जाता है।

अनुष्ठान : पूजा स्थल में प्रयुक्त होने वाले समारोहों या संस्कारों का रूप

सैंडपेपर : सतह को चिकना करने के लिए उपयोग किए जाने वाले रेत या अन्य अपघर्षक सामग्री के साथ एक तरफ लेपित भारी कागज।

मुहर : सतह को आकार देने के लिए इस्तेमाल किए जाने वाले पेंट या वार्निश के अंडरकोट के रूप में।

टेराकोटा : एक प्रकार का मिट्टी का बर्तन, एक मिट्टी पर आधारित बिना शीशे वाला या चमकता हुआ सिरेमिक होता है। इसके उपयोग भवन निर्माण, बर्तन, खिलौने, मूर्तियां और सतह अलंकरण में शामिल हैं।

विश्वकर्मा : दुनिया के निर्माता (भारतीय परंपरा में, एक कुम्हार की तुलना विश्वकर्मा से की जाती है, और विश्वकर्मा के रूप में संबोधित किया जाता है)।

# 11

# लकड़ी पर चित्रकारी

प्रिय शिक्षार्थी, पिछले पाठ में आपने मिट्टी पर चित्रकारी के बारे में सीखा। इस पाठ में आप लकड़ी पर चित्रकारी के बारे में सीखेंगे। मानव जाति प्राचीन काल से विभिन्न लकड़ी के उत्पादों का उपयोग करती रही है। लकड़ी से बनी सामग्रियां प्राथमिकताओं में पहले स्थान पर आते हैं। दुनिया के हर कोने में कारीगर विभिन्न प्रकार की लकड़ी से विभिन्न सामग्री और घरेलू सामान तैयार करते हैं। हमारे देश के लगभग हर गांव, जिले और राज्य में, लकड़ी के काम में शामिल कई व्यक्ति मिलते हैं, जिन्हें भारत के लोग बढ़ई कहते हैं। बढ़ई समाज के लोगों की जरूरतों के अनुसार विभिन्न वस्तुओं को तैयार करने का काम करते हैं। भारत में प्रतिदिन कई हस्तशिल्प वस्तुओं का उत्पादन किया जाता है। पूरे देश में विभिन्न प्रकार के कारीगर मिलते हैं। इससे पहले, उन्होंने विभिन्न राजाओं, महाराजाओं और जमींदारों के संरक्षण में काम किया था।

## उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने तथा अभ्यास करने के बाद, आप :

- लकड़ी में विभिन्न वस्तुएँ तैयार कर सकेंगे;
- काष्ठ शिल्प के लिए प्रसिद्ध भारत के क्षेत्रों को पहचान कर सकेंगे;
- इस शिल्प के लिए जो लकड़ी प्रदान करते हैं; उन पेड़ों की पहचान कर सकेंगे;
- लकड़ी की कुछ उपयोगी वस्तुओं के नाम लिख सकेंगे;
- लकड़ी की वस्तुओं को रंग कर सकेंगे।

## 11.1 सामान्य विवरण

सबसे पहले, आपको लकड़ी को रंगने के सामान्य विवरण को समझने की जरूरत है। लकड़ी के एक टुकड़े से तराशी गई एक मूर्ति, पूरी तरह से लकड़ी से बना एक मंदिर और भारत के कुछ राज्यों में लकड़ी से बना एक महल देखा जा सकता है। केरल में, लकड़ी से बना एक पूरा मंदिर देखा जा सकता है। ओडिशा में, त्रिदेव भगवान जगन्नाथ, भगवान सुदर्शन बलभद्र और सुभद्रा

को नीम के पेड़ से एकत्र की गई लकड़ी से तराशा गया है। हर साल भगवान लकड़ी से बने तीन विशाल रथों में उनके जन्मस्थान मौसीमा मंदिर जाते हैं। पुरी के पारंपरिक चित्रकार हर साल औपचारिक यात्रा के लिए इन रथों को खूबसूरती से रंगते हैं। ये रथ लगभग 45 फीट से अधिक ऊंचे रहते हैं। बढ़ई सह-लकड़ी-चित्रकार के अलावा लकड़ी के दरवाजे, कुर्सियाँ, सिंधु, देवताओं की पालकी, सिंहसन (औपचारिक सिंहासन), पलंग (बिस्तर) आदि जैसे विभिन्न घरेलू और सजावटी वस्तुओं को खूबसूरती से चित्रित करते हैं। वर्तमान में विभिन्न राज्यों के कारीगर और लकड़ी के चित्रकार घरों के लिए सुंदर नक्काशी वाली सजावटी वस्तुओं का उत्पादन करके लकड़ी से बने हस्तशिल्प वस्तुओं के लिए एक अच्छा बाजार विकसित किया है। पंजाब, राजस्थान, ओडिशा, महाराष्ट्र, उत्तर प्रदेश, हिमाचल प्रदेश, पश्चिम बंगाल, बिहार, आंध्र प्रदेश, कर्नाटक, तमिलनाडु और केरल के कारीगर इस क्षेत्र में सबसे आगे हैं। इन राज्यों के कारीगर देश में विभिन्न सरकारी और गैर-सरकारी संगठनों द्वारा आयोजित हस्तशिल्प प्रदर्शनी में भाग लेते हैं, और अपने उत्पादों को बेचते हैं। प्रत्येक वर्ष भारत में हरियाणा के सूरजकुंड मेला, दिल्ली के दिल्ली हाट, दिल्ली में प्रगति मैदान के शिल्प संग्रहालय आदि जैसी प्रसिद्ध प्रदर्शनियों में खिलौनों अन्य स्थानों पर, दीवार पर लटकने वाले और अन्य सजावटी सामानों के रूप में सभी भारतीय राज्यों के हस्तशिल्प को देखा जा सकता है।

वुडक्राफ्ट तीन किस्मों में देखा जाता है। सबसे पहले, सामान्य घरेलू सामान जैसे लकड़ी का बिस्तर, मेज, कुर्सी, बेंच, पालना आदि। बढ़ई ग्राहक की मांग के अनुसार इसे रंग या पॉलिश करते हैं। दूसरे, बड़े सजावटी सामान जैसे छोटे बक्से (नकद या आभूषण बॉक्स), देवी-देवताओं की विभिन्न मूर्तियाँ, गुड़िया, घोड़े और हाथी जैसे जानवर, फूलों के फूलदान, अगरबत्ती, व्याससन (गीता जैसे शास्त्र पढ़ने के लिए) आदि। विशिष्ट और पारंपरिक वस्तुएं हैं जिन्हें कारीगरों द्वारा उकेरा और चित्रित किया जाता है। उदाहरण के लिए, पिधा (जमीन पर बैठने के लिए), बैठा (तेल के दीपक रखने के लिए), सिंदूर फरुआ (सिंदूर के लिए महिलाओं द्वारा उपयोग किया जाता है), बेलना पेड़ी और काठी (रोटी या चपाती बनाने के लिए), ठेठ लकड़ी के आभूषण बॉक्स, सिंधुक, आदि। छात्र अब बाजार से वुडक्राफ्ट विशेषज्ञों द्वारा तैयार और चित्रित पेंसिल बॉक्स, पेन स्टैंड, पहेली बॉक्स और अक्षर खरीद सकते हैं। ये आइटम निस्संदेह आपको आकर्षित करेंगे क्योंकि वे बस चमक रहे होंगे।

## 11.2 काष्ठ चित्रकला के पारंपरिक मोटिफ

आइए हम कलाकारों द्वारा लकड़ी की वस्तुओं को चित्रित करने के लिए उपयोग किए जाने वाले विभिन्न प्रकार के मोटिफ को पहचानें। ये इनमें से कुछ मोटिफ हैं।

1. यह हिरण का एक शैलीबद्ध रूप है जिसमें गर्दन और पीठ पर कुछ अलंकरण होता है।
2. यह एक पक्षी के काल्पनिक रूप का एक रूपांकन है।
3. हाथी का एक विशिष्ट शैलीबद्ध रूप, जो भारतीय कला में बहुत लोकप्रिय है।
4. भारतीय कला में आम की आकृति बहुत आम है। इसे उर्वरता का प्रतीक माना जाता है।
5. इन चित्रकारों द्वारा प्रायः लीफ मोटिफ वाले वृत्तों का प्रयोग किया जाता है।

हिरण 1

पक्षी 2

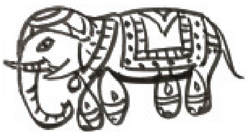

हाथी 3

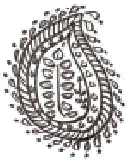

आम 4

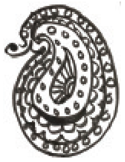

एक अन्य प्रकार के आम 5

सर्किल पत्ती के साथ 6

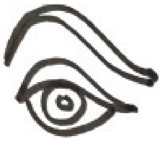

मानव आँख 6(i)

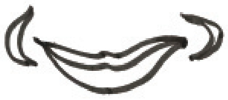

मानव होंठ 6(ii)

मानव चेहरा 6(iii)

क्राउन 7

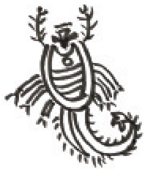

बिच्छू 8

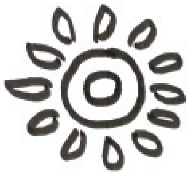

फूल डिजाइन 9

एक और फूल डिजाइन 9(i)

चित्र 11.1

6. मानव चेहरा और उसके विभिन्न भाग जैसे, आंखें, भौहें और होंठ भी एक कला के काम की सुंदरता को आकृति के रूप में बढ़ाते हैं।

7. देवताओं के मुकुट ज्यामितीय रूपांकनों से अलंकृत हैं।

8. बिच्छू एक राशि चिन्ह है और इसे एक आदर्श के रूप में महत्वपूर्ण रूप से उपयोग किया जाता है।

9. भारत में किसी भी कला के रूप में फूल सबसे पसंदीदा रूप हैं

## 11.3 लकड़ी पर पेंटिंग के लिए आवश्यक सामग्री

आप ड्राइंग पेपर पर विभिन्न कला रूपों को अंकन कर सकते हैं और उन्हें बड़े करीने से चित्रित कर सकते हैं। लेकिन लकड़ी पर पेंटिंग करना थोड़ा अलग है। यदि हम कागज पर उपयोग किए जाने वाले रंग का उपयोग करके लकड़ी पर कुछ पेंट करते हैं तो यह वही रूप नहीं देगा। वुड पेंटिंग के लिए इनेमल पेंट और फैब्रिक कलर बाजार में उपलब्ध हैं। आप इसे प्राप्त कर सकते हैं और पेंटिंग कर सकते हैं। इसलिए हम इस प्रकार की पेंटिंग को ''वुड पेंटिंग'' नाम देंगे।

## लकड़ी का शिल्प का संग्रह

आप अपने इलाके के विभिन्न प्रदर्शनियों या मेलों से कुछ लकड़ी के सामान चुन सकते हैं और खरीद सकते हैं। अन्यथा, आप स्थानीय बढ़ई या कारीगरों से कुछ सामान मंगवा सकते हैं।

## अन्य वस्तु चुनना

रंग: हम जानते हैं कि जब हम कागज की एक शीट पर पेंट करते हैं तो हम पोस्टर कलर, क्रेयॉन कलर, पेस्टल कलर और वॉटर कलर का इस्तेमाल करते हैं, लेकिन हम इससे वुडक्राफ्ट को पेंट नहीं कर सकते। लकड़ी पर पेंटिंग करने से पहले हमें प्राइमर कलर का एक से दो कोट देना चाहिए। प्राइमर की आवश्यकता होती है क्योंकि यह लकड़ी को मुख्य रंग को भिगोने से रोकता है जिसकी मदद से हम लकड़ी पर विभिन्न वस्तुओं को पेंट करते हैं। प्राइमर कलर हम बाजार से खरीद सकते हैं।

जब आप एक मिश्रित रंग बनाना चाहते हैं, तो आप दो रंगों को इस तरह मिला सकते हैं-

गुलाबी : सफेद + लाल

ग्रे : सफेद + काला

नारंगी : पीला + लाल

स्काई ब्लू : व्हाइट + ब्लू

भूरा : लाल + काला + पीला

## वार्निश कोट

यदि आप लकड़ी को तामचीनी रंग में रंगते हैं, तो आपको वार्निश कोट जोड़ने की आवश्यकता नहीं है।

## पेंट करने के लिए ब्रश

लकड़ी पर पेंट करने के लिए आप उसी ब्रश का उपयोग कर सकते हैं जिसका उपयोग आप कागज पर पेंटिंग के लिए करते हैं। लेकिन आपको यह याद रखना चाहिए कि इनेमल रंग से पेंटिंग करते समय आपको पेंटिंग वाली जगह के पास कहीं पानी नहीं रखना चाहिए। इससे इनेमल कलर की समस्या पैदा हो जाएगी। जब आप रंग को पतला करना चाहते हैं, तो आप तारपीन के तेल का उपयोग कर सकते हैं। ब्रश का चुनाव करते समय आपको ब्रश की संख्या को ध्यान में रखना चाहिए। आपको सलाह दी जाती है कि नंबर 6, नंबर 4, नंबर 2 और नंबर 1 के चार ब्रश खरीदें। सबसे पहले, आप एक फ्लैट आधे इंच के ब्रश का उपयोग करके प्राइमर का एक कोट दें और इसे कुछ समय के लिए सूखने के लिए छोड़ दें।

- प्लाइवुड के छः टुकड़ों को गोल आकार में काट लें ताकि पानी के गिलास के छह कवर बाहर आ जाएं। प्लाई 6 मिमी मोटी होनी चाहिए और व्यास 3 इंच के भीतर होना चाहिए।
- एक बढ़ई से तितली की दो आकृतियाँ लीजिए। आकार ढाई इंच से डेढ़ इंच के बीच रहना चाहिए।

- लकड़ी की पेंटिंग के लिए एक पेंसिल, पेन और अन्य सामान रखने के लिए 8 इंच की लंबाई, 2 इंच की ऊंचाई और 2 इंच की चौड़ाई के साथ एक पेंसिल बॉक्स रखें।
- आयताकार लकड़ी के अक्षरों को इकट्ठा करें और विभिन्न अक्षरों और संख्याओं के आकार को पेंट करें। आपके पास लकड़ी के 26 घन होने चाहिए जिनकी माप 8 सेमी गुणा 4 सेमी हो। 1 से 10 लकड़ी के घनों तक की संख्याओं को रंगने के लिए, आपको लकड़ी के 9 घनों को इकट्ठा करना होगा। इन अक्षरों को 6 मिमी प्लाई या पतले लकड़ी के तख्त पर चित्रित किया जा सकता है।

## 11.4 लकड़ी पर चित्रकारी के पारम्परिक विधि

आपने लकड़ी की पेंटिंग में इस्तेमाल होने वाले पारंपरिक रूपांकनों के बारे में सीखा है। अब आप लकड़ी की पेंटिंग की पारंपरिक विधि सीखेंगे। लकड़ी के सामान आकर्षक लगते हैं जब उन्हें बड़े करीने से रंगा और पॉलिश किया जाता है। अगर ठीक से पेंट नहीं किया गया है, तो वे आपको आकर्षित नहीं करेंगे। तो क्या आप अपनी लकड़ी की गुड़िया या अन्य वस्तुओं को पेंट करने में रुचि रखते हैं? फिर पेंटिंग के लिए आवश्यक सामग्री एकत्र करें। भारत के विभिन्न भागों में विभिन्न प्रकार के लकड़ी के खिलौने पाए जाते हैं। जैसे ओडिशा, बंगाल, उत्तर प्रदेश, तमिलनाडु, आंध्र प्रदेश, आदि। आप लकड़ी से बने विभिन्न खिलौने पा सकते हैं जैसे बंदर एक खंभे पर चढ़ना और छोटे रथ। ये खिलौने छोटे बच्चों को आकर्षित करते हैं। उत्तर प्रदेश के सहारनपुर में बिना कोई रंग लगाए लकड़ी की सुंदर वस्तुएँ भी मिल जाती हैं। ओडिशा और हिमाचल प्रदेश दोनों में विभिन्न रूपों के लकड़ी के मुखौटे मिल सकते हैं। वे चित्रित मुखौटे हैं, और ओडिशा के रामलीला में उपयोग किए जाते हैं। खिलौनों को आम तौर पर गंभरी, पलाधुआ, अंबा (आम), लिम्बा (निम), कुरुमा, पनासा, शिशु, आसन, कटरंगा आदि से तराशा जाता है।

## प्रायोगिक अभ्यास 1

आइए अब हम लकड़ी की टाइल को पेंट करना सीखें।

**पहला चरण :** हम टाइल को पेंट करने और सजाने के लिए लकड़ी की टाइल चुनते हैं।

चित्र 11.2

**दूसरा चरण :** हम टाइल के आधार को पीले गेरू रंग से रंगते हैं, उसमें फेविकोल की कुछ बूंदें मिलाते हैं और इसे सूखने देते हैं।

**तीसरा चरण :** फिर, हम उस पर एक पेंसिल के साथ पुष्प डिजाइन की कलाकृति तैयार करेंगे।

चित्र 11.3

**चौथा चरण :** हम दिए गए बैंगनी और पीले रंग के साथ डिजाइन की पत्तियों और पंखुड़ियों के रंगों का एक हल्का स्वर जोड़ना शुरू करते हैं। बाद में, हम अपनी कलाकृति को और अधिक सुंदर बनाने के लिए एक गहरा स्वर जोड़ते हैं।

चित्र 11.4

अंत में, जब हमारी कलाकृति पूरी हो जाती है, तो हम इसे स्थायी प्रभाव देने के लिए इसमें वार्निश का एक कोट लगा देंगे।

## प्रायोगिक अभ्यास 2

अब आप सीखेंगे कि लकड़ी के बक्से को कैसे रंगना है।

**पहला चरण :** घनाकार आकार का एक बॉक्स चुनें। फिर सभी तरफ पीले रंग का प्रयोग करें जैसा कि चित्र में दिखाया गया है।

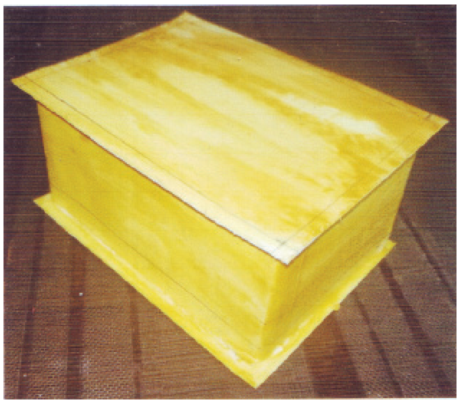

चित्र 11.5

**दूसरा चरण :** इसे सूखने दें और उसके बाद बॉक्स के ऊपर और नीचे नीले रंग से बॉर्डर पेंट करें।

चित्र 11.6

**तीसरा चरण :** बॉक्स के सभी 5 किनारों पर एक डिजाइन बनाएं। एक पेंसिल की सहायता से डिजाइन बनाएं और बॉक्स के चारों ओर हरे रंग से पुष्प डिजाइन के सीपल्स और पंखुड़ियों को भरें।

चित्र 11.7

**चौथा चरण :** फिर, हम काले रंग का उपयोग करके डिजाइन की रूपरेखा तैयार करना शुरू करते हैं, और नीले बॉर्डर पर रेखाएँ लगाते हैं। अंत में, हम डिजाइनों में लाइट और शेड्स डालते हैं।

चित्र 11.8

आप अन्य वस्तुओं जैसे तितलियों, पक्षियों, पत्तियों आदि का डिजाइन बना कर पेंट कर सकते हैं।

## प्रायोगिक अभ्यास 3

इस अभ्यास में, आप एक लकड़ी का मुखौटा पेंट करने जा रहे हैं।

**चरण 1:** मुकुट और चेहरे पर कुछ विवरणों के साथ मास्क की एक पेंसिल ड्राइंग बनाएं।

चित्र 11.9

**चरण 2:** चेहरे को हरा रंग दें। आंखें और होंठ बिना रंग के रह जाते हैं। ताज के निचले गोलाकार हिस्से पर हरे रंग का प्रयोग करें।

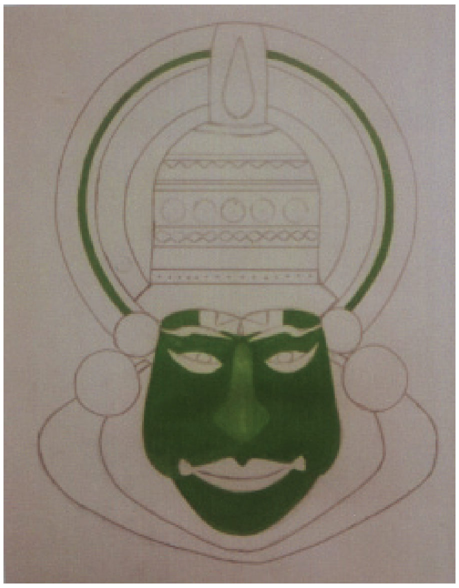

चित्र 11.10

**चरण 3:** तीन-पट्टी वाले ताज क्षेत्रों और अंतिम भाग पर लाल रंग का प्रयोग करें। अंतिम छोर पर टियरड्रॉप मोटिफ के साथ पाँच बिंदुओं को सफेद छोड़ दें। ताज के ऊपर से दूसरी क्षैतिज पट्टी हरे रंग की होनी चाहिए। मुकुट के बाहरी चक्र और अन्य दो पट्टियों पर नारंगी रंग का प्रयोग करें

पहली क्षैतिज नारंगी पट्टी पर सफेद डॉट्स लगाएं।

चित्र 11.11

**स्टेप 4:** होठों पर लाल रंग और चेहरे के दोनों किनारों पर सबसे ऊपर दो कान लगाएं.

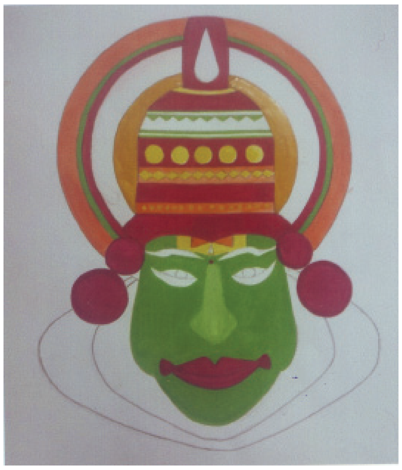

चित्र 11.12

**चरण 5:** आंखों, भौहों आदि पर काले रंग की रूपरेखा के साथ इसे समाप्त करें।

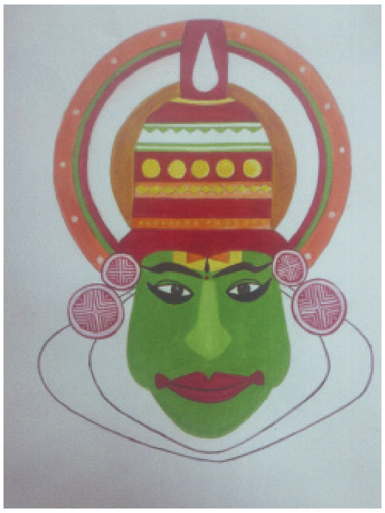

चित्र 11.13

**बटरफ्लाई :** यह क्यूब्स के अनुसार किया जा सकता है। सबसे पहले बटरफ्लाई में प्राइमर लगाएं, फिर इसे सूखने के लिए छोड़ दें। उसके बाद चित्रों में दिखाए अनुसार ब्रश में रंग लगाएं।

**वार्निशिंग :** यदि आप लकड़ी के शिल्प पर वार्निश लगाना चाहते हैं, तो एक सपाट ब्रश लें और पेंटिंग पूरी होने और सूखने के बाद पूरे शिल्प के चारों ओर वार्निश लगाएं। आपको इसे सावधानी से और धीरे-धीरे करना चाहिए ताकि चित्रों को कोई नुकसान न पहुंचे।

आप ऐक्रेलिक पेंट्स पर भी वार्निश का कोट लगा सकते हैं। वार्निश पेंटिंग को चमकदार बनाता है और पेंटिंग को पानी से बचाता है।

**नोट:** काम के बाद ब्रश को तारपीन के तेल या मिट्टी के तेल में धो लें। इसे पूरी तरह से पोंछ लें और फिर इसे भविष्य में उपयोग के लिए वापस रख दें।

## आपने क्या सीखा

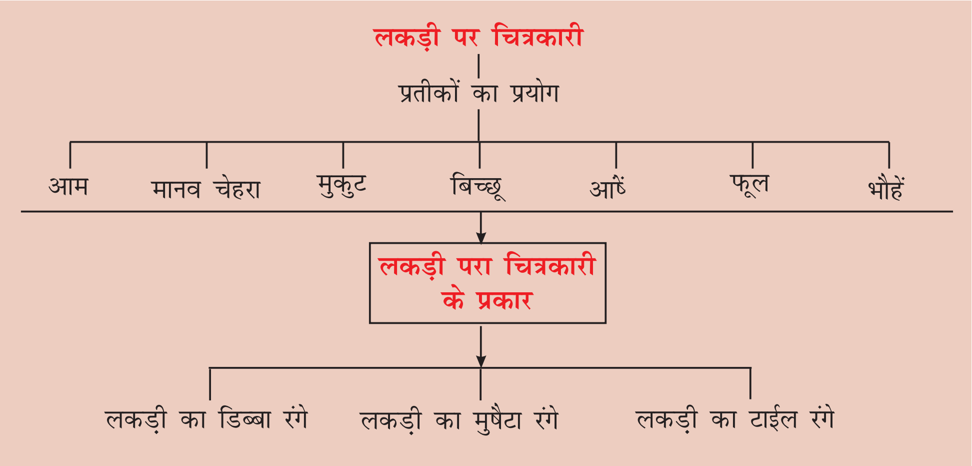


## पाठांत प्रश्न

1. छोटे आकार के काष्ठ शिल्प (वुडक्राफ्ट) पर पेंट करने के लिए आपको कौन सा ब्रश चाहिए और आप कैसे पेंट करते हैं?
2. लकड़ी के शिल्प को पेंट करने से पहले किस पर लगाना चाहिए? समझाइये
3. पेंटिंग पूरी होने के बाद हमें वार्निश के कोट का उपयोग क्यों करना चाहिए?
4. लकड़ी पर पेंटिंग करने के बारे में आपने क्या सीखा?

# 12

# कठपुतली बनाना

प्रिय शिक्षार्थी, पिछले पाठ में आपने लकड़ी पर चित्रकारी के बारे में सीखा। इस पाठ में आप कठपुतली बनाने के बारे में सीखेंगे। कठपुतली 'अभिनेता' हैं; न कि मनुष्य। न ही वे केवल लकड़ी और लत्ता के टुकड़े हैं। जिस तरह एक मुखौटा को 'मनुष्य का दूसरा चेहरा' माना जाता है, उसी तरह हम एक कठपुतली को 'दूसरा इंसान' मान सकते हैं। चूंकि इसमें असाधारण जीवन है, यह नाटक को कभी-कभी मानव अभिनेताओं से बेहतर ऊंचाइयों तक ले जा सकता है। आमतौर पर यह माना जाता है कि कठपुतली थियेटर की शुरुआत भारत में हुई थी। यहीं से कला और महाकाव्य के विषय अन्य एशियाई देशों में चले गए। तमिल क्लासिक सिलप्पादिकारम दूसरी शताब्दी ईसा पूर्व के आसपास लिखा गया था, और, उसी समय भरत द्वारा लिखित नाट्यशास्त्र नाट्क पर उत्कृष्ट ग्रंथ जिसमे हमें कठपुतली के कुछ संदर्भ मिलते हैं। नाट्यशास्त्र ने कठपुतली के विषय में चर्चा नहीं किया है। फिर भी, मानव रंगमंच के निर्माता-सह-निर्देशक को सूत्रधार कहा गया है, जिसका अर्थ है 'धागों का धारक'। नाट्यशास्त्र के लिखे जाने से बहुत पहले इस शब्द को रंगमंच-शब्दावली में अपना स्थान मिल गया होगा। इसमें कोई शक नहीं है कि यह मैरियनेट थिएटर से आया है।

## उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने तथा अभ्यास करने के बाद, आप :

- कठपुतली की परिभाषा की व्याख्या कर सकेंगे;
- कठपुतली बनाने के इतिहास को संक्षेप में लिख सकेंगे;
- कठपुतली बनाने की पारम्परिक विधि की व्याख्या कर सकेंगे;
- विभिन्न प्रकार की कठपुतलियों के बारे में बता सकेंगे;
- साधारण सामग्री से कठपुतली तैयार कर सकेंगे।

## 12.1 सामान्य विवरण

आरंभ करने के लिए, आपको कठपुतली बनाने के सामान्य विवरण को संक्षेप में समझने की आवश्यकता है। इन निर्जीव वस्तुओं के नामकरण में संस्कृत भाषा ने भी गहन विचार किया है। उन्हें पुत्तलिका या पुत्तिका कहा जाता है, जिसका अर्थ है 'छोटे बेटे'। यह कठपुतलियों में एक 'जीवन' का सुझाव देता है। 'कठपुतली' शब्द इतालवी शब्द 'पुपा' से बना है, जिसका अर्थ है गुड़िया। दूसरी ओर, पुपा में हस्तकौशल के माध्यम से सजीवता का अनुमान लगाया जा सकता है। पुत्तलिका का अर्थ पारंपरिक कठपुतलियों का नाटक दिखाने वालों के दिमाग में इतना गहरा डूब गया है कि वे कठपुतली वाले बॉक्स को अपने शयनकक्षों में रखते हैं। जब कठपुतली 'पुरानी' हो जाती है तो इसे हरा दिया जाता है लेकिन फेंका नहीं जाता है। और हेरफेर बर्दाश्त नहीं किया जाता है। मंत्र जाप करके, कठपुतली को त्यागने के लिए, एक नदी में ले जाया जाता है और लहरों में बहा दिया जाता है।

डिजाइन भिन्नता के आधार पर, हेरफेर के तरीके और प्रस्तुतिकरण तकनीकों में अंतर को ध्यान में रखते हुए, कठपुतली मूल रूप से चार प्रकार की होती है: दस्ताने-कठपुतली, रॉड-कठपुतली, स्ट्रिंग-कठपुतली और छाया कठपुतली। जब कठपुतली को तार के साथ घुमाया जाता है तबकठपुतली थियेटर अपने दर्शकों से दो तरह से संपर्क करता है। सबसे पहले इसका हाथ और शरीर मजाकिया अंदाज में मुड़ते हैं जो देखने में बहुत ही मजेदार लगते हैं। फिर जब वे भावनात्मक कहानियाँ सुनाते हैं तो वे अधिक मानवीय दिखते हैं, और उनके भावों के माध्यम से कुछ जादू पैदा होता है।

कठपुतली की भौतिक संरचना के समय, जब कुछ हद तक उसमें मनुष्यों की नकल करने का प्रयास किया जाता है तो कठपुतली में मजाकियापन उत्पन्न हो जाता है। नतीजतन, यह एक हास्य प्रभाव पैदा करता है। एक जादुई प्रभाव पैदा करने और उनमें जीवन के तत्वों को उजागर करने के लिए कठपुतलियों की रहस्यमय उत्पत्ति पर जोर दिया जाता है।

## 12.2 पारम्परिक कठपुतली मोटिफ

आइए भारत में कठपुतली निर्माता द्वारा उपयोग किए जाने वाले कई प्रकार के रूपांकनों के बारे में जानते हैं। ये इन रूपांकनों के कुछ उदाहरण हैं।

1. नर कठपुतली के सिर पर बिंदुओं से अच्छी तरह से डिजाइन की गई ताज पहनाया जाता है, और रेखाएं इस डिजाइन के मुख्य तत्व हैं।
2. महिला का सिर अधिक विस्तृत होता है और माथे को गहनों और बिंदियों से सजाया जाता है। ये रूपांकन पारम्परिक हैं।
3. पगड़ी के रूपांकनों पर ध्यान दें, जो सरल लेकिन आकर्षक हैं।
4. हार भारतीय महिलाओं के पसंदीदा गहनों में से एक है। रत्नों का एकमात्र सुझाव कुछ बिंदुओं और अश्रु रूप के साथ दिया गया है।
5. झुमके को उसी तरह के विचारणीय रूपों के साथ बहुत ही सरल तरीके से दिखाया गया है।

6. सिंधु घाटी सभ्यता के समय से भारतीय महिलाओं द्वारा चूड़ियों का उपयोग किया जाता रहा है। कठपुतलीकार महिला कठपुतलियों को बहुत सारे गहनों से सजाना पसंद करते हैं।

नर कठपुतली

मादा कठपुतली

नर कठपुतली सिर

महिला कठपुतली सिर

एक और नर कठपुतली सिर

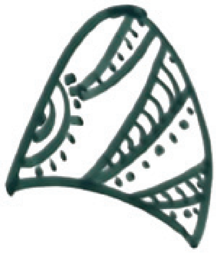
पगड़ी

हार

बाली

चूड़ी

चित्र 12.1

## 12.3 कठपुतली बनाने के लिए आवश्यक सामग्री

थर्मोकोल के टुकड़े (लकड़ी से बदले जा सकते हैं), दो लकड़ी की छड़ें (लगभग 12 इंच, बेकार कपड़े के टुकड़े, ढेर सारे धागे, सैंडपेपर, सजाने के लिए सामग्री (दर्पण के टुकड़े, चमकदार बॉर्डर, आदि), पेंट (चेहरे को रंगने के लिए), स्टेपलर , गोंद और ब्रुश।

- चमकीले रंग का मोटा कपड़ा
- कैंची
- सुई और धागा
- ऊन
- कार्डबोर्ड
- चाकू/कटर
- चिपकने वाली सामग्री
- रंग

- एक कार्टन बॉक्स
- ब्लैक पेस्टल पेपर
- लकड़ी की छड़ी
- तार और प्लग के साथ बिजली का बल्ब
- टिशू पेपर
- कटर
- चिपकने वाला
- पतले ताँबे के तार

## प्रायोगिक अभ्यास 1

छाया कठपुतली को छाया नाटक के रूप में भी जाना जाता है। यह कहानी कहने और मनोरंजन का एक प्राचीन रूप है जो कट आउट फिगर का उपयोग करता है। ये प्रकाश के स्रोत और एक पारभासी स्क्रीन के बीच आयोजित किए जाते हैं। कठपुतली और प्रकाश स्रोत दोनों को स्थानांतरित करके विभिन्न प्रभाव प्राप्त किए जा सकते हैं। यह दक्षिण पूर्व एशिया और भारत में लोकप्रिय है।

इस अभ्यास में हम एक छाया कठपुतली तैयार करेंगे।

**चरण 1:** एक मध्यम आकार का कार्टन लीजिए। कार्टन के सामने की तरफ एक बड़ी खिड़की और उसके दूसरी तरफ एक छोटी खिड़की काटें।

चित्र 12.2

**चरण 2:** सामने की खिड़की को टिशू पेपर से ढक दें और बल्ब को अंदर रखने के लिए कार्टन के ऊपर की तरफ एक छेद करें। बल्ब को पावर सॉकेट से जोड़ दें।

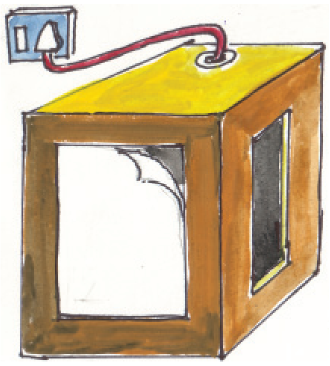

चित्र 12.3

**चरण 3:** पेस्टल पेपर लें और एक आकृति बनाएं। चेहरा प्रोफाइल में होना चाहिए।

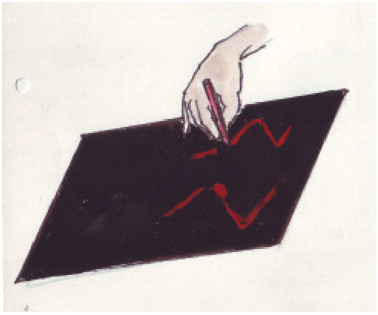

चित्र 12.4

**चरण 4:** लकड़ी की छड़ी लें और इसे चिपकने वाले या चिपके टेप के साथ आकृति के पीछे चिपका दें।

चित्र 12.5

**चरण 5:** काले कागज पर दो हाथ और दो पैर खींचे। इन्हें काटें और धड़ की उचित स्थिति में चिपका दें।

चित्र 12.6

**चरण 6:** इन अंगों को तांबे के तार से धड़ से जोड़ दें।

चित्र 12.7

**चरण 7:** प्रकाश को कार्टन के अंदर रखें। आकृति को खिड़की और प्रकाश के बीच की ओर वाली खिड़की के बीच में रखें। हाथ की गति से आकृति को हिलायें।

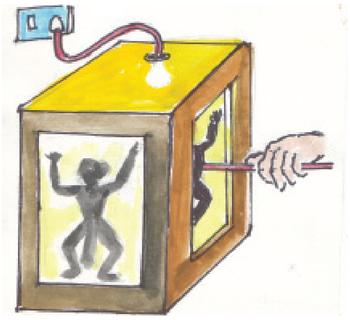

चित्र 12.8

## प्रायोगिक अभ्यास 2

अब आप दस्ताना कठपुतली बनाना सीखेंगे।

एक दस्ताना कठपुतली एक प्रकार की कठपुतली है जिसे हाथ से नियंत्रित किया जाता है। इसकी उत्पत्ति 17वीं शताब्दी ईस्वी में चीन में हुई थी। इस प्रकार की दस्ताना कठपुतली थोड़े संशोधन और परिवर्तन के साथ दुनिया भर में लोकप्रिय हो गई।

**चरण 1:** 5" × 24" आकार का एक कपड़ा लें।

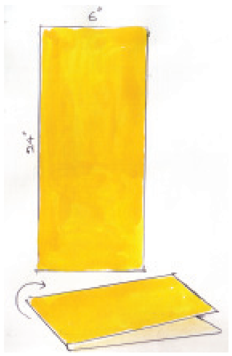

चित्र 12.9

**चरण 2:** नीचे दी गई आकृति में दी गई आकृति को कपड़े पर बनाएं और कैंची की सहायता से काट लें।

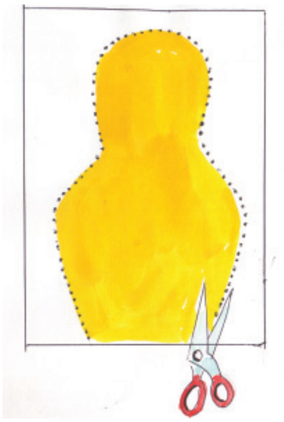

चित्र 12.10

**चरण 3:** चिह्नित रेखा पर सिलाई करें, निचले हिस्से को छोड़ दें, और दस्ताने को अंदर से बाहर की ओर कर दें। 4'×8" का एक नरम कार्डबोर्ड लें। अंडाकार आकार पाने के लिए कोनों को काटें, जैसा कि नीचे दिए गए चित्र में दिखाया गया है।

चित्र 12.11

**चरण 4:** इसके ऊपर एक लाल कपड़ा चिपकाकर आधा मोड़ लें। इसे अपनी हथेली में लें और इसे पक्षी की चोंच की तरह खोलने के लिए दबाएं।

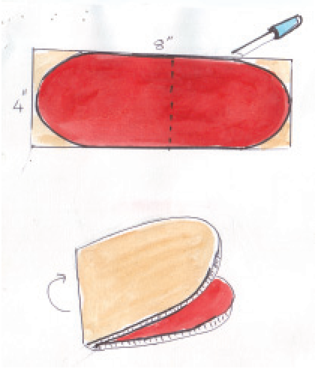

चित्र 12.12

**चरण 5 :** दस्तानों को लें और उसके एक किनारे को काट लें, जैसा कि दिए गए चित्र में दिखाया गया है। चोंच को कटे हिस्से में डालें और सिलाई या पेस्ट करें।

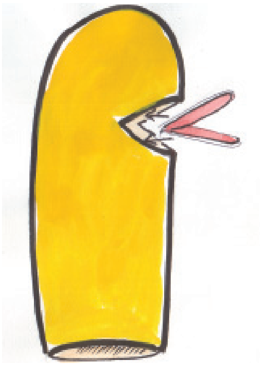

चित्र 12.13

**चरण 6:** अपना हाथ दस्ताने के अंदर रखें, चोंच को अपनी चार अंगुलियों और अंगूठे से पकड़ें और इसे चलाएं।

चित्र 12.14

## प्रायोगिक अभ्यास 3

इस अभ्यास में हम राजस्थानी शैली में एक स्ट्रिंग कठपुतली तैयार करेंगे।

**स्टेप 1:** थर्मोकोल के टुकड़ों को मोटे तौर पर एक चेहरे के आकार में बनाएं। यहां बहुत विशिष्ट मत बनाओ ।

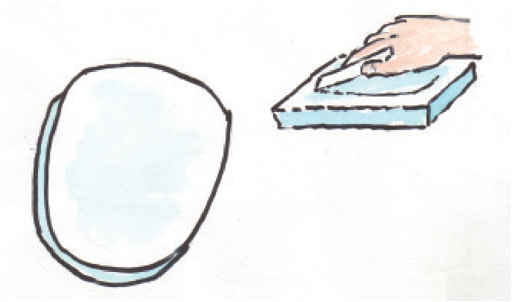

चित्र 12.15

**चरण 2:** चेहरे के नीचे छोटे-छोटे छेद करें और उसमें लकड़ी की छड़ का कुछ हिस्सा डालें। चेहरा रॉड पर खड़ा होना चाहिए। बाकी की छड़ कठपुतलियों की छाती के लिए आधार प्रदान करेगी।

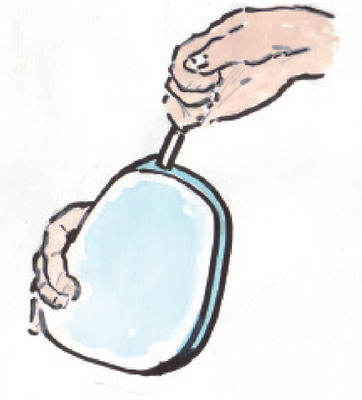

चित्र 12.16

**चरण 3:** चेहरे को पेंट करें। राजा के लिए बाल, आंख, होंठ, मूंछें बनवाएं और रानी के लिए लंबे बाल बनाएं। चेहरे को सूखने के लिए अलग रख दें।

चित्र 12.17

**चरण 4:** लकड़ी की छड़ लें और उस पर कपड़े के कुछ टुकड़े रखें। टुकड़ों को धागे से बांधें। इसे तब तक दोहराएं जब तक कि छाती काफी बड़ी न हो जाए। फिर हथियारों के लिए भी यही प्रक्रिया दोहराएं।

चित्र 12.18

**चरण 5:** छाती और बाहों को रंगीन कपड़ों से ढकें (अधिमानत: पारंपरिक प्रिंट)। सिरों को जोड़ने के लिए फेविक्विक या स्टेपलर का प्रयोग करें। हथेली बनाने के लिए ढकने वाले कपड़े को फैलाकर आखिर में फोल्ड कर लें।

चित्र 12.19

**चरण 6:** रानी के लिए घाघरा (लंबी स्कर्ट): चारों ओर लपेटें और सुनिश्चित करें कि आपके पास उभरे हुए रूप देने के लिए कुछ तह हैं। स्कर्ट लंबी होनी चाहिए।

राजा के पैर: इन्हें कपड़े को मोड़कर और दो पैरों को बनाने के लिए पिन करके बनाया जाना चाहिए। राजा के पैर बनाने के लिए फिर से सिरों को अंदर की ओर मोड़ें। याद रखें, छाती की लंबाई शरीर के बाकी हिस्सों से कम से कम एक तिहाई होनी चाहिए।

**चरण 7:** रंगों, ब्रश और बहुरंगी कपड़ों से सजाएं। और हो गया!

चित्र 12.20

**चरण 8:** अपनी कठपुतलियों के माध्यम से एक कहानी प्रस्तुत करने के लिए, आपको उन्हें नृत्य करना होगा! इसे प्राप्त करने के लिए, दोनों हाथों और पैरों (प्रत्येक में 4 धागे) से धागे को लकड़ी के क्रॉस-सेक्शन (लकड़ी की दो छड़ें एक दूसरे से 90 डिग्री पर) में संलग्न करें। लकड़ी के इन टुकड़ों को ऊपर-नीचे घुमाने से आपकी कठपुतली हवा में नाचेगी, और इन्हें बाद में तिरछा घुमाने से आपकी कठपुतली चल पड़ेंगी!

चित्र 12.21

## आपने क्या सीखा

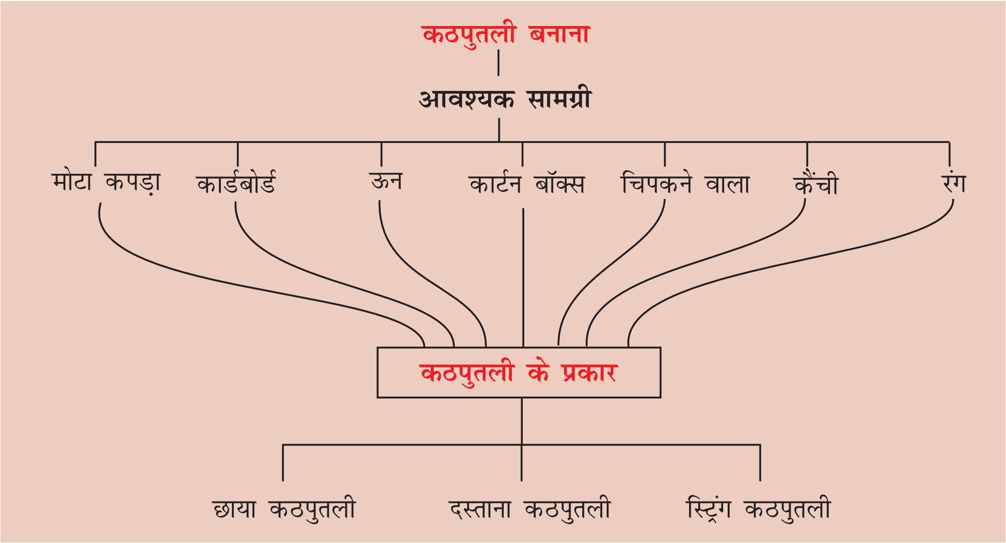

टिप्पणियाँ

## पाठांत प्रश्न

1. कहानी कठपुतली बनाने के लिए सामग्री की सूची बनाएं।
2. थर्मोकोल पर कठपुतली का चेहरा बनाइए और काट लीजिए।
3. आप छाया कठपुतली कैसे तैयार करते हैं?
4. दस्ताना कठपुतली बनाने के चरणों की सूची लिखिए।
5. दस्ताने कठपुतली बनाने के लिए उपयोग की जाने वाली सामग्रियों की सूची बनाएं, जैसा कि आपके पाठ में वर्णित है।

### शब्दावली

| | | |
|---|---|---|
| नाट्य शास्त्र | : | भरत मुनि द्वारा लिखित नाट्यशास्त्र पर एक पाठ। |
| दस्ताना कठपुतली | : | हाथ के दस्तानों को जीवित प्राणियों के रूप में चित्रित या मोड़ दिया जाता है। |
| स्ट्रिंग कठपुतली | : | कठपुतलियों को उंगलियों से जुड़ी स्ट्रिंग्स के साथ स्थानांतरित करने के लिए गति में हेरफेर किया जाता है। |
| रॉड कठपुतली | : | एक रॉड कठपुतली से जुड़ी होती है और इसे चलती है। |
| छाया कठपुतली | : | कठपुतली का छाया प्रकाश का उपयोग करके पर्दे पर परिलक्षित होता है। कठपुतली चलाने वाला गति में हेरफेर करता है। |

## पाठों के विषय में प्रतिपुष्टि (Feed back on Lessons)

| पाठ संख्या | पाठ का नाम | विषय वस्तु | | | भाषा | | उदाहरण | | आपने क्या सीखा | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | कठिन | रोचक | भ्रामक | सरल | जटिल | उपयोगी | उपयोगी नहीं | अत्यंत सहायक | सहायक नहीं |
| 1. | | | | | | | | | | |
| 2. | | | | | | | | | | |
| 3. | | | | | | | | | | |
| 4. | | | | | | | | | | |
| 5. | | | | | | | | | | |
| 6. | | | | | | | | | | |
| 7. | | | | | | | | | | |

अन्तिम मोड़

चौथा मोड़

तीसरा मोड़

**प्रतिपुष्टि प्रपत्र को आज ही भरें तथा डाक से भेजें**

*प्रिय शिक्षार्थियो*

*अपनी पाठ्य पुस्तकों को पढ़कर आपको अच्छा लगा होगा। पाठ्य सामग्री को प्रासंगिक तथा रूचिकर बनाने के लिये हमने भरसक प्रयास किया है। विषय सामग्री को बनाना एक दो तरफा प्रक्रिया है। आपकी प्रतिपुष्टि विषय सामग्री को सुधारने में हमारी सहायता करेगी। अपने समय में से कुछ मिनट अवश्य निकाले तथा प्रतिपुष्टि प्रपत्र को भरे ताकि एक रूचिकर तथा उपयोगी विषय सामग्री का निर्माण किया जा सके।*

*धान्यवाद*

*समन्वयकर्ता*

*(लोक कला)*

## प्रश्नों के विषय में प्रतिपुष्टि (Feed back on Questions)

| पाठ संख्या | पाठ का नाम | पाठगत प्रश्न | | पाठान्त प्रश्न | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | उपयोगी | उपयोगी नहीं | सरल | कठिन | अत्यंत कठिन |
| 1. | | | | | | |
| 2. | | | | | | |
| 3. | | | | | | |
| 4. | | | | | | |
| 5. | | | | | | |
| 6. | | | | | | |
| 7. | | | | | | |

दूसरा मोड़

आपके सुझाव

________________________________________

________________________________________

________________________________________

________________________________________

क्या आपने लोक कला के अधययन के लिये कोई अन्य पुस्तक पढ़ी है? हाँ/नहीं

यदि हाँ तो उसे पढ़ने का कारण दें।

________________________________________

________________________________________

नाम : ____________________

नामांकन संख्या : ________________

पता : ____________________

____________________

विषय : ____________________

पुस्तक संख्या : ________________

डाक टिकट

सहायक निदेशक (शैक्षिक)
राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान
ए - 24-25, इंस्टीट्यूशनल एरिया
सेक्टर - 62 नोएडा, उ.प्र.

किसी अनुलग्नक की अनुमति नहीं